

संयुक्तांक

पीअर रिव्यूड एंड रेफरीड जर्नल

ISSN 2231-1351

**PADCHINHA**

# पद्मचिन्ह

वर्ष -11 अंक-1 जनवरी-जून, 2022

Multidisciplinary Peer Reviewed  
& Refereed Journal

R.N.I. UPHIN/2011/37086

ISSN 2231-1351

संयुक्तांक

पीअर रिव्यूड एंड रेफेरीड जर्नल

# पदचिन्ह

जनवरी-जून, 2022 वर्ष - 11 अंक - 1

संपादक

डॉ. अजय परमार

B-30/239 नगवां, लंका, वाराणसी-221005

[padchinhahindi@gmail.com](mailto:padchinhahindi@gmail.com)

सह-संपादक

डॉ. पंकज कुमार सिंह

पचपोखरी, रोहतास (सासाराम)

पिन- 802217 मो. 9823696685

[gandhikhadi@gmail.com](mailto:gandhikhadi@gmail.com)

© पदचिन्ह में व्यक्त विचार और सर्वाधिकार लेखकों के अपने हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक व संपादक-मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है। उक्त सभी पद अवैतनिक हैं। किसी भी वाद-विवाद का न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।

**संपादक-मंडल/ रेफेरीड बोर्ड****प्रो. प्रेमनारायण सिंह**

निदेशक  
अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र  
बी. एच. यू. वाराणसी (उ. प्र.) पिन-221005

**प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी**

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

**डॉ. मनोज कुमार राय**

अध्यक्ष, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

**डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा**

सहायक प्रोफेसर, मानविकी और भाषा संकाय  
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी  
बिहार पिन-845401

**डॉ. उमेश कुमार सिंह**

म. गां. फ्यूजी गुरुजी सामाजिक विज्ञान अध्ययन केंद्र  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

**डॉ. रणजीत कुमार**

सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग  
मौलाना मजहरूल हक अरबी व फारसी विश्वविद्यालय  
पटना (बिहार) - 800001

**डॉ. प्रदीप त्रिपाठी**

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग  
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक.  
(सिक्किम) पिन-737102

**डॉ. अमरेन्द्र त्रिपाठी**

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग  
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज  
उत्तर प्रदेश, पिन-211002

**डॉ. परिमल प्रियदर्शी**

अनुसंधान अधिकारी, शोध सहायता प्रकोष्ठ  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

**डॉ. धीरेन्द्र कुमार राय**

सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंप्रेषण विभाग  
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

**डॉ. अशीष कुमार**

संपादक, सृजन समय  
बहुदेशीय सामाजिक संस्था, वर्धा - 442001

**डॉ. श्रीकांत जायसवाल**

प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

**सलाहकार समिति****डॉ. राजीव रंजन गिरि**

हिंदी विभाग, राजधानी कॉलेज  
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110015

**डॉ. निशीथ राय**

मानवविज्ञान विभाग  
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय  
वर्धा (महाराष्ट्र). पिन-442001

पदचिन्ह के लिए प्रकाशक अजय परमार, बी.- 30/239, नगवां, लंका वाराणसी द्वारा प्रकाशित और  
सूर्या आफसेट, 30, विवेकानंद कालोनी, मलदहिया, वाराणसी में मुद्रित। संपादक : अजय परमार

# पदचिन्ह

जनवरी-जून, 2022 वर्ष -11 अंक - 1

## अनुक्रम

भारतीय ध्वज संहिता के मुख्य बातें	पृष्ठ सं.
1. शरणार्थी तिब्बती समुदाय की परंपरागत चिकित्सा पद्धति का मानवशास्त्री अध्ययन _कृष्ण कुमार पैकरा & डॉ. अशोक कुमार प्रधान	05-16
2. Taliban 2.0 & Resurgence of Narco-Terrorism in Afghanistan _Dharmendra Kumar & Akhilesh Kumar Singh	17-32
3. Benefits of Arts Integration in STEM: STEAM Learning Approach _Mohini Tripathi & Rekha Agrawal	33-40
4. Measuring the Awareness Level among Rural People towards Various Rural Development... _Indrajeet Singh & Prof. Mahesh Kumar Singh	41-51
5. बस्तर के संघर्ष और 'भूमकाल' विद्रोह : 1910 _डॉ. केदार प्रसाद मीना	52-58
6. पर्यावरणीय नैतिकता : वेदों से आज तक _डॉ. किरण कुमारी	59-64
7. सन्नाटे के द्वन्द्व से विद्रोह की यात्रा का नायक है शेखर _विजय कुमार यादव	65-70
8. मेत्ता : मानसिक शांति का योग _डॉ. पंकज कुमार सिंह & डॉ. मनोज कुमार राय	71-80
9. क्रियाविशेषण के रूप में कार्य करने वाले विशेषणों का अध्ययन _मन्नू सिंह यादव	81-86
10. स्वप्न दुःस्वप्न नाटक के आईने में आदिवासी पर्यावरणीय वैचारिक मान्यता _मनीष कुमार	87-94
11. व्हाट्सएप के सहारे फल-फूल रही फेक न्यूज की रोकथाम में सहायक है... _अरविंद कुमार	95-102
12. Religionism and Domestic Violence in Muslim Communities: Perceptual.. _Aakriti Dewangan, Dr. Archana Yadav & Prof. Arvind P Bhanu	103-114
13. यंत्र मुक्त सभ्यता की आवश्यकता _डॉ. राकेश मिश्र	115-122
14. Mapping the Forming Notions of Community Identity: A Study on 'Chand' Special Issue 1923 _Suman Kumari	123-139
15. Individual Autonomy and Identity of Muslim Women... _Arifa Khatoun	140-144
16. हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता _शिव कुमार मेहता	145-149
17. Ecotourism And Resource Governance: Review of... _Aditya Kumar	150-160
18. अनुवाद : वर्तमान समय और प्रासंगिकता _पंकज कुमार मिश्र	161-164
19. अलका सरावगी के उपन्यास में चित्रित सामाजिक जीवन... _डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने	165-172

Notes for Authors

## भारतीय ध्वज संहिता के मुख्य बातें

तिरंगा, राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक है और राष्ट्रीय प्रतीक का व्यवसायिक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है. भारत में भारतीय ध्वज संहिता यानी फ्लैग कोड ऑफ इंडिया नाम का एक कानून है. इस कानून में तिरंगे को फहराने को लेकर नियम तय किए गए हैं. इन नियमों को उल्लंघन करने वालों को जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है. किसी मंच पर तिरंगा फहराते समय जब बोलने वाले मुंह श्रोताओं की तरफ हो तब तिरंगा हमेशा उसके दाहिने तरफ होना चाहिए. इसके अलावा तिरंगे को किसी की पीठ की तरफ नहीं फहराया जा सकता.

### इन चीजों की मनाही है

- झंडे पर कुछ भी लिखना, बनाना या विलोपित करना गैरकानूनी है.
- किसी गाड़ी के पीछे, प्लेन में या जहाज में तिरंगा नहीं लगाया जा सकता.
- किसी सामान या बिल्डिंग बगैरह को ढकने में तिरंगे का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता.
- किसी भी स्थिति में तिरंगा जमीन को छूना नहीं चाहिए.
- तिरंगे को किसी भी प्रकार की यूनिफॉर्म या सजावट के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता.
- किसी अन्य झंडे को राष्ट्रीय ध्वज से ऊंचा नहीं रख या लगा सकते.

### ध्वज से संबंधित नियम और कोड

- पहले तिरंगा सिर्फ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक ही फहराया जा सकता था लेकिन अब इसे दिन रात 24 घंटे फहराया जा सकता है.
- पहले मशीन से बने और पॉलिएस्टर से बने ध्वज की अनुमति नहीं थी लेकिन अब कपास, पॉलिएस्टर, ऊन और रेशमी खादी से बने ध्वज को फहराने की अनुमति दे दी गई है.
- साल 2002 से पहले राष्ट्रीय ध्वज को आम लोग सिर्फ स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर ही फहरा सकते थे लेकिन साल 2002 में इंडियन फ्लैग कोड में परिवर्तन किया गया जिसके तहत कोई भी नागरिक किसी भी दिन झंडे को फहरा सकता है.
- झंडे का आकार आयताकार नहीं होना चाहिए, इसकी लंबाई 3 अनुपात 2 की होनी चाहिए. इसके साथ ही केसरिया रंग को नीचे की तरफ करके झंडे का लगाया या फहराया नहीं जा सकता.
- झंडे को कभी भी आधा झुकाकर नहीं फहराया जाएगा सिवाय उन मौकों पर जब सरकारी इमारतों पर झंडे को आधा झुकाकर फहराने के आदेश जारी नहीं किए गए हों.
- झंडे को कभी भी पानी में नहीं डुबोया जा सकता. इसको कभी भी फिजिकल डैमेज नहीं पहुंचा सकते.
- झंडा अगर फट जाए या फिर मैला हो जाए तो उसे एकांत में मर्यादित तरीके से नष्ट करना चाहिए.

(abp न्यूज से सभार)

## शरणार्थी तिब्बती समुदाय की परंपरागत चिकित्सा पद्धति का मानवशास्त्री अध्ययन (छत्तीसगढ़ मैनापाट के विशेष संदर्भ में)

कृष्ण कुमार पैकरा\*

krishna22188@gmail.com

डॉ. अशोक कुमार प्रधान†

सार :-

भारतीय जीवनशैली को अगर देखा जाए तो यहाँ के लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहे हैं और भौगोलिक भिन्नता के साथ उन्होंने अपने भोजन का एक समृद्ध चक्र बनाया है ताकि मौसम की अनुकूलता के अनुसार उन्हें पोषण मिल सके और शरीर स्वस्थ रहे। लेकिन समय के अनुसार भोजन को लेकर बाजार ने वैश्विक एकरूपता लाने की कोशिश की है जिसके नतीजे स्पष्ट तौर पर दिखाई देते हैं। आज के आधुनिक दौर में या कहें कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के पैमाने के अनुसार लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी स्वास्थ्य अस्वस्थता से गुजर रहा है जिसके पीछे असंतुलित भोजन और आधुनिक जीवन शैली बहुत हद तक जिम्मेदार है। आज के आधुनिक समय में स्वस्थ होने के लिए लोग अनेक तरह की चिकित्सा पद्धतियों का प्रयोग कर रहे हैं। जिसमें मुख्य रूप से आधुनिक चिकित्सा पद्धति शामिल है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने स्वास्थ्य को लेकर देश दुनिया में अपना एक अलग मुकाम हासिल किया, लेकिन इसके शरीर पर दुष्परिणाम भी दिखाई देते हैं। यही कारण है कि आमजन का झुकाव परम्परागत चिकित्सा की ओर हो रहा है। जिसे भारत में वैकल्पिक चिकित्सा के तौर पर देखा जाता है। जबकि एक वक्त में यह मुख्य धारा की चिकित्सा पद्धति रही है। जिसके मजबूत साक्ष्य इतिहास में दिखाई देते हैं। वैकल्पिक चिकित्सा के तौर पर देखा जाए तो भारत में प्रामाणिक तौर पर आयुष मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद, सोवारिग्पा, होम्योपैथिक, यूनानी, एक्युपेशर एवं तिब्बती पद्धतियों द्वारा लोगों को स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रेरित कर रही है। लेकिन भारत मात्र इन्हीं चिकित्सा पद्धतियों तक सीमित नहीं रहा है। भारतीय समाज के पास क्षेत्रीयता के आधार पर भी स्थानीय चिकित्सा का ज्ञान रहा है। हमारे आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध हजारों वनौषधियां आज भी मौजूद हैं। जिसके विधिवत उपयोग से विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज संभव है। हमारे देश में वनो, पहाड़ियों सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को जनजाति या वनवासी कहा जाता है। जिनके पर अपार चिकित्सीय ज्ञान उपलब्ध है।

छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर जिले के मैनापाट में तिब्बती समुदायों का बड़ा समूह निवास करता है। जो पिछले छः दशकों से भी अधिक समय से यहाँ के निवासियों के साथ रह रहा है। और यह लोग सेवरीग्पा चिकित्सा पद्धति के साथ वनों में उपलब्ध जड़ी-बूटियों, पूजा-पाठ, मंत्रो, वाद्ययंत्रों के प्रयोग आदि द्वारा चिकित्सा करते आ रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि सेवरीग्पा चिकित्सा पद्धति अन्य पद्धतियों से बहुत ही कारगर है। और इस चिकित्सा पद्धति का ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है।

कुंजी शब्द – मैनापाट, तिब्बती समुदाय, चिकित्सा पद्धति, वनौषधियां, जड़ी-बूटी।

\* शोधार्थी, मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ ।

†शोध निर्देशक, मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ ।

## प्रस्तावना

मानवजाति चिकित्सा से एक पारंपरिक समाज के सदस्यों की चिकित्सा संबंधी मान्यताओं और प्रक्रियाओं का ज्ञान होता है जो उस क्षेत्र या समाज के सदस्यों के रोगों का निवारण पूर्व काल से उनके पूर्वजों या उस समाज में रहने वाले पारंपरिक चिकित्सक, बैगा, ओझा, समन बैद्य तथा तिब्बती समुदाय में लामा इत्यादि के द्वारा किया जाता है तथा यह कार्य उनके पूर्वजों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में हस्तांतरित होते आ रहे हैं। नृजाति चिकित्सा का कोई लिखित विवरण नहीं है लेकिन अनुभव के आधार पर तथा जड़ी-बूटियों, मंत्रों के उच्चारण के ज्ञान के आधार पर इस पद्धति द्वारा उपचार किया जाता है। इन मान्यताओं और प्रक्रियाओं को जानने का प्रयास मानवशास्त्रियों द्वारा लगातार किया जा रहा है। इस प्रकार की चिकित्सा आदिम समाज या विभिन्न पिछड़ी जनजाति, जो जंगलों पहाड़ों में निवास करती है। उनके उपचार के तरीकों में आज भी देखा जा सकता है। अपने पारंपरिक चिकित्सा में देवी देवताओं, तंत्र-मंत्र के साथ-साथ जंगल में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं के अंगों वनस्पतियों जड़ी-बूटियों मिट्टी का उपयोग कर विभिन्न तरह की बीमारियों आदि का उपचार करते हैं।



(Image 1 मैनपाट में स्थित जड़ी-बूटी चिकित्सालय का बोर्ड, स्थान तिब्बती कैम्प 01 मैनपाट, प्राप्ति दिनांक 16.07.2019)

हयुगस (1968) के अनुसार “बीमारी से संबंधित वे मान्यतायें और प्रक्रियाएँ जो कि स्वदेशी सांस्कृतिक विकास का परिणाम हैं और जो स्पष्टतः आधुनिक चिकित्सा के धारणा संबंधी ढांचे से प्राप्त नहीं हुए हैं। यह मानवजाति चिकित्सा की श्रेणी में आते हैं। 17 वीं शताब्दी में पांचवें दलाई लामा ने तिब्बती चिकित्सा के विकास को बहुत महत्त्व दिया। उन्होंने तत्कालीन चित्रकारों को रंगीन चिकित्सीय थांगका चित्र रचित करवाया। जिसमें तिब्बती चिकित्सीय विचारधारा व उपचार कौशल का कलात्मक तौर पर वर्णन किया गया था। आज पूरे देश में पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा के 94 अस्पताल स्थापित हो गये हैं और तिब्बती स्वायत्त प्रदेश और सिचुआन प्रांत के तिब्बती बहुल क्षेत्र में काउंटी स्तरीय तिब्बती चिकित्सालय भी बने हुए हैं। तिब्बती स्वायत्त प्रदेश और छींगहाई प्रांत के तिब्बती चिकित्सा अस्पताल को राष्ट्रीय अस्पताल माना

जा रहा है। केंद्र सरकार की मदद से पूर्ण आधुनिक तिब्बती चिकित्सा व्यवस्था और सिद्धांत प्रणाली स्थापित की गयी है। मैनापाट में तिब्बती चिकित्सा सेंटर 'मेन-ची-खंग' ( जड़ी- बूटी) चिकित्सा केंद्र स्थापित है। जिसका शुभारंभ 14वें दलाईलामा के द्वारा किया गया था। शरणार्थी तिब्बतियों के वर्ष 1959-60 में मैनापाट आने के बाद इस तिब्बती चिकित्सा सेंटर 'मेन-ची-खंग' को यहां पर स्थापित किया गया है। वर्तमान में Dr. T. Ngawang की देखरेख में अच्छे से चलाया भी जा रहा है। 'मेन-ची-खंग' केंद्र में कई दवाईयों का उत्पादन भी होता है।

फैबरेगा (1974) ने इस शब्द का प्रयोग "इलनैस" के सांस्कृतिक अध्ययन के तौर पर किया है। इस प्रकार पारंपरिक चिकित्सा में रुचि रखने वाले कार्यकर्ता का संबंध स्वास्थ्य चिकित्सा संबंधी चीजों से है। उन्होंने 1973 में पारंपरिक चिकित्सा को परिभाषित करते हुये बताया कि "इलनैस" का अध्ययन सांस्कृतिक घटना के रूप में करना चाहिए। विभिन्न संस्कृति के लोग बीमारी के बारे में किस प्रकार से सोचते हैं साथ ही वे स्वयं को बीमारी के उपचार के प्रति किस प्रकार से व्यवस्थित कर उपचार करते हैं।

बीमारी एवं चिकित्सा का अध्ययन बहुत पुराना है जो सभ्यताओं के विकास के साथ अनुभव के आधार पर विकसित हुआ है। लगभग छः दशक पूर्व सर्वप्रथम एकरकीनाथ (1942) ने चिकित्सा के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण शोध कार्य एवं खोज को सम्मिलित किया। वहीं व्हील रिचर्स ने 1924 को पूरे विश्व की चिकित्सा व्यवस्था को तीन प्रकार से विभाजित करने कि कोशिश कि है जो इस प्रकार है- जादू, (टोना, टोटका), धार्मिक एवं प्राकृतिक तौर पर बताया है। उन्होंने इसे परिभाषित करते हुये बताया कि औषधीय चिकित्सा अन्य क्षेत्रों से अलग और इसकी कार्यविधि और शैली भिन्न है। इसके लक्षण एवं बहुरूपता स्थान के हिसाब से वहाँ की जलवायु के साथ सांस्कृतिक प्रतीक एवं अपने खुद के तकनीक पर निर्भर करता है।

1937 में कई महत्वपूर्ण अध्ययन में यह दर्शाया गया कि रोग धर्म और औषधि एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जिसे आगे चल कर एजीस्पेन्सर ने 1941 में फिजी आइसलैंड में रोग, धर्म और समाज की अवधारणा को स्थापित किया।

### उद्देश्य एवं शोध प्रविधि

यह प्रपत्र तिब्बती समाज के द्वारा चिकित्सा के लिए उपयोग की जाने वाली सोवारिग्पा पद्धति द्वारा की प्रणाली की जाँच करता है। जो मूलरूप से प्रकृति और प्रकृति में मौजूद जड़ी-बूटियों, स्नान और संगीत, साधना, और मंत्रोच्चार की प्रक्रिया पर आश्रित हैं। यह चिकित्सा पद्धति बहुत प्राचीन है ऐसा माना जाता है, चाइना के अन्य देशों में भी इसे व्यापक तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

तिब्बती समाज के शरणार्थियों जो छत्तीसगढ़ के मैनापाट, सरगुजा में निवासरत हैं, और सेवारीग्पा पद्धति से लोगों का इलाज करते हैं। इस चिकित्सा पद्धति पर विभिन्न अध्यानों जर्नल लेखों, रिपोर्टों, वेबसाइटों

और पुस्तकों सहित संसाधनों का विषयगत विश्लेषण किया गया है। यह शोध पत्र मुख्य रूप से प्राथमिक एवं द्वितीय (आँकड़ों) स्रोतों पर आधारित है। जिसमें साक्षात्कार एवं सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है।

### मानवजाति चिकित्सा और पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति

फेबरेगा जूनियर 1973 के अनुसार “चिकित्सा मानवशास्त्र संबंधी जिज्ञासा” को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह, वह जिज्ञासा है जो उन कारणों, क्रियाविधि और प्रक्रियाओं को स्पष्ट करती है, जिनका मानव और मानव समूह में बीमारियों के प्रभाव अथवा प्रतिक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका है तथा यह उपरोक्त संदर्भ में उत्पन्न समस्याओं का निरीक्षण करती है। यहाँ व्यवहार प्रणाली पर विशेष जोर दिया जाता है। उनके अनुसार चिकित्सा मानवशास्त्र के दो मुख्य केन्द्र हैं - मानव जनजाति चिकित्सा पद्धति एवं पाश्चात्य जैव चिकित्सा पद्धति, मानव जनजाति चिकित्सा पद्धति के अध्ययन में कोई समुदाय या समूह स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निवारण किस प्रकार करता है, इस बात पर जोर दिया जाता है। यहाँ बीमारी को एक सांस्कृतिक वर्ग माना जाता है। इसे आंतरिक दृष्टिकोण से भी देखा जाता है। यहाँ व्यवहारिक अथवा घटना विज्ञान संबंधी कारणों का प्रयोग बीमारी को परिभाषित करने में किया जाता है।

इसके विपरीत पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत आने वाली समस्याओं में बीमारी अथवा रोग के जैविक आयाम को अधिक महत्व दिया जाता है - बीमारी को रोगाणु सिद्धांत, शरीर की अपक्रिया या शारीरिक समस्याओं के आधार पर समझा जाता है। पाश्चात्य चिकित्सा के अंतर्गत इन कारणों के अध्ययन से बीमारी के बाह्य दृष्टिकोण का ज्ञान होता है। मानव जाति संबंधी असमान मानव अनुभवों के विपरीत पाश्चात्य पद्धति में सर्वव्यापकता उसका केन्द्रीय गुण विद्यमान होता है।

तिब्बती चिकित्सा पद्धति में मनुष्य के शारीरिक अंगों, उपांगों तथा शरीर-रचना के प्रति काफी जानकारीयां उपलब्ध हैं। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार मानव के आंतों में हृदय, जिगर, फेफड़ा, गुर्दा, बड़ी आंत, छोटी आंत, मूत्राशय, पित्ताशय इत्यादि होती हैं। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार हृदय शरीर का राजा है जो छाती के केंद्र में रहता है। फेफड़ा तो मंत्री या युवराज है जो राजा के आस-पास रहता है। जिगर राजा की पत्नी है जो राजा के नीचे रहती है और इन के राजा के साथ घनिष्ठ संबंध मौजूद हैं। गुर्दा तो राजभवन की रीढ़ माना जाता है जिस के बिना शरीर का भवन खड़ा नहीं रहेगा। इस तरह हम यह देख सकते हैं कि प्राचीन काल से ही तिब्बती चिकित्सा पद्धति में शरीर के प्रति काफी जानकारीयां प्राप्त कर चुके थे। तिब्बती पुजारी (लामा) लोगों का चिकित्सा पद्धति मंत्र उच्चारण, धूप-दीप के जलाने, अगरबत्ती के धुवां करने, वाद्ययंत्रों के बजाने इत्यादि से शुरू करते हैं। जिससे कोई भी बुरी शक्ति इनके पास नहीं आती है। इनके वाद्ययंत्रों में ढोल, तिलबों (घंटी), गेलिंग (शहनाई नुमा), रोलमो (झाल), ढोरंजे, कार्लिंग, डुंगकर (शंख), घुमर, छेमे (दिया जलाने वाला) इत्यादि होते हैं, जो पूजा-पाठ एवं इलाज के समय बजाया जाता है। तिब्बती समुदाय

प्रातःकाल की पूजा को डोलमा पूजा (जिसे हिंदी में तारापुजा कहा जाता है) एवं संध्याकाल की पुजा को शोरगा पूजा ( जिसे हिंदी में महाकाला पुजा ) कहते हैं। दरअसल संगीत के साथ चिकित्सा के लिए एक तरह से मनोवैज्ञानिक तौर पर पीड़ित व्यक्ति को तैयार किए जाने की प्रक्रिया है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति बौद्ध दर्शन से जुड़ी हुई है। इस पद्धति का इतिहास बहुत पुराना, विकसित और महत्त्वपूर्ण है। इस पद्धति ने विश्व में तिब्बतियों की एक अलग पहचान स्थापित की है।

### तिब्बती चिकित्सा पद्धति की आम स्थिति

तिब्बत में समाज के सभी पक्षों पर बौद्ध धर्म की विचारधारा का प्रभाव पड़ा है जोकि तिब्बती क्षेत्र के समाज का नेतृत्व करने वाली एक मुख्य शक्ति है। इसलिए तिब्बती चिकित्सा पद्धति भी अपने जन्म के प्रारंभिक काल से ही बौद्ध धर्म के प्रभाव से जुड़ी हुई है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति का बुनियादी सिद्धांत एक लंबे समय तक रोगों का इलाज करते-करते ही तिब्बती चिकित्सा पद्धति की सैद्धांतिक व्यवस्था को कायम करने में सफल हो पायी। तिब्बती चिकित्सा पद्धति चीन की परंपरागत चिकित्सा पद्धति का महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है जो तिब्बती जाति और कुछ अल्पसंख्यक जातियों द्वारा लम्बे अरसे में विकसित की गयी परंपरागत चिकित्सा पद्धति है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति मुख्य तौर पर तिब्बत, छींगहाई, सिच्चवान और कानसू आदि क्षेत्रों में जहां तिब्बती लोग रहते हैं, में प्रचलित है साथ ही दक्षिणी एशिया के भारत और नेपाल आदि देशों में भी तिब्बती चिकित्सा पद्धति का व्यापक प्रसार हुआ है।

तिब्बती चिकित्सा पद्धति का उदगम क्षेत्र चीन का छींगहाई-तिब्बत पठार क्षेत्र है जिस की अपनी जातीय, सामाजिक तथा प्राकृतिक विशेषताएं हैं। छींगहाई तिब्बत पठार एक सर्द पठार क्षेत्र है जहां से बाहर जाने की यातायात की सुविधाएं बहुत कम हैं। इसी कारण से तिब्बती चिकित्सा पद्धति की अपनी विशेषता दीर्घकाल तक बनी रही है। उदाहरण के लिए छींगहाई तिब्बत पठार पर पशुओं व वनस्पतियों की किस्म कम होने के कारण तिब्बती चिकित्सा पद्धति की औषधियों का स्रोत भी वहां की पहाड़ियों में रह रहे पशु तथा वनस्पतियां ही हैं।

सारणी क्रमांक 01 - अध्ययन हेतु निवासरत परिवारों की संख्या का विवरण

क्रमांक	कैप का नाम	परिवारों की संख्या	पुरुष	स्त्री	कुल संख्या
1	कैप क्रमांक 1	73	109	95	204
2	कैप क्रमांक 2	58	72	60	132
3	कैप क्रमांक 3	49	93	97	190
4	कैप क्रमांक 4	81	175	140	315
5	कैप क्रमांक 5	32	87	88	175
6	कैप क्रमांक 6	57	122	109	231
7	कैप क्रमांक 7	37	103	111	214
कुल		387	761	700	1461

तालिका क्रमांक 1 में दर्शित कुल 387 परिवारों में से मैंने अपने अध्ययन हेतु कुल 326 परिवारों को अध्ययन में शामिल किया गया है क्योंकि क्षेत्रकार्य के दौरान केवल 326 परिवार ही निवासरत पाए गए।

तालिका क्रमांक 2 - मैनापाट में तिब्बती कैम्प के अनुसार चयनित परिवारों की आयु का विवरण

क्रम	वर्तमान आयु (वर्षों में)	कैम्प क्रमांक 1	कैम्प क्रमांक 2	कैम्प क्रमांक 3	कैम्प क्रमांक 4	कैम्प क्रमांक 5	कैम्प क्रमांक 6	कैम्प क्रमांक 7	कुल संख्या	प्रतिशत
		कमलेश्वरपुर	रोपाखार	टाँगीनाथ	लोरेना	सरभंजा	ललेया	कुनिया		
1	26-30	5	3	2	3	3	1	1	18	5.52
2	31-35	6	6	4	5	6	5	2	36	11.04
3	36-40	14	6	10	15	4	8	9	66	20.14
4	41-45	8	6	4	0	5	9	8	40	12.26
5	46-50	9	7	4	4	3	10	3	40	12.26
6	51-55	10	8	5	11	3	5	3	45	13.80
7	56-60	8	5	3	5	2	3	1	27	8.28
8	60<	6	6	5	25	3	9	0	54	16.56
कुल		66	47	39	68	29	50	27	326	100

तालिका क्रमांक 2 में मैनापाट के तिब्बती समुदाय के कैम्प के अनुसार चयनित परिवारों की आयु का विवरण का वर्णन किया गया है। इसमें न्यूनतम आयु 26 एवं अधिकतम आयु 60+ वर्ष लिया गया है। इस शोध में चयनित आयु में से 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिशत सबसे ज्यादा 16.56 है। 26-30 आयु वर्ग के लोगों का प्रतिशत सबसे कम 5.52 है।

### तिब्बती चिकित्सा पद्धति में तीन तत्व की विचारधारा

तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार मानव के शरीर में तीन प्रमुख तत्व लूं, चेबा और फेइगन हैं साथ ही इनके और सात प्रमुख आधार मौजूद हैं। भोजन, खून, मांस, वसा, हड्डी, मज्जा और प्राणशक्ति इनके अलावा और तीन विसर्जित तत्व हैं यानी मल, मूत्र और पसीना। प्रथम तीन तत्वों से सात प्रमुख आधारों तथा तीन विसर्जित तत्वों का नियंत्रण किया जाता है। जब शरीर में सब कुछ सामान्य स्थितियों में चलता है, तो उन तत्वों के बीच संतुलन मौजूद रहता है। जब प्रथम तीन तत्वों में से कोई एक तत्व या कई तत्व किसी कारण से हद से ज्यादा उत्तेजित या कमजोर बनने लगते हैं, तब मानव के शरीर में रोग पैदा हो जाता है जिन के इलाज के लिए उन तत्वों को पुनः सुव्यवस्थित करना पड़ता है ताकि इनका संतुलन बने रहे और शरीर स्वास्थ्य रहे।

लूँ, चेबा और फेइगन तीन तत्वों में लूँ का मतलब है शरीर को चलाने वाली शक्ति। लूँ हान जाति की परंपरागत चिकित्सा पद्धति में छी (शरीर में वायु तत्व) की तरह होता है, पर लूँ का दायरा छी से विशाल है। चेबा का मतलब है आग जो हान जाति की परंपरागत चिकित्सा पद्धति में आग के बराबर है। चेबा मानव के शरीर में गर्मी का स्रोत माना जाता है जिससे उदर की क्षमता, साहस तथा बुद्धि पैदा की जाती है। फेइगन का मतलब है मुंह का पानी। हान जाति की परंपरागत चिकित्सा पद्धति में भी ऐसे पानी का अर्थ है, पर फेइगन का दायरा और विशाल होता है जो शरीर में विभिन्न किस्मों के द्रवों के साथ संतुलित संबंध कायम करता है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार मानव के शरीर में रोग तब पैदा होता है जब लूँ, चेबा और फेइगन तीन तत्वों का संतुलन बिगड़ता है। परिणाम स्वरूप मनुष्य के स्वास्थ्य का संतुलन भी बिगड़ जाता है। इसलिए रोगों के इलाज में सर्वप्रथम इन तीन तत्वों के असंतुलन को दूर किया जाता है और शरीर के अन्दर पुनः संतुलन स्थापित किया जाता है।

### सोवारिग्पा-

सोवा-रिग्पा भारत में प्रचलित एक पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा पद्धति है। यह सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग, हिमाचल प्रदेश में लोकप्रिय है। सोवा रिग्पा के सिद्धांत और व्यवहार आयुर्वेद के समान हैं और इसमें पारंपरिक चीनी चिकित्सा पद्धति के कुछ सिद्धांत शामिल हैं। माना जाता है कि सोवा रिग्पा की मौलिक पाठ्यपुस्तक 'रागुद-बिजी' को स्वयं बुद्ध द्वारा पढ़ाया गया है और बौद्ध दर्शन के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। एनआईएसआर भारतीय उप-महाद्वीप में सोवा-रिग्पा के पुनरुद्धार के लिए एक प्रोत्साहन के अवसर प्रदान कर रहा है यह न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों के पारंपरिक औषधीय प्रणाली के छात्रों के लिए उपयोगी है। यह आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त राष्ट्रीय संस्थान होगा, जिसमें प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के सहयोग से सोवा-रिग्पा में अंतःविषय शिक्षा और अनुसंधान कार्यक्रम शुरू करने के लिए जनादेश होगा और चिकित्सा की विभिन्न प्रणालियों के एकीकरण की सुविधा होगी।

### **शारीरिक अंग, उपांग तथा शरीर-रचना**

तिब्बती चिकित्सा पद्धति में मनुष्य के शारीरिक अंगों, उपांगों तथा शरीर-रचना के प्रति काफी जानकारियां उपलब्ध हैं। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार मानव के आंतों में हृदय, जिगर, फेफड़ा, गुर्दा, बड़ी आंत, छोटी आंत, मूत्राशय, पित्ताशय इत्यादि। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार हृदय शरीर का राजा है जो छाती के केंद्र में रहता है। फेफड़ा, मंत्री या युवराज है जो राजा के आसपास रहता है। जिगर राजा की पत्नी है जो राजा के नीचे रहती है और इन के राजा के साथ घनिष्ठ संबंध मौजूद है। गुर्दा तो राजभवन की रीढ़ माना जाता है जिस के बिना शरीर का भवन खड़ा नहीं रहेगा। इस तरह हम यह देख सकते हैं कि प्राचीन काल से ही तिब्बती चिकित्सा पद्धति में शरीर के प्रति काफी जानकारियां प्राप्त हो चुकी थीं।

## तिब्बती चिकित्सा पद्धति का विशेष उपचार

### रोगों की पहचान करना

इस विधा में नब्ज, चेहरा, जीभ आँख, सुबह के मल, मूत्र की जांच व मरीज से बातचीत के आधार पर रोग का पता लगाया जाता है। इस पद्धति में मूत्र परीक्षण किया जाता है, जिसमें जांचकर्ता मूत्र को एक विशेष उपकरण में रखकर बार-बार हिलाते हैं, जिससे बलबुले बनते हैं। उन बुलबुले के आकार को देखकर रोग की पहचान व गंभीरता का पता लगाया जाता है। इसके गंध एवं रंग से भी रोग का पता लगाया जा सकता है। परंतु वर्तमान में शरीर की कमजोरी एवं तापमान, त्वचा, आंखों, जीभ इत्यादि के रंग को देखकर रोगों की पहचान की जाती है।

### औषधियों से इलाज करना

तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार दवा किसी न किसी चीज के साथ खिलायी जानी चाहिये। मिसाल के तौर पर गर्मी के रोग का इलाज करने में दवा ठंडे पानी के साथ देनी चाहिये और सर्दी के रोग का इलाज करने में दवा सामान्य पानी एवं शक्कर के साथ खिलानी चाहिये। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार दवा खाने खिलाने के भी कुछ विशेष तरीके हैं। जैसे दवा की गोली उबले हुए पानी के साथ खायी जानी चाहिये। सर्दी के रोग में गरम उबले पानी के साथ दवा खानी चाहिये और गर्मी के रोग में ठंडे पानी के साथ दवा खानी चाहिये। मिश्रित रोगों में उबले पानी के साथ ही दवा खानी चाहिये।

### जड़ी-बूटी के धुएं से उपचार करना

मैनपाट के तिब्बती समुदाय के द्वारा जंगलों से प्राप्त जड़ी-बूटी का प्रयोग इलाज के लिए किया जाता है। जोकि उनके द्वारा स्वयं खोज कर लायी जाती है एवं उसे पीस कर उसका उपयोग बीमारी को दूर करने में किया जाता है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति में जड़ी-बूटी के धुएं से उपचार करने का प्रयोग भी किया जाता है। तिब्बती चिकित्सा पद्धति में आम तौर पर सर्दी के रोगों के इलाज में जड़ी-बूटी के धुएं का उपचार अपनाया जाता है। इनमें आमाशय-व्रण, गर्मी हो जाना, मानसिक रोग, कमजोरी, स्मृतिविहीनता तथा गर्मी के रोग के पश्चात इलाज में जड़ी-बूटियों के धुएं से उपचार का ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है।



Image 2 धुएं के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला पात्र, स्थान- तिब्बती कैंप 02, प्राप्ति दिनांक 16.07.2019

### कै, करवाना / उलटी जैसा

तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार किसी रोग के इलाज में विशेष दवा के जरिये रोगियों को कै या उलटी करवाने से करवायी जाती है। जो बदहजमी, जहरीली चीजें खाने तथा पेट में कीड़े पड़ने जैसे रोगों का उपचार करने में यह उपाय बहुत कारगर साबित होता है। लेकिन कमजोर रोगी, गर्भवती महिला तथा नन्हें बच्चों को यह उपचार नहीं दिया जाता है। जहरीली चीजें खाने के बहुत लम्बे समय के बाद भी ऐसे उपचार का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। वर्तमान में इस पद्धति से मैंनपाट के शरणार्थियों (तिब्बती समुदाय) द्वारा इलाज नहीं किया जाता।

### बाहरी उपयोगी दवा

तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार कभी-कभी कुछ रोगों के इलाज में बाहर से दवा लगायी जाती है, जिसे सीखना बहुत आसान है और इसीलिए आम लोग भी स्वयं ऐसे उपचार अपनाते रहते हैं। तिब्बती चिकित्सा पद्धति के अनुसार बाहर से शरीर पर दवा लगाने के द्वारा शरीर के अन्दर तक उस का प्रभाव डाला जा सकता है। ऐसा उपचार त्वचा के कुछ रोगों, खून निकलने से उत्पन्न कमजोरी व थकावट आदि बहुत से रोगों में उपयोगी साबित होते हैं। इस ऊपरी लेप में जड़ी-बूटियों के पाउडर के साथ-साथ तेलों का भी इस्तेमाल किया जाता है।



(Image 3 चिकित्सालय में तिब्बती चिकित्सक द्वारा तैयार दवाई, स्थान - तिब्बती कैम्प 01, प्राप्ति दिनांक 16.07.2019)

### स्नान के द्वारा इलाज

तिब्बत में औषधीय स्नान का एक हजार वर्ष पुराना इतिहास है। तिब्बती पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के उपचारों में औषधीय स्नान के द्वारा इलाज करना काफी लोकप्रिय रहा। जिसके पुट आज भी चीनी चिकित्सा में

दिखाई देते हैं। मशहूर ग्रंथ यानी 'चार चिकित्सा ग्रंथ' में औषधीय स्नान का अभिलेख किया गया था। तिब्बत में बहुत से गर्मपानी के इधर-उधर श्रोत फैले हुए हैं जिनमें खनिज पदार्थ मौजूद रहते हैं, ऐसे गरम पानी में स्नान करने से त्वचा के अनेक रोगों का कारगर इलाज हो जाता है। आधुनिक काल में लोग कम व्यायाम करते हैं, असंतुलित भोजन करते हैं। जिससे शरीर में असंतुलन पैदा होता है। जो बीमारियों का कारण साबित होता है। पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा के औषधीय स्नान त्वचा संबंधी एवं शरीर में अत्यधिक वसा से संबंधित रोगों का प्रभावसाली इलाज संभव है। तिब्बती पठार का विशेष प्राकृतिक वातावरण है, जहां की जड़ी बूटियों में भी विशेष तत्व मौजूद हैं। तिब्बती औषधियां मूलतः प्राकृतिक से प्राप्त करने के साथ ही उन्हें उनके मूल रूप में इस्तेमाल कि जाती है जो शरीर के लिए सुरक्षित हैं। तिब्बती चिकित्सा पद्धति में स्नान उपचार के भी दो तरीके हैं, एक तो सिर्फ प्राकृतिक गर्म पानी के श्रोत में स्नान करना और दूसरे तरीके में कुछ दवाओं को गरम करने के बाद शरीर के ऊपर लेप के तौर पर इस्तेमाल करते हुये स्नान करना। गरम पानी में स्नान करने से मांस व हड्डियों की चोट तथा बुखार समेत अनेक मांसपेशियों से संबंधित रोगों का इलाज किया जाता है साथ ही कुछ विशेष जड़ीबूटियों का गर्म लेप बनाकर शरीर पर लगाने से भी रोगों का इलाज किया जाता है।

### मैनपाट के शरणार्थी तिब्बती समुदाय में आधुनिक चिकित्सा के प्रति विचार

शरणार्थी तिब्बती समुदाय में आधुनिक चिकित्सा के प्रति बहुत ही सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रुझान है। समुदाय के ज्यादातर तिब्बती आज भी चिकित्सा के लिए तिब्बती पुजारी/ ज्योतिष (लामा) में विश्वास करते हैं। लामा लोग प्राचीनकाल से ही पारम्परिक चिकित्सा द्वारा उपचार करते चले आ रहे हैं जिन्हें तिब्बती चिकित्सा कहा जाता है। इनके पास बहुत सी ला-इलाज बीमारियों का उपचार संभव है। इनका मानना है कि मंत्रों, वाद्ययंत्रों के उच्चारण से कोई बुरी शक्ति/ बीमारी इनके पास नहीं आती, जबकि मैनपाट के कुछ पढ़े-लिखे तिब्बती समुदाय के लोगों का आधुनिक चिकित्सा के प्रति रुझान बढ़ रहा है। कुछ लामा भी बहुत सी बीमारियों के लिए डॉक्टर पर निर्भर रहते हैं तथा अस्पतालों, स्वास्थ्य केन्द्रों में जाने लगे हैं। लामा लोगों का मानना है कि तिब्बती चिकित्सा के उपचार को सीखने और मंत्रोपचार, सिद्धियां प्राप्त करने में बहुत समय लग जाता है और उपचार में भी समय लगता है जबकि आधुनिक चिकित्सा में सुविधाएं अधिक हैं। दवाईयां समय पर मिल जाती हैं और इसमें पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा की तरह समय नहीं लगता। सभी तिब्बती पुजारी (लामा) में मनोविचार मंत्र शक्ति और समझ के अनुसार उपचार करते हैं। बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि कुछ बीमारियां केवल तिब्बती पुजारी (लामा) ही ठीक कर सकते हैं। जैसे घर में अशांति, जन्म-मृत्यु, विवाह इत्यादि में कठिनाई, पागलपन, झूपना, कार्य में असफलता, इत्यादि। इन विकारों के पीछे तो डॉक्टर भी हार मानने लग जाते हैं और डॉक्टर का भी मानना है कि कुछ बीमारियां का उनसे बेहतर तिब्बती पुजारी (लामा) ही अच्छी तरह से उपचार कर सकते हैं। इस प्रकार तिब्बती पुजारी (लामा) का आधुनिक चिकित्सा एवं पारंपरिक तिब्बती चिकित्सा दोनों के प्रति अपनी श्रद्धा रखते हुये इलाज करते हैं।

## निष्कर्ष-

भारत में स्वास्थ्य को लेकर लोग बहुत पहले से ही सचेत रहे हैं। सभ्यताओं के साथ चिकित्सा और भौगोलिक भिन्नता के साथ भोजन की शैली की लंबे अभ्यास के बाद समृद्ध हो पाई है। जिसमें हमारे पुरखों ने बहुत लंबा वक्त दिया है। इसीलिए भारत में भौगोलिक भिन्नता के साथ भोजन में भी भिन्नता दिखाई देती है। वर्तमान समय में असंतुलित भोजन भोजन और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की एकरूपता की योजना ने लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत ही तेजी से प्रभाव डाला है। आयुर्वेद के हिसाब से देखा जाए तो शरीर मुख्य रूप से पाँच तत्त्व पर कार्य करता है। जो मौसम, भोजन, भौगोलिक स्थिति आदि के संयोजन से कार्य करता है। इसलिए भारत में हर क्षेत्र का भिन्न भोजन है। इन पंचतत्वों में असंतुलन ही अस्वस्थता को पैदा करता है। वहीं आधुनिक चिकित्सा में शरीर एक मशीन की तरह काम करता है जिसके अंग मशीन के अलग-अलग भाग हैं। जिन्हें निकाला और ठीक किया जा सकता है। लेकिन इसके विपरीत वैकल्पिक चिकित्सा या कर्हें की समान्तर चिकित्सा पद्धति बीमारी के मूल कारणों को जानने और शरीर को प्रतिरोधक क्षमता के साथ उन्हें स्वतः ही शारीरिक क्रिया के साथ ठीक होने के लुए सहयोग करता है। तिब्बती समुदाय के लोग सोवारिग्पा चिकित्सा पद्धति का प्रयोग करते हैं जो बहुत ही प्राचीन पद्धति मानी जाती है। यह पद्धति बहुत से लाइलाज बीमारियों के खत्म करने या फिर उन्हें बहुत हद तक दूर करने का दावा करती है। जिसके बहुत से प्रमाण भी दिखाई देते हैं। यह मूल रूप से प्रकृति और भोजन संयोजन से शरीर में हुई विकृतियों को संतुलित करने की कोशिश की जाती है। आधुनिक चिकित्सा के विकास के साथ ही भारत में अन्य समांतर चिकित्सा पद्धतियों की एक तरह से पूर्ण रूप से खारिज किया गया। और सरकार की भी उदसीनता रही है कि भारत में समांतर चिकित्सा पद्धतियों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद, सोवारिग्पा, होम्योपैथिक, यूनानी, एक्युपेरशर एवं तिब्बती आदि पद्धतियों को शामिल तो किया गया लेकिन उन्हें विस्तृत करने शोध आदि के लिए व्यवस्थित आर्थिक लाभ नहीं दिया जा रहा। जिसके पीछे वैश्विक पुंजीवादी मानसिकता कार्य करती है। लेकिन भारत के अलावा अन्य देश अपनी स्थानीय चिकित्सा पद्धति को मजबूत बनाने के साथ-साथ लोगों को उपचार के लिए प्रेरित भी करते हैं।

## संदर्भ :-

- Acharya, D. & Shrivastava, A. (2008). *Indigenous Herbal Medicines: Tribal Formulations and Traditional Herbal Practices*. Jaipur: Aavishkar Publishers Distributor. p. 440
- Angell, M. & Kassirer, J. P. (1998). *The Alternative Medicine the Risks of Untested and Unregulated Remedies (PDF)*. Journal of Medicine New England.

- Alam, J. (2000). *Tibetan Society in Exile*. New Delhi: Raj Publications. p. 128.
- Bisht, B. S. (2006). *Tribes of Uttaranchal: A Study of Education, Health, Hygiene and Nutrition*, Western publisher.
- Chimni, B. S. (2000). *International Refugee Law: A Reader*. New Delhi: Sage Publications.
- Childs, G. (2003). *Polyandry and Population Growth in a Historical Tibetan Society*. *The History of the Family*, pp. 423-444.
- Desai, T. (2014). *Socio-economic and fertility status of the Tibetan communities in South India and impacts of migration*, University of Mysore.
- D. K. L. (2005). *Designs of Social Research*. Jaipur: Rawat publications.
- Kopelman, M. & Lorretta. (2004). *The Role of Complementary and Alternative Medicine: Accommodating Pluralism*, Georgetown University Press, Washington DC, pp. 36–53.
- Liang, L. (1999). *Being and Becoming-Memory, Identity and Subjectivity amongst Tibetan Children in India* (Unpublished).
- Shekhar, T. V. (1997). *Migration and social change*. Jaipur: Rawat Publications.
- Samadaar, R. (1998). *Marginal Nation – Trans-border Migration from Bangladesh to India*. New Delhi: Sage Publications.
- Tensum, K. (July, 1995). *Tibetan Schooling in India*, *Tibetan Review*, p. 20.
- Tsundue, T. (Aug, 2004). *SONTSA: Tibetan Youth Power*, *Tibetan Review*, vol: xxxix, no: 8, p. 19. Xenos.
- Ziman, J. E. (Oct, 1996). *A People in Exile: A Sociological Study of Structural Change in the Tibetan Exile Communities*, *Tibetan Review*, vol: xxx, no: 10.

## TALIBAN 2.0 AND RESURGENCE OF NARCO-TERRORISM IN AFGHANISTAN: AN EMERGING THREAT TO INDIA

**DHARMENDRA KUMAR\***  
**dharmendracusb@gmail.com**

**AKHILESH KUMAR SINGH†**  
**akhileshcusb@gmail.com**

### Abstract

Afghanistan as the official name '*Islamic Emirate of Afghanistan*' is situated on the historic silk route with immediate neighbours such as Uzbekistan in the north, Turkmenistan in the north-west, Iran in the west, Pakistan in the south and south-east, China in the north-east and Tajikistan in north-east. Its strategic location has been a reason for invasions by various rulers like Alexander the Great, Arabs, Mongols, Britishers, Former USSR, USA etc. Because of its hard terrain and multiple ethnic groups, it has been difficult to maintain victory over it. That is why many historians have rightly called it the 'Graveyard of Kingdoms'. Major ethnic groups are Pashtuns, Tajiks, Uzbeks, Hazaras, Turkmen, Baloch etc in Afghanistan. In modern times, Afghanistan has been notoriously difficult to govern by foreign powers. Several empires have emerged and disappeared, but no one has been able to govern for a longer period. Probably, the topography is responsible for the succession of such empires. The root of the tale can be traced long back, but the British Empire, the Russian Empire, and now the United States have all fled from Afghanistan in the last century to the present. That's why Afghanistan is pronounced the "Graveyard of Empires". After decades of struggle, the Taliban (better known as Taliban 2.0) has finally taken power. The international community could not accept Afghanistan's dramatic power shift. Now, the country is going to face a severe political, economic and humanitarian crisis. Although, the Taliban has a history of using organised narco-terrorism to generate revenue to run their administration under Islamic sharia law. This might pose a severe regional threat. However, India's neighbour Afghanistan is experiencing political unrest as a result of the Taliban taking control of Kabul. Most

---

\* Research Scholar, Central University of South Bihar, Gaya (Bihar)

† Research Scholar, Central University of South Bihar, Gaya (Bihar)

nations around the globe did not recognise the Taliban administration so far. Such a delicate situation, which is also a part of the Golden Crescent of Drugs India's immediate neighbourhood is undoubtedly a reason for concern. Drugs associated with terrorism include rendering it a significant danger to the globe as a whole and India in particular. India's investment in the Taliban regime is in jeopardy and Taliban-led Narco-networks in collaboration with the different terrorist groups emerged as a serious security threat to India. So, this paper will deal with Narco-Terrorism and diverse perspectives on emerging regional security threats to India under the Taliban 2.0 regime.

**Keywords:** Narco-Terrorism, War on Drugs, Narcotics Trafficking, Humanitarian Crisis, Security.

### **Introduction**

Narco-terrorism refers to drug trafficking which attempts to influence a government's or state's policies by violence and intimidation, as well as to obstruct the enforcement of anti-drug legislation through the systematic threat or use of violence. Narcotics include the illegal trafficking of Opium, Heroin, Cocaine, and Morphine, as well as other intoxicating drugs that are responsible for humanitarian crises brought on by their addictions. Terrorism is a traditional phenomenon but narcotic trafficking is the relatively new one. The fundamental distinction between terrorism and narcotics trafficking is that the former is largely intended at gaining political power for specific goals, whilst the latter is mostly aimed at profiting from illegal trade. Another significant difference is the lack of ideology in the narcotics-drug trade, which is the core ethos of any terror operation or organisation. The term "*Narco-Terrorism*" was coined by Former President, Fernando Belaúnde Terry of Peru in 1983 to describe terrorist-like attacks against the state's anti-narcotics police. It usually refers to non-state actors' activities, like with most definitions of terrorism. There are several definitions over which Narco-terrorism can be defined. According to Collins Dictionary, Narco-states has defined as "*A country in which the illegal trade in narcotic drug forms a substantial part of the economy*". According to Zalman (2009), "*Narco-terrorism has been used to refer to groups understood to have political intentions that engage in or support drug trafficking to fund their activities*" (Durbin, 2013). The term is being used increasingly for terrorist organisations that engage in drug trafficking activity to fund their operations in the entire region. In this process, they recruit, train and

expertise their people for the successful implementation of the drug or narcotics activity. Such organisations include the Taliban, and Islamist groups like Boka Haram, al-Shabaab and al-Qaida are also linked to drug trafficking. However, Some terrorist organisations are also against this approach. According to a United Nations Security Council report (2020), the Islamic State of Khorasan- ISIS Afghan branch, condemns the narcotics trade (Chellaney, 2021). The United Nations General Assembly (UNGA) issues a declaration on measures to eliminate International Terrorism wherein expressed, *inter alia*, its concern “at the growing and dangerous link between the terrorist group and drug traffickers and their modus Operandi of gangs, which are responsible for all types of violence, legislative order of the states and violating basic human rights. Since the rise of the Taliban (usually pronounced as Taliban 2.0) there has been a potential threat in increasing the use of narcotics trafficking in the entire South Asia region. Yet, Taliban 2.0 took over the Afghanistan states through the use of force and violence. U.S Sponsored Ashraf Ghani government couldn't be sustained against the Taliban attack. So far, the international community has refused to recognise Taliban 2.0. There is a severe economic condition in Afghanistan, which may encourage the Taliban to engage in narcotics and other illicit enterprises to raise funds for long-term Islamic control in the country.

### **History of the Taliban and Narco-Terrorism Connection**

The Taliban are a Sunni fundamentalist organization active in Afghan politics. It is also a militant organisation engaged in an insurgency in Afghanistan against the existing elected government (Maizland, 2021). In the Pashto language, “Taliban” means “Student”. The Taliban as an organisation was founded in the early 1990s by ‘Afghan Mujahideen’, or ‘Islamic Guerrilla Warriors’, who had fought against Soviet incursion in Afghanistan (1979-1989) with the help of the CIA and Pakistani counterparts, the Inter-Services Intelligence (ISI) agency. The Taliban is made up of “Students,” who are a largely Pashtun ethnic group that studied in Pakistan madrassas or seminaries (“Who are Taliban”, 2021). After four years of conflict (1992-96) with a rival mujahideen group, the Taliban movement acquired momentum in the early post-Soviet era, pledging to restore stability and rule of law (Baev, 2021). However, the Taliban first acquire Kandhar in November 1994 and have continued to expand their sphere of influence throughout Afghanistan. In 1996, the Taliban took control of Afghanistan’s capital Kabul and President Burhanuddin

Rabbani was overthrown, because they were allegedly responsible for corruption, disorder, and anti-Pasthun sentiment (Thomas, 2021). Taliban formed a government under the leadership of Mullah Mohammed Omer and declared Afghanistan as an “Islamic Emirates”. Before its collapse, the Taliban regime-controlled almost 90% of Afghanistan’s land in a very short period. Interestingly, four countries have recognised the Taliban as Islamic emirates and have established diplomatic relations with them: China, Pakistan, Russia, and Turkmenistan (“Russia Latest Country”, 2022). Over time, the Taliban imposed Islamic Sharia regulations, which prohibited women from working or studying and obliged them to remain at home unless accompanied by a male guardian. Flogging and public executions were prevalent, western films and books were forbidden, and cultural artefacts contemplated ungodly by Muslims were destroyed. Taliban Islamic laws turned into atrocities and a humanitarian crisis in Afghanistan (Nagourney, 2021) Thereafter, In October 2001, the United States’ intervention began in Afghanistan. The United States troops quickly overthrew the Taliban after they invaded Afghanistan in October 2001 and established the Afghan government and democratic institutions and civil society. In response to the Afghan government, the Taliban waged an insurgency against the U.S.-backed Afghan government. Since the beginning, the Taliban’s major source of revenue comes from narcotics-related activities (Zucchini, 2021). In short, The USA began striking Afghanistan in 1998 because of Osama Bin Laden’s possible hiding place there. After years of fighting, the Taliban eventually fell in 2001, and Hamid Karzai founded an interim government. NATO assumed control of security in 2003 as violence increased. Presidential elections and making a new constitution were the two greatest accomplishments in 2004. The Afghan army took over all military and security activities from NATO forces in 2013 under the leadership of a democratically elected government. The United States and Taliban struck a peace agreement in February 2019 that paves the door for their departure from Afghanistan by May 2021. The full evacuation of American troops by 9/11 was announced by President Biden in April 2021. By August 15, 2021, the Taliban re-emerged with their strong political force to control the entire Kabul (Mamta, 2021).

With the spectacular escape of Afghanistan’s previous democratically elected president Ashraf Ghani, from the pro-American government in August 2021, the Taliban has taken over control of the Afghan administration. However, Turkmenistan is the first Central

Asian country to recognise the Taliban 2.0 government and establish diplomatic ties with Afghanistan. Pakistan, Qatar, and Saudi Arabia, among others, are expected to recognise the Taliban-led administration in Kabul. These states may not be sufficient to alleviate Afghanistan's economic problems under the Taliban 2.0 regime unless the international community recognise it. As a result, the Islamic emirates of Afghanistan may lean towards narcotics activity (Bhadrakumar, 2021).

According to a UN monitoring group, criminal activities like opium poppy farming, drug trafficking, extortion of local companies, and kidnapping are the main sources of money. The entire annual income is projected to be between \$300 million and \$1.6 billion. They generated \$460 million from opium poppy farming alone in 2020. Opium output in Afghanistan has surpassed 6,000 tonnes for the seventh year in a row, according to a report by the United Nations Office on Drugs and Crime (UNODC). The alleged global opium pricing crisis has resulted in an increase of 8% in opiate output exponentially. Because cases of smuggling and seizures of large consignments of drugs in India have started to increase, indicating a turn towards this trend, the Taliban, cash-strapped and still looking to establish a semblance of order in the country they captured in August 2021, may look to generate revenue from the illegal cash crop (Chellaney, 2021). Opium production in Afghanistan would expand under the Taliban, despite the Taliban leadership's initial attempts to acquire international legitimacy. The Taliban have made money from these sectors over the years by promoting it, taxing it, and overseeing its smuggling into Pakistan or Iran, resulting in a massive illicit economy with stronger ties to terrorist groups, as seen in the cases of the Organization of Al-Qaeda in the Islamic Maghreb (AQIM), the Islamic State, the Revolutionary Armed Forces of Colombia (FARC), Hezbollah, and others (Rasmuseen, 2021). According to UN officials, the drug trafficking group made more than \$400 million during 2018-2019. The trend appears to have continued, as a report released in May 2021 by the US Special Inspector General for Afghanistan Reconstruction (SIGAR) estimated that illicit narcotics account for much to 60% of the Taliban's annual revenue. Even though the domestic narcotics trade is well-regulated in a few European countries, with official policies that regard narcotics access as a matter of individual right, there is a global consensus that narcotics can devastate societies and that money earned from the narco-trade can be used to fund organised crime and terror (D'Souza, 2021). Despite having been sanctioned by the UN, they have

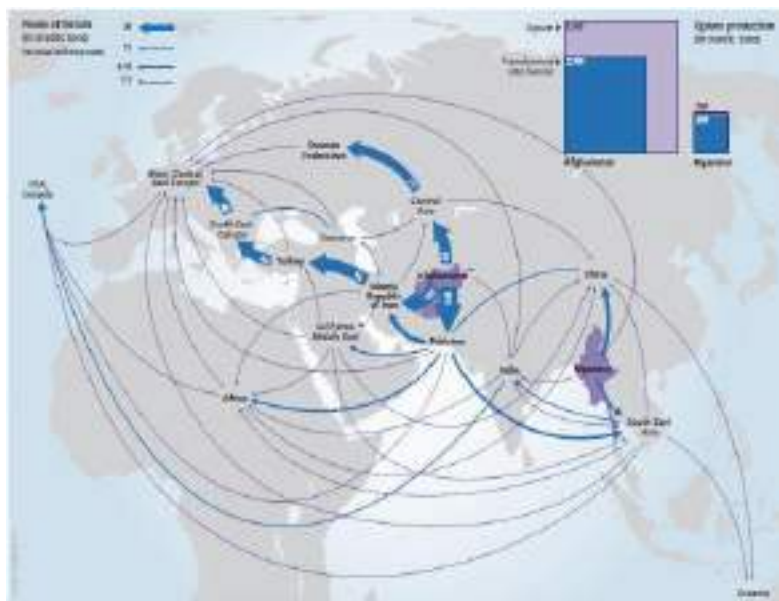
supplemented their income through illegal mining and international funding from unknown sources. According to many experts, the Pakistani security service has been providing financial assistance and logistical support to the Taliban to reduce Indian influence in Afghanistan. Islamabad, on the other hand, has repeatedly rejected such allegations. By assisting the Taliban, Pakistan used whatever resources it had to establish a weak and pro-Pakistan government in Kabul. The revival of the Taliban, who have taken control of the Afghan administration, has long been linked to Pakistan. (Rubin, 2013: 9). As a result, the narco-terrorism-Taliban-Pakistan link persists, and Taliban 2.0 will continue to engage in unlawful narco-terrorism activities more aggressively in the coming days.

### **Global concern on Narco-Terrorism**

Afghanistan is the world's largest opium producer, accounting for 85-87% of the global production worth \$9 billion as the US effort to analyse opium production in Afghanistan. According to a Bloomberg report submitted to the UN, the expected amount of opium production in Afghanistan is nearly 6800 tons in 2021. Opium production in Afghanistan grows at the rate of 8% annual. The United Nations, further said that "Income from opiates in Afghanistan amounted to some \$1.8-\$2.7 billion in 2021. The consecutive yearly growth in production is acquired along the illicit drug supply chain outside Afghanistan. There are narco-terrorism problems throughout the world ("Afghan Heroin Flooding", 2021). Gretchen Peters (2009) in his book "*Seeds of Terror*" highlighted the nexus of the Taliban and Al-Qaeda with other drug traffickers and traced the decades of America's failure to disrupt the opium production that helps to fund extremism in supplying drugs, especially Heroin in the west. This book was the catalyst for a shift in U.S policy towards the Afghan heroin trade and the U.S war on terror. According to a June 2021 report by the UN Security Council's monitoring team, "The dominant source of Taliban financing remains criminal activities," and "the production and trafficking of both heroin and methamphetamines remain the Taliban's largest source of income." At its cost, the Taliban engages in narcotics trafficking in Africa, Europe, Canada, Russia, the Middle East, and other regions of Asia. "The Taliban uses multiple smuggling routes to transit opiates," Brahma Chellaney, (Chellaney, 2021) Fellow at the Robert Bosch Academy in Berlin, said in his article titled "*The Narco-Terrorist Taliban*". It transports its products to Western

Europe via the Caucasus and the Balkans, and then to North America. It also takes a northern route to Russia with the support of the Tajik terrorist group Jamaat Ansarullah. Pakistani security agency facilitates the southeastern route, which runs via Pakistan, by cooperating with the Taliban and smuggling syndicates known as Tanzeems in exchange for bribes.” Indeed, these problems are more common in weak states with lawlessness and violence. Previous incidents have occurred in Sri Lanka (LTTE), Turkey (PKK), Somalia, Russia (ethnic groups fighting for independence from the Russian Federation in Chechnya), and other countries. According to the data, global heroin use (340 tonnes) and seizures currently reflect a yearly influx of 430-450 tonnes of heroin into the global market. Approximately, 50 tonnes of opium are produced in Myanmar and Laos, while the remaining 380 tonnes of heroin and morphine are produced solely in Afghanistan (“Drug Trafficking”, n.d.).

Terrorists and drug traffickers thrive in chaotic countries characterised by failing regimes destabilised by war and internal turmoil. The worldwide conflict network’s political clout has expanded. International criminals use state government systems to defend their businesses in addition to buying politicians’ protection. Failed states are currently the most vulnerable to the “Lethal Triangle” of drug trafficking, arms trafficking, and terrorism. (Pinheiro, 2006: 2-3). The emergence of a narco-terrorist state will have grave implications for the United States, Europe, and other regions like Asia and Africa. In this sense, the UNODC was only able to accomplish a slight reduction in the area under poppy cultivation and opium production. A range of factors contributed to the failure of alternative livelihood programmes and efforts to encourage farmers to plant other cash crops. The central government in Kabul has limited authority, and the international community has favoured a punitive strategy of using force to remove standing opium farms without appropriately compensating farmers or providing alternative livelihoods. As a result, Afghanistan’s narco-infrastructure not only survived, but thrived, and also helps in the development of a symbiotic nexus and indigenous facilities for producing methamphetamine pills. Production increased as the US and the international community worked to get out of the Afghan quagmire, and it is expected to continue to rise in the coming years (D’Souza,2021).



Source: UNODC World  
Drug Report 2010

However, in today's Afghanistan, the Taliban seem to be taking advantage of the vacuum and detached attitude of the international community. This could partly be rooted in the

global failure in adopting an appropriate counter-narcotic policy to rein in the narco-trade originating from Afghanistan between 2001 and 2020.

### **Narco-Terrorism and Implications for India**

The threat of narco-terrorism affects both the entire world and India in particular. The capture of record amounts of high-quality illicit narcotics over the past two years has shocked law enforcement officials. Narco-terrorism is now the largest security threat to international security as well as India. "There is a steep spike in the quantities of contraband shipments since the outbreak of the pandemic last year. It is because of the disruption of supply lines after land routes were closed" (Chauhan, 2021). Indeed, India is situated between the Golden Triangle and Golden Crescent. India is at a high risk of suffering from the narco-terrorism threat. The issue is made worse by the intimate ties that exist between terrorists and drug dealers in narco-terrorism. Over the previous three decades, terrorism has cost India dearly. Law enforcement authorities in J&K apprehended 708 drug traffickers in 2015; by 2020, that number would have increased to 1,672 persons (Zulfikar, 2021). The intensity and growth of organised crime have its survival and thriving dynamics. Countries with the best of intentions and capabilities are unable to turn the tide of an unholy nexus. Afghanistan emerged as a major narco-empire, with neither the ambition nor the capability to interrupt the trade. Under the Taliban regime, some members particularly, the Haqqani network, share well-documented connections with the organised crime network. Whether the global community in general and countries such as India, in particular, afford to take a detached view towards the enveloping situation

remains a critical question. From New Delhi's perspective, its efforts to curb terror finance at home would achieve only limited results if anti-India groups such as the Lashkar-e-Taiba and the Jaish-e-Mohammed, now yet again operating in Afghanistan, managed to tap into the money from such narco trade. For the past couple of decades, Taliban-led Afghan narco-trade has entered India through circuitous routes, sea as well as air, involving Pakistan, Sri Lanka, and African countries such as Mozambique and South Africa. It posed a plurality of threats to India that are discussed below-

### **Security Challenges**

The geographical proximity of India's Pakistan and Afghanistan and India's linkages with Southeast Asia would be responsible for the rise of the security challenge to India. India has supported Afghan President Ashraf Ghani and afghan's democratic regime. Indeed, India has been a leading democracy promoter state in South Asia. However, Democracy is no longer in Afghanistan due to the Rise of Taliban 2.0. It will have repercussions on India because India considers the Taliban, a proxy of Pakistan. The true security threat to India comes from Pakistan-based terrorist organisations. India is increasingly concerned about al-Qaeda in the Indian Subcontinent (AQIS) plans to extend its presence in Kashmir in 2020, which may result in increased unrest in Kashmir, as well as the evacuation of US soldiers. The aerial intervention took place by using low-flying drones and drug packets in small gunny bags thrown across the border into Punjab from Pakistan. The border security force (BSF) found the footprint of Narco-infiltration along with the border while conducting search operations (Taskin, 2021). Tensions between India and Pakistan have risen since India abrogated Jammu and Kashmir's special autonomy status under Article 370 of the Constitution, leading to an increase in radicalism among Kashmir's youth. UN-banned, terrorist groups Lashkar-e-Tayyiba (LeT) and Jaish-e-Mohammed (JeM) based in Pakistan are attempting to persuade India to withdraw from Indian-administered Kashmir and hand over control of the region to Pakistan (Kapur, 2022). There has been grapevine information in recent months that members of the LeT and JeM have begun fighting alongside the Taliban. A return of fighters to Kashmir is one of the concerns, which might lead to greater terrorist activity. According to reports, the Taliban has freed hundreds, if not thousands, of hostages in Kabul, including ISKP and al-Qaeda fighters. According to reports, the released convicts include at least eight members of the Kerala Islamic State

module. Although India has long claimed that it will not engage or interact with terrorist organisations, it has undertaken talks with the Taliban to protect its economic and security interests, and it recently participated intra-Afghan peace talks in Doha at the invitation of the United States (Mehra, et.al., 2021). Indeed, the Taliban may have initiated free for all narcotic smuggling waves, which unless checked, have the potential of destabilising India's security. Illicit narco-trade not only causes proxy war at the border but is also responsible for internal conflict and security threats to India.

### **Economic Challenges**

India is the second most vulnerable country in terms of drug trafficking. Geographical links between India and South Asia, as well as a free and open international border with Nepal, are the most favourable routes for drug trafficking in India. Several factors contribute to drug trafficking and its severe economic effects on India's economy and society, either directly or indirectly. According to the Ministry of Chemicals and Fertilizers Department of Pharmaceuticals, India is a worldwide pharmaceutical hub that supplies "the largest providers of generic medications globally". By volume, the formal supply of medicines accounts for 20% of the global supply. The Indian pharmaceutical industry is worth US\$42 billion, ranking third in volume and thirteenth in value globally. The total FDI inflow in the Indian drug and pharmaceutical sectors reached US\$1,206 billion between April-December 2021 ("Indian Pharmaceutical", 2022). However, it is still unknown how much informal drug trafficking occurs in India. Nowadays, Alcohol prohibited states like Bihar, Gujarat Mizoram and Nagaland are most vulnerable to drug trafficking. Individuals have been arrested in various airports in the country with small quantities, as well as the massive recoveries made in various states of western India, have only been the proverbial tip of the iceberg. The massive smuggling of Alcohol in Bihar following the ban may likely be "*Udta Punjab*" now being pronounced as "*Udta Bihar*" (Chaudhary, 2017). The huge recoveries of heroin from Gujarat, a total amount of 3,000 kilograms in September and 120 kilograms in October. Nagaland is a border state where cannabis addiction is greater than the national average and opioid abuse is on the rise. These states are being utilised as smuggling routes to smuggle narcotics throughout the Northeast region as well as other regions of India, which is quite concerning. Between May and December 2020, enormous quantities of ganja, opium, heroin, brown sugar, and

pills were recovered in Nagaland. However, a comparison of the following months, January to May 2021, revealed a significant increase in seizures on similar items (“Nagaland Continues”, 2021). Mizoram shares approximately 500 kilometres of the International border with Myanmar, and it has been merged as a new narco-trafficking route originating from Myanmar. This route is being used to smuggle illegal drugs supplying Bhutan, Nepal, Bangladesh and Sri Lanka as well as North-East states and other states to India. The border fencing could not be completed so far alongside Myanmar. According to a report from the United Nations Office on Drugs and Crime, India reported seizures of Amphetamine-type stimulants (ATS) increased from 431kg in 2018 to more than 2.2 tons in 2019 (Chaudhary, 2020). It is fact that the Taliban’s control of Kabul may have triggered a free-for-all narcotics smuggling wave that, if not checked, has the potential to destabilise India’s security fence.

### **Maritime Challenges**

Maritime security is one of the new buzzwords in international relations. Over the past ten years, significant players in maritime policy, ocean governance, and international security have begun to integrate maritime security into their mandates or redefine their work in this way. After the 9/11 attacks on the United States World Trade Center and the ensuing worries about the growth of maritime terrorism, the idea of “maritime security” first came to light. It alludes to dangers including piracy, maritime terrorism, interstate maritime conflicts, trafficking in narcotics, persons, and illegal products, the spread of weapons, illegal fishing, crimes against the environment, and marine accidents and disasters (Bueger, 2015). From this perspective maritime security in terms of Narco-trafficking and illegal trade has been essential to India in the wake of restoring the old Taliban as the Taliban 2.0 in Afghanistan.

When it comes to India’s concern, India by geography, has ocean access from the three sides comprising a total coastal length of 7,516.6 km including Lakshadweep and Andaman and Nicobar Island. The country is surrounded by the Bay of Bengal in the east, the Arabian Sea in the west and the Indian Ocean to the south. Historically, India claims that the Indian Ocean is India’s Ocean. Around 80 per cent of maritime trade passes through the Indian Ocean. The Indian Ocean is also used to traffic illegal substances such as opium, heroin, brown sugar, and other synthetic drugs. The Indian Ocean states are

primarily affected by two regions: the “Golden Crescent,” which includes illicit opium-producing areas in Iran, Afghanistan, and Pakistan, and the “Golden Triangle,” which includes Myanmar, Thailand, and Laos and is the world’s second-largest opium production region. The Taliban-led drug trafficking network was involved in the operation to smuggle drugs and raise funds for their political goals (“UN Office on Drugs”, n.d). Geographically, India is sandwiched between the “Golden Crescent” and the “Golden Triangle,” both of which posed a marine threat to India’s coastal region. India’s primary commercial hub and major cities are located on the bank of the ocean, with extensive coastline borders, from which commodities are imported from all over the world. Drug trafficking networks take advantage of this procedure to conceal their illegal activities. The drug trafficking network has been observed to have access to Indian cities, where drug party cultures are growing in major cities. However, Gujarat has recently seen a surge in heroin seizures.

### **Humanitarian challenges**

A humanitarian crisis is an occurrence or a set of events that has the potential of derogatory effect on the human health, safety, or well-being of a community or a large number of people. Indeed, it is a man-made humanitarian crisis wide spread the use of the drug (Hoelscher, et al., 2017). Drugs, on the other hand, are made up of chemicals that have an effect on the human body, neurological system, and brain and make humans vulnerable. Various drugs have varied impacts on the human body depending on their chemical composition. Some drugs have short-term effects, while others have long-term impacts. The drugs that fall under the Narco-Terrorism realm have a derogatory impact on human health and are highly addictive. Drug trafficking methods have shifted from plant-based drugs such as cannabis, cocaine, and heroin to synthetic medicines like tramadol in recent years, with narcotics use in India increasing substantially. Drug trafficking is being carried out in a variety of ways, including the use of wedding cards and gift packets, as well as drones. Bollywood celebrities, their offspring, and their financially well-off families are the primary targets of large-scale drug consumption. For instance, drug trafficking is responsible for the widespread use of drugs. On October 2 of last year, the Narcotics Control Bureau (NCB) caught Aryan Khan after he participated in a drug party on a cruise ship and recovered drugs such as hashish, cocaine, and MD (“The Entire

Timeline”, 2021). Bollywood celebrities and films like ‘*Udta Punjab*’ have been released for glamorising drug use among Indian youth. These actions may have a cascading impact on India, resulting in a large-scale humanitarian crisis. In addition to this, High-speed Internet and “Darknet” access are other developing concerns. It is possibly the most sophisticated method of drug trafficking on the dark web. The “Darknet” platform connects an anonymous supplier with an anonymous buyer. Although these platforms conceal the buyer and seller’s identities and use Bitcoin (Cryptocurrency) as a new payment method, the feedback system makes it more trustworthy for both consumers and sellers (“Leader of Darkweb”, 2022). Drug addiction, on the other hand, influences the national human capital and may eventually paralyse India’s workforce. So, the government must take preventative measures to combat narco-trafficking and curb emerging threats.

### **Conclusion**

In international relations, especially during and after the Cold War, security was dominated by the realist paradigm that maintained the state from external threats. According to Barry Buzan, Security is usually associated with a “threat to survival”. On the other hand, according to Booth (2005), security means, “the absence of threats”, meaning the possibility of being safe from danger or feeling safe. According to Ayooob (1995), “security-insecurity is defined concerning vulnerabilities- both internal and external- that threaten or have the potential to bring down or weaken states structures, both territorial and institutional, and governing regimes”. The traditional approach to security was concerned about the military aggression among states but in modern times the nature of security has been shifted to non-traditional means involving non-states actors through illegal means. Taliban has been notorious in such activities since its rise. However, the world has witnessed the previous regime of the Taliban and in the present context, the international community is concerned about the rise of Taliban 2.0. A legal, responsible, powerful, and inclusive administration in Kabul is the solution to rising phenomena. The Afghan state’s economic collapse and the escalating humanitarian crisis must be taken into consideration. Reaching out to Afghans and raising their voices in support of a government that is legitimate and acceptable to them would be a good start. While the Delhi Regional Security Dialogue on Afghanistan (November 10, 2021) attempted to

engage regional countries, India should seek new partnerships in Central, West, and South Asia to form a willing coalition. It is high time for New Delhi to take the initiative and reach out to the larger segments of Afghan society, such as women and civil society organisations, political leaders, and business organisations, who could assist in establishing a legitimate, representative, and inclusive leadership in their country. In the coming days, a failed state in the neighbourhood paired with narco-terrorism will have major ramifications for India's security. Given all these possibilities, the world as a whole and India in particular must approach the Afghanistan issue with greater caution and delicacy. The earliest possible time should be used to deliver humanitarian aid. As soon as feasible, plans should be prepared for food and medical services. If educational facilities are not maintained vigorously, the cycle of poverty, under-education, unemployment, and narcoterrorism backbone will not be broken. This affects all of South Asia in addition to Afghanistan as well. In today's globalised world, regional peace and prosperity eventually contribute to global peace and prosperity.

## Reference

- Baev, K. Pavel. (2021). Russia and America's overlapping legacies in Afghanistan. *Brookings*. Retrieved from <https://www.brookings.edu/blog/order-from-chaos/2021/08/18/russia-and-americas-overlapping-legacies-in-afghanistan/>
- BBC. (2021). Who are the Taliban? Retrieved from <https://www.bbc.com/news/world-south-asia-11451718>
- Bhadrakumar. M.K. (2021). US recognition of the Taliban govt will be a game-changer. *News Click*. Retrieved from <https://www.newsclick.in/US-Recognition-Taliban-Govt-Will-be-Game-Changer>
- Chaudhary, Amit Kumar. (2017). Uda Bihar: Huge spike in substance abuse, alcohol bootlegging year after ban. *India today*. Retrieved from <https://www.indiatoday.in/india/story/india-today-exclusive-investigation-udta-bihar-black-marketing-alcohol-drugs-ban-980475-2017-06-01>
- Chaudhary, Dipanjan Roy. (2020). Mizoram emerges as a major drug trafficking route from Myanmar. Retrieved from <https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/mizoram-emerges-as-major-drug-trafficking-route-from-myanmar/articleshow/78553675.cms?from=mdr>
- Chellaney, Brahma. (2021, November 15). The narco-terrorist Taliban. *The Strategist*. Retrieved from <https://www.aspistrategist.org.au/the-narco-terrorist-taliban/>
- Durbin, K. J. (2013). International Narco-Terrorism and Non-State Actors: The Drug Cartel Global Threat. *Global Security Studies*, 4(1).
- D'Souza, Shanthie Mariet. (2021). Afghanistan, the rise of a narco-terrorist state. *The Hindu*. Retrieved from <https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/afghanistan-the-rise-of-a-narco-terrorist-state/article37778342.ece>

- European Foundation for South Asian Studies. (2021). Afghan heroin flooding global markets and motivation narco-terrorism is a real threat after the Taliban takeover. Retrieved from <https://www.efsas.org/commentaries/afghan-heroin-flooding-global-markets-and-narco-terrorism/>
- Kapur, Roshni. (2022). A new phase of militancy in Kashmir: Challenges for India. MEA. Retrieved from <https://www.mei.edu/publications/new-phase-militancy-kashmir-challenges-india>
- Maizland, Lindsay. (2021). The Taliban in Afghanistan. *Council on Foreign Relations*. Retrieved from <https://www.cfr.org/background/taliban-afghanistan>
- Mehra, Tanay., Wentworth, Matthew. (2021, August 27). The rise of the Taliban in Afghanistan: Regional responses and Security threats. *International Centre for Counter-Terrorism*. Retrieved from <https://icct.nl/publication/the-rise-of-the-taliban-in-afghanistan-regional-responses-and-security-threats/>
- Morung Express-News. (2021). Nagaland continues to battle the drug menace. Retrieved from <https://morungexpress.com/nagaland-continues-to-battle-drug-menace>
- Nagourney, Eric. (2021). Who are the Taliban, and what do they want. *The New York Times*. Retrieved from <https://www.nytimes.com/article/who-are-the-taliban.html>
- Peters, Gretchen. (2009). *Seeds of terror*. Hachette Book Group: USA
- Pharmaceutical's Industry Report. (2022). Indian pharmaceutical industry. Retrieved from <https://www.ibef.org/industry/pharmaceutical-india#:~:text=India%20is%20the%20world's%20largest,in%20terms%20of%20value%20world wide.>
- Ramsmussen, Sune Engel. (2021). Taliban move to ban opium production in Afghanistan. *The Wall Street Journal*. Retrieved from <https://www.livemint.com/politics/news/taliban-move-to-ban-opium-production-in-afghanistan-11630248904465.html>
- Rubin. Barnett R. (2013). *Afghanistan from the Cold War through the War on Terror*. Oxford University Press: New York.
- The United States Attorney Office, District of Massachusetts. (2022). Leader of dark web drug trafficking operation sentenced to eight years in prison and 59 Bitcoin in forfeiture. Retrieved from <https://www.justice.gov/usao-ma/pr/leader-dark-web-drug-trafficking-operation-sentenced-eight-years-prison-and-59-bitcoin>

- Thomas, Clayton. (2021). Taliban government in Afghanistan: Background and issues for congress. Congressional Research Service. Retrieved from <https://crsreports.congress.gov/product/pdf/R/R46955>
- The Outlook Web Bureau. (2021). The entire timeline of Aryan Khan drug case. Retrieved from <https://www.outlookindia.com/website/story/entertainment-news-the-entire-timeline-of-aryan-khan-drug-case/399137>
- Taskin, Bismee. (2021). How drugs are brought into India: In weddings cards, by drones and hidden in sea cargo. Retrieved from <https://theprint.in/theprint-essential/how-drugs-are-brought-into-india-in-weddings-cards-by-drones-and-hidden-in-sea-cargo/739398/>
- United Nations Office on Drugs and Crime. (2011) The global Afghan opium trade: A threat assessment. Retrieved from [https://www.unodc.org/documents/data-and-analysis/Studies/Global\\_Afghan\\_Opium\\_Trade\\_2011-web.pdf](https://www.unodc.org/documents/data-and-analysis/Studies/Global_Afghan_Opium_Trade_2011-web.pdf)
- VOA News. (2022). Russia latest country to establish diplomatic ties with the Taliban. Retrieved from <https://www.voanews.com/a/russia-latest-country-to-establish-diplomatic-ties-with-taliban/6521949.html>
- Zucchini, David. (2021). The U.S. war in Afghanistan: How it started, and how it ended. *The New York Times*. Retrieved from <https://www.nytimes.com/article/afghanistan-war-us.html>
- Majid Zulfikar, (2021, October 03), The long shadow of narco-terrorism, Deccan Herald. Retrieved from <https://www.deccanherald.com/specials/insight/the-long-shadow-of-narco-terrorism-1036706.html>.
- Mamta. (2022). Fragile Afghanistan and Fear of Narco-Terrorism for India: A critical analysis. *International Journal of Creative Research Thought*. Retrieved from <https://ijcrt.org/papers/IJCRT2203482.pdf>.
- Bueger, Christain. (2015). What is maritime security?. *Elsevier*. Retrieved from <https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0308597X14003327>
- "Definition of Narco-State". (n.d). *Collins Dictionary*. Retrieved from <https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/narco-state>.
- Chauhan, Bala. (2021). Narco terrorism biggest global security challenge. *The New Indian Express*. Retrieved from <https://www.newindianexpress.com/nation/2021/sep/24/narco-terrorism-biggest-global-security-challenge-2362934.htm>

\*\*\*\*

## Benefits of Arts Integration in STEM: STEAM Learning Approach

MOHINI TRIPATHI\*

mohini25tripathi@gmail.com

REKHA AGRAWAL†

rekhaagrawal@cusb.ac.in

### Abstract

STEAM is the abbreviation for Science, Technology, Engineering, Arts, and Mathematics. There are many researches in support of STEAM development for Arts joining and furthermore saw Arts to be appropriate when joined with STEM making STEAM. STEAM learning approach relies upon the recommendation that STEAM and Arts cooperate better compared to doing independently. This methodology of learning prompts students for inquiry, exchange, inventive and decisive reasoning through multidisciplinary directions for getting understanding and conceptualization of any idea. Subsequently upgrading 21st-century fundamental abilities and getting ready students for worldwide competition. In this unique circumstance, the National Education Policy (NEP)- 2020 of India likewise imagined an all encompassing, holistic, flexible, and multidisciplinary way to deal with learning for the general advancement of the students.

**Keywords:** STEM, STEAM, Integration of Arts

### Introduction

The arising STEM to STEAM development has gotten explicit thought in instruction and strategy banter by inciting Arts incorporation in STEM learning approach (Maeda, 2013) with equivalent significance and not as a beneficial subject (Bequette and Bequette, 2011; Sousa and Pilecki, 2013). This combination is significant for inventiveness, advancement, and other fundamental abilities that are mandatory for 21st-century instruction (Beal, 2013; Maeda, 2013; Sharapan, 2012). STEM is centered around Mathematics and Science, yet STEAM gave significance to the both Arts and STEM (Ernst and Clark, 2007) by including workmanship as articulation, performing

---

\* Research Scholar, Department of Teacher Education, Central University of South Bihar

† Professor, Department of Teacher Education, Central University of South Bihar

expressions, computer graphics, design, critical and creative thinking abilities, problem solving, and so forth (Gettings, 2016; Herro and Quigley, 2017; Jolly, 2014; Lio, 2016; Miller and Knezek, 2013). STEAM is characterized by the State Education Agency Directors of Arts Education (SEADAE) as "a deliberate, cooperative instructional method for trains that enables students to participate in certifiable encounters through the bona fide arrangement of principles, cycle, and practices in science, innovation, designing, artistic expression and arithmetic" (Huser et al., 2020, p.1). Along these lines this methodology of gaining should bring the change in perspective from conventional repetition instructive way of thinking which basically centers around test scores to a way of thinking that esteems the learning system as much as the outcomes. This methodology of learning is a trailblazer, yet a cooperation of Arts with Science and different subjects is certainly not a groundbreaking thought. India has a long custom of comprehensive and multidisciplinary learning, from colleges, for example, Takshashila and Nalanda to the broad writing of India joining subjects across fields. In this agreement, National Education Policy (2020) set forward that all parts of inventive human undertaking, including Maths, Science, professional subjects, proficient subjects, and delicate abilities which without a doubt has Indian starting points, should be considered 'Expressions' and subsequently should be remembered for Indian schooling since it is the essential for the 21st-century instruction.

### **Historical Background**

The expanding rivalry among creating economies because of the economic downfall (Sochacka, Guyotte, and Walther, 2016) prompts the emergence of STEM training in the U.S. during the 1990s by National Science Foundation collectively of Science, Technology, Engineering, and Math together (English, 2016; Sanders, 2009). The primary objective of this instructive change is to plan students for the 21st century's worldwide economy (Huser et al., 2020; Yakman and Hyonyong, 2012). Later the quantity of students seeking STEM as a profession declined (Lio, 2016). This outcomes in an absence of qualified specialists and along these lines many positions go unfilled (Bidwell 2014). In this understanding, President Obama stepped up as 'Instruct to Innovate' in 2009 which zeroed in on the quality improvement of STEM training however it didn't zero in on the main driver of this issue that is absence of imagination

and inventiveness. As indicated by Adobe Create Report 2012, this absence of inventiveness is tracked down in training as well as in work environments where one out of four individuals don't feel their imaginative potential is sufficient (as cited in Maltas, 2015). This brought about the integration of Arts and Humanities in STEM prompting the introduction of STEAM (STEM+Arts) (Lio, 2016; Maeda, 2013). This methodology of learning gave a characteristic and imaginative perspective on the world to students thus this learning approach turned into the point of convergence of educators, educationists, and scientists (Sousa and Pilecki, 2013).

### **Integration of Arts**

The significance of Arts in science and different fields has for quite some time been acknowledged. Pythagoras remarked "we are artists" to his kindred mathematicians (as cited in Henriksen, 2014, p.31). Extraordinary researchers and mathematicians recommend that the limits among Maths and Arts or Science and Arts are more smoothed out than customary approaches to learning. As per Sousa and Pilecki (2013), one can't envision the world without human expressions in the form of Arts since it tends to be found in all aspects of life. Along these lines it additionally assumes a vital part in training. Rabalais, (2014) likewise contends that Arts is the missing part that associates development and innovativeness to logical agreement. Sharapan (2013) is likewise for Art exercises as the normal part of study halls. In the perspective of Riley (2013) integration of Arts engages learners to explore any content through numerous substance regions at the same time and understand it through Arts. Along these lines students investigate the logical technique utilizing five parts of Arts (music, show, visual expressions, dance, and writing) regularly the visual expressions (Edwards, 2010; Riley, 2013). Edward further clarifies that visual expressions exercises incorporate drawing, painting, and printing (two-dimensional visual works) and the production of models, figures, and so on (three-dimensional). Also, visual expressions furnish students with fine coordinated movements and visual-spatial reasoning capacities that are wanted for logical subjects. Besides, Goldberg recommended instructional method for Art combination in which students learn with (helps like canvas, verse, play, music, and so forth), through (by making the work of art, models, mold, playing out a play, and so on) as well as about the Arts (it's set of experiences,

specialists, and so on) (as cited in Mark et al., 2020, p. 10) Effective utilization of Art rehearses in STEAM learning can work on mental execution, help their inspiration, and upgrade their commitment and learning (Henriksen, 2014; Jonides, 2008). Besides, Sharapan (2013) says that Art combination helps the students in advancing as well as in the preparation of instructors. Sharapan further says that it empowers educators to make STEM ideas more straightforward in conceptualizing for students. It likewise assists students with communicating their thoughts in assorted innovative ways. Further, Bequette and Bequette, (2012) additionally found in their review the likenesses in the plan interaction of Arts and Engineering as both utilize the plan cycle in looking for visual answers for an issue. Besides, Madden et al., (2013) contend that Art incorporation energizes advancement in Science and Technology which is vital for the goal of modern and diverse issues of society. Additionally, Connor, Karmokar, and Whittington, (2015) likewise support it in the fields of Engineering and Technology.

### **Benefits of STEAM Learning Approach**

The instruction of Science, Technology, Engineering, Arts and Mathematics continues at the same time in this methodology of learning. Any idea through this approach consolidates components of the relative multitude of spaces without fail or possibly a portion of the time. For example, Science needs advancements (instruments), estimation, and planning of instruments using Mathematics and Arts, while Engineering is utilized in the useful application for creation and creation, finally imaginative ways are utilized in showing and downplaying the idea. Colker and Simon propose that STEAM is valuable in giving growth opportunities that make students allowed to investigate, research, and find through consolidating various disciplines (as cited in DeJarnette, 2018). As indicated by Boy, (2013) dynamic cooperation of students is a vital element for osmosis, convenience, appreciation, and conceptualization of any idea and it is accomplished through this methodology. This is on the grounds that imaginative exercises fuse dynamic commitment, innovative reasoning, and critical thinking and subsequently work with understudy's cooperation and learning. It gives issue based directions that interface society, out-of-school occasions, and settings. While tackling the issue students get the open door to independent learning, revelations, investigation, imagination, and decisive reasoning. Kid likewise calls attention to the

huge attributes of society as correspondence, cooperation, and interconnectivity. This approach likewise gives peer bunch cooperation through little gatherings where students work cooperatively in information development. This upgrades their cooperative abilities, relational abilities, tuning in and regarding other's thoughts, authority, interconnectivity, and so on Mark et al., 2020 in their investigation discovered that through genuine association, cooperative and active commitment with peers invigorates, supports, and requests to student's revenue in logical review and profession. As per Goldberg, learning through Arts helps students in the declaration of their considerations and feelings in inventive and creative ways (as cited in Mark et al., 2020). Workmanship class merges execution, generations, and information through endeavors to be done by understudies in participation performing different positions that are associated with this current reality. Instructors can foster performing various tasks through the joining of music and stories connecting with the substance during studio time, or by stage responsibility and giving different undertakings to help using time as a matter of fact. Verbalizations melded learning units can fill in as a vehicle for understanding substance the STEM fields as well as tutoring generally speaking. Assuming teachers across disciplines team up to zero in on expressions coordinated project-based learning, the adolescents of tomorrow will be proficient. The STEAM project depends on procuring prompts making different capacities in understudies like decisive reasoning, participation, imaginative and fundamental capacities (Messie, 2015). Along these lines this learning approach affects the educating and learning process by expanding the commitment, certainty, inspiration, joint effort, inventiveness, and correspondence of the two educators and students.

### **Challenges**

There are many difficulties in embracing this methodology of learning. STEAM learning approach is an arising approach in the school system consequently explores are as yet happening in this field. Accordingly, there is least exploration that tells the most common way of making a STEAM based educational plan. The fruitful incorporation of spaces should be possible with the assistance of a very much arranged educational plan and expertly prepared instructors. Contrasted with the conventional educational plan, STEAM educational plan is seriously difficult. Teachers find it challenging to

completely revamp all the discipline's incorporation in educational plans and a large portion of the educational systems don't have adequate time or assets for it (Maltas, 2015). The educators need to refine their instructive information and abilities for successful STEAM instructing. This is requested in understanding and information on STEAM learning approach as well as formulating educational and learning content for their students. Instructors are tested to educate inventively while going across grades and topics in this incorporated methodology when they don't have any such experience (Mark et al., 2020). They face difficulties in getting ready example plans with learning results to upgrade inventiveness, decisive reasoning, and contextualization of topics in particular areas with the union of STEAM spaces. Catterall (2013) additionally tracks down the common sense test in working out to foster legitimate guidelines and educational plan for accomplishing Art coordinated Science and Maths learning in homerooms. This methodology of instructing and learning requires a multidisciplinary, interdisciplinary, and transdisciplinary approach along these lines educators additionally should have abilities to be dynamic students, cooperative for collaboration, and prepared all the time to refresh their abilities for their powerful instruction.

### **Conclusion**

STEAM is another worldview in training which accentuates the significance of STEM as well as Arts. This methodology of learning contends that Arts can possibly give different better approaches for getting the hang of, seeing and thinking inventively in developing reasonable information as well as critical thinking. With the assistance of viable incorporation of directions in STEAM learning approach engages students to think innovatively and creatively. For this methodology of schooling to be successful, it is important to contribute and fortify educators with information and abilities so they will have the option to execute STEAM based educational programs. Plus, a prepared educator may have the option to deal with understudies learning at various levels. Along these lines there is a need to help STEAM instructors through studios, preparing, workshops and meetings. They likewise need schools and establishments coaching backing to confront the difficulties. Further exploration is expected to be done to look at the joining of different disciplines like Arts and Social Sciences while considering different new ways to deal with STEM like STEAM and STREAM.

## References

- Beal, S. (2013, June 11). *Turn STEM to STEAM: Why Science Needs the Arts*. Huffpost. Retrieved September 12, 2020, from [https://www.huffpost.com/entry/turn-stem-to-steam\\_b\\_3424356](https://www.huffpost.com/entry/turn-stem-to-steam_b_3424356)
- Bequette, J. W., & Bequette, M. B. (2012). A Place for Art and Design Education in the STEM Conversation. *Art Education*, 65(2), 40-47. <https://doi.org/10.1080/00043125.2012.11519167>
- Bidwell, A. (2014, February 5). Report: STEM Job Market Much Larger Than Previously Reported. *U.S. News & World Report*. <https://www.usnews.com/news/stem-solutions/articles/2014/02/05/report-stem-job-market-much-larger-than-previously-reported>
- Boy, G. A. (2013, August). From STEM to STEAM: toward a human-centred education, creativity & learning thinking. In *Proceedings of the 31st European conference on cognitive ergonomics* (pp. 1-7). <https://doi.org/10.1145/2501907.2501934>
- Catterall, J. (2013, March). Getting Real about the E in STEAM. *The STEAM Journal*, 1(1). 10.5642/steam.201301.06
- Connor, A., Karmokar, S., & Whittington, C. (2015). From STEM to STEAM: Strategies for Enhancing Engineering & Technology Education. *International Journal of Engineering Pedagogy*, 5(2), 37-47. <https://www.learntechlib.org/p/207460/>
- DeJarnette, N. K. (2018). Implementing STEAM in the Early Childhood Classroom. *European Journal of STEM Education*, 3(3), 18. <https://doi.org/10.20897/ejsteme/3878>
- Edwards, D. (2010). *Artscience: Creativity in the post-Google generation*. Cambridge, MA: Harvard University Press.
- English, L.D. (2016). STEM education K-12: perspectives on integration. *International Journal of STEM Education* 3, 3. <https://doi.org/10.1186/s40594-016-0036-1>
- Ernst, J., & Clark, A. (2007). Scientific and technical visualization in technology education. *Technology Teacher*, 66(8), 16-20.
- Gettings, M. (2016, June). Putting it all together: STEAM, PBL, scientific method, and the studio habits of mind. *Art Education*, 69(4), 10-11. <https://doi.org/10.1080/00043125.2016.1176472>
- Henriksen, D. (2014). "Full STEAM Ahead: Creativity in Excellent STEM Teaching Practices. *The STEAM Journal*, 1(2). : 10.5642/steam.20140102.15
- Herro, D., & Quigley, C. (2017). Exploring teachers' perceptions of STEAM teaching through professional development: Implications for teacher educators. *Professional Development in Education*, 43(3), 416-438. <https://doi.org/10.1080/19415257.2016.1205507>
- Huser et al. (2020). *STEAM and the Role of the Arts in STEM*. State Education Agency Directors of Arts Education. <https://www.nationalartsstandards.org/sites/default/files/SEADAE-STEAM-WHITEPAPER-2020.pdf>
- Jolly, A. (2014, June 18). *STEM vs. STEAM: Do the arts belong*. Education Week. Retrieved December 30, 2019, from <https://www.edweek.org/teaching-learning/opinion-stem-vs-steam-do-the-arts-belong/2014/11>
- Jonides, J. (2008). Musical skills and cognition. In C. Asbury & B. Rich (Eds.), *Learning, Arts, and the Brain* (pp. 11-16). Dana Press.

- Liao, C. (2016). From interdisciplinary to transdisciplinary: An arts-integrated approach to STEAM education. *Art Education*, 69(6), 44-49. <https://doi.org/10.1080/00043125.2016.1224873>
- Madden, M. E., Baxter, M., Beauchamp, H., Bouchard, K., Habermas, D., Huff, M., Ladd, B., Pearson, J., & Plague, G. (2013). Rethinking STEM Education: An Interdisciplinary STEAM Curriculum. *Procedia Computer Science*, 20, 541-546. <https://doi.org/10.1016/j.procs.2013.09.316>
- Maeda, J. (2013). "STEM + Art = STEAM. *The STEAM Journal*., 1(1). 10.5642/steam.201301.34
- Maltas, W. (2015). *From STEM to STEAM: Integrating Arts Education into the STEM disciplines of Science, Technology, Engineering and Math* [Thesis]. Drexel University, Philadelphia. [https://idea.library.drexel.edu/islandora/object/idea%3A6766/datastream/OBJ/download/From\\_STEM\\_to\\_STEAM.pdf](https://idea.library.drexel.edu/islandora/object/idea%3A6766/datastream/OBJ/download/From_STEM_to_STEAM.pdf)
- Mark, S. L., Constantin, G. M., Tinnell, T. L., & Alexander, O. O. (2020). It got me back to science and now I want to be a plant scientist: Arts-integrated science engagement for middle school girls. *Journal for Learning through the Arts*, 16(1). <https://doi.org/10.21977/D916145329>
- Messie, N. (2015, May 18). *The how's and why's of going 'full steam ahead' in your classroom*. Edsurge. Retrieved March 25, 2021, from <https://www.edsurge.com/news/2015-05-18-the-how-s-and-why-s-of-going-full-steam-ahead-in-your-classroom>
- Miller, J., & Knezek, G. (2013). STEAM for Student Engagement. In R. McBride & M. Searson (Eds.), *Proceedings of SITE 2013--Society for Information Technology & Teacher Education International Conference* (pp. 3288-3298). Association for the Advancement of Computing in Education (AACE). 978-1-939797-02-5
- Rabalais, M. E. (2014). *STEAM: A National Study of the Integration of the Arts Into STEM Instruction and its Impact on Student Achievement* [Dissertation]. ProQuest Dissertations Publishing. <https://www.proquest.com/openview/d4dadbab54198740e20fd2bf013ed5d4/1?pq-origsite=gscholar&cbl=18750&diss=y>
- Riley, S. (2013, December 18). *Pivot Point: At the Crossroads of STEM, STEAM and Arts Integration*. Edutopia. Retrieved June 16, 2021, from <https://www.edutopia.org/blog/pivot-point-stem-steam-arts-integration-susan-riley>
- Sanders, M. (2009). STEM, STEM education, STEMmania. *The Technology Teacher* 68 (4), 20–26.
- Sharapan, H. (2012, January). From STEM to STEAM: How Early Childhood Educators Can Apply Fred Rogers' Approach. *Young Children*, 67(1), 36-40.
- Sochacka, N. W., Guyotte, K., & Walther, J. (2016). Learning together: A collaborative autoethnographic Exploration of STEAM (STEM+ the Arts) Education. *Journal of Engineering Education*, 105(1), 15-42. doi: 10.1002/jee.20112
- Sousa, D., & Pilecki, T. (2018). *From stem to steam*. Corwin, <https://www.doi.org/10.4135/9781544357393>
- Yakman, G. & Lee, H. (2012) Exploring the Exemplary STEAM Education in the U.S. as a Practical Educational Framework for Korea. *Journal of The Korean Association For Science Education*, 32 (6), 1072-1086. <https://doi.org/10.14697/jkase.2012.32.6.1072>

## Measuring the Awareness Level among Rural People towards Various Rural Development Services of Commercial Bank: A Special Reference to Jharkhand

INDRAJEET SINGH\*  
indrajeet010189@gmail.com

PROF. MAHESH KUMAR SINGH†  
Research Guide

**Abstract:** Commercial Banks are the institutions that ordinarily accept deposits from the people and advances loans. Commercial Banks also create in India; such banks alone are called Commercial Banks. Commercial bank play important role in development of economy. It not only helps in mobilising of funds but also help in development of rural area through providing the various rural development scheme. The main objective of this study is to measure the awareness level among rural people towards various rural development services of commercial bank: a special reference to Jharkhand. For accomplishing the objective researcher selected 500 respondents and tested the hypothesis with the help of one sample T test. On the basis of the result this study concluded that awareness among rural people towards various commercial bank offers are positive but not very high. So this study give the suggestion that its duty of bank to advertise of commercial bank offer near to rural people, in common language due which they can benefits from that scheme.

**Key word:** commercial bank, one sample T test, development scheme

**Introduction:** The banking sector has given more contribution to the growth of an economy. The landscape of banking service across the globe have drastically changed through information and communication technology. Now all the banks are investing substantial amounts of money in information technology objectives of improving operational efficiency, competitive position and product innovation. The use of information technology in banking activity has contributed to access the banking

---

\*\* Ph. D. Research Scholar, P. G. Department of Commerce, S. K. M. University (Dumka )

† Head of the Department of Commerce (A. S. College, Deoghar) S. K. M. University, (Dumka)

services more flexible and user friendly to address the rapid and changing needs of banking customers. It helps to change the face of global banking sector.

The banking sector reforms initiated in India in 1969s. The banking sector develop the technology in 1990 for offer banking services. The private and foreign banks have introduced new technologies and offer technology-based services to customer through automatic teller machine, internet banking and Mobile Banking ,debit and credit cards, The innovative banking service was a mirage to Indian customers and the service of private and foreign banks was a delight for them. They received wide patronage form younger generations and emerging entrepreneurs.

And when we talk about development rural economy or rural area important commercial bank take very important place including all the government policy. The commercial banks serve as the king pin of the financial system of the country. They render many valuable services. The important of the rural banking in the economic development of a country cannot be overlooked. As Gandhi said “real India lies in village” and village economy is the backbone of Indian economy. Without the development of the rural economy, the objective of economic planning cannot be achieved. Hens, banks and other financial institutions are considered to be a vital role for the development of the rural economy in India. Bank not provides only loan but also play the role of mediator between government and rural development. Time to time government issue the various scheme such as kisan credit card, Dairy Entrepreneurship Development Scheme, Loan Against Warehouse Receipts, Rural Go downs , Solar Schemes etc with objective to solve the various of problem, development SME in rural area.

### **Review of literature:**

**Haini 2021.** Effect of financial institutions' access and depth on economic growth in low- and lower-middle-income countries. This study used the various descriptive and empirical statistical tools such as mean, percentage, least square regression etc. According to result, researcher concluded that creating inclusive financial structures that priorities quality over quantity in order to faster economic development. **Lal 2019.**

assessed the effect of financial inclusion on rural growth via cooperatives. This study applied the various statistical tools such as For scale purification and data processing, exploratory factor analysis, ANOVA, t-test, and SEM were used. On the basis of the findings this study concluded that Financial inclusion by cooperatives has a direct and important effect on rural growth, according to the study's findings. Furthermore, the findings strongly suggest that financial inclusion is an inclusive growth strategy, but inclusive growth is a subset of a larger set of inclusive development, which means that the gain must reach all, particularly underprivileged sectors of the society. **Shastri (2014)** Main objective of this study to examined the how financial inclusion works and what factors affect its success or failure. In addition, the paper offers perspectives on the essence of exclusion. This study based on the both type of data such as primary data and secondary data, secondary data was collected from various sources such as journals, articles, website etc and from primary data this study used the questionnaire and collected from various peoples who belongs to households in few villages in the country's most financially backward state (Madhya Pradesh) and for data analysis used various statistical tools such as mean, standard deviation. Factor analysis. On the basis of the result this study concluded that that to educate the rural population, banks should build awareness and literacy programmed. This could be accomplished by various forms of mass communication that have entered rural India, such as radio, television networks, and local newspapers. **Kaura and Vilakshan (2014)** findings are indicating that service quality shows the proper impact on the level of customer satisfaction and customer loyalty. **Snehal Kumar (2013)** made an attempt to explore the factors that have affected the customer satisfaction in banks and have been analyzed the impact on the level of customer satisfaction. Banks included the private sector bank and public sector bank they have to consider the some factors such as increase the items of reliability, responsiveness and assurance. **George and Sajeev Abraham (2012)** presented the concepts regarding the study for service quality and performance of the public sector banks in India. It has been informed that due to economic reforms and new regulations in the public sector, banks in the country are facing a cut throat competition from the private sector banks and the other foreign banks. **Shamsher Singh (2011)** examined the adoption and effect of ATM, internet banking and

telebanking services on customer satisfaction and retention by top Indian banks. **Tooraj Sadeghi (2010)** developed the evaluation methods for analyzing the customer satisfaction estimation that was generally focused on the quality of methods and also had provided methods including the variables for some dimensions such as convenience, access, accuracy, security, usefulness, image of bank and design of web site. **Gudep and Elango (2006)** concentrated with the service quality and customer satisfaction amongst the private, foreign and public banks in India. The survey mechanism included various dimensions pertaining to the quality of customer services in terms of convenient working hours, banking personnel, web-based services, error-free value-added services and efficient grievance redressal mechanism.

### **Objective:**

the main objective of the study is to measure the awareness level among rural people towards various rural development services of commercial bank.

**Hypothesis:** there is no significant level of awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank.

### **Methodology**

This study focuses on gauging the measure the awareness level among rural people towards various rural development services of commercial bank. This awareness is necessary to knowing that how much people are aware about various commercial bank services. This study used the both type of data such as secondary and primary data. Secondary data is used to get the relevant data, and a self administrated questionnaire is used to obtain data from rural people. Awareness among people measured based on a five-point scale and selected 500 respondents through random sampling method. And finally used the various statistical tools such as percentage graph chart, one sample t test etc to test the hypothesis and understanding data in more meaningful form.

**Variable of the study:** this study selected the various scheme of commercial bank which main objective development of farmer, people and SME in rural area

Solar Schemes
Rural Go downs ,
Loan Against Warehouse Receipts,
Kisan credit card
Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna
Atal Pension Yojna
Pradhan Mantri Vaya Vandana Yojna
Kisan Vikas Patra
Pradhan Mantri Mudra Yojna
Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojna
Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojna
Sukanya Samriddhi Yojna
Jeevan Suraksha Bandhan Yojna
Pradhan Mantri Awas Yojna
Venture capital fund for scheduled castes under the social sector initiatives
Varistha pension yojna

### Data analysis and findings:

### Demographic profile of the study:

Demographic factors	Group	No of respondents	Percentage
Age	20-29	115	23.0
	30-39	173	34.6
	40-49	147	29.4
	more than 49	65	13.0
	Total	500	100.00
Gender	male	323	64.6
	female	177	35.4
	Total	500	100.00
Marital status	Single	128	25.6
	Married	338	67.6
	Divorced	22	4.4
	Widowed	12	2.4
	Total	500	100.00
Education	10 Pass	75	15.0
	12 Pass	171	34.2
	Graduation	145	29.0
	Master Degree	82	16.4
	Others	27	5.4
	Total	500	100.00
Income	Less Than 10000	81	16.2
	10001 To 15000	164	32.8
	15001 To 20000	113	22.6
	More Than 20000	142	28.4
	Total	500	100.00

**On the Basis of demographic factors, this study revealed the various result which are following**

- Table 1 revealed that maximum number of respondents included in the age group of **30-39** which percentage was 34.6 out of 100 and respective follows the age group 40-49, 20-29, more than 49 and percentage were 29.4%, 23.0%, 13.0% respectively.
- Table 1 revealed that maximum number of respondents included in the male group which percentage was 64.6 out of 100 and in the female group, total number and percentage of female was 177 and 35.40%.
- Table 1 revealed that maximum number of respondents included in the marital status group of **married** which percentage was 67.6 out of 100 and respective follows the marital status group single, Divorced and Widowed and percentage were 25.6%, 4.4%, 2.4% respectively.
- Table 1 revealed that maximum number of respondents included in the education status group of **12<sup>th</sup> pass** which percentage was 34.2 out of 100 and respective follows the marital status group 10 class pass, graduation level, Master Degree and last other qualification and percentage were 15.0%, 29.0%, 16.4%, 15.4% respectively.
- table 1 revealed that maximum number of respondents included in the Income level status group of 10000-15000 which percentage was 32.80 out of 100 and respective follows the income level status group 10 class pass, graduation level, Master Degree and last other qualification and percentage were 15.0%, 29.0%, 16.4%, 15.4% respectively.

**Table 2. Awareness level among rural people towards various development scheme of commercial bank**

Scheme	Mean	Standard deviation
Solar Schemes	3.1340	1.69759
Rural Go downs ,	3.1180	1.33403
Loan Against Warehouse Receipts,	2.9120	1.45812
Kisan credit card	3.7900	1.48526
Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna	3.3620	1.57605
Atal Pension Yojna	3.8940	1.65052
Pradhan Mantri Vaya Vandan Yojna	3.0800	1.55642
Kisan Vikas Patra	3.1240	1.60936
Pradhan Mantri Mudra Yojna	3.3240	1.58747
Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojna	3.7180	1.48015
Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojna	3.5940	1.56142
Suknya Samriddhi Yojna	3.6560	1.33011
Jeevan Suraksha Bandhan Yojna	3.8140	1.29257
Pradhan Mantri Aawas Yojna	3.4060	1.31782
Venture capital fund for scheduled castes under the social sector initiatives	3.1840	1.49888

On the basis of above table, study revealed the various result which are followings

- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement solar scheme is 3.13 and 1.69 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Solar Schemes is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Solar Schemes which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Rural Go downs is 3.11 and 1.34 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Rural Go downs is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Rural Go downs which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Loan Against Warehouse Receipts is 2.91 and 1.45 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Loan Against Warehouse Receipts is very low (less than 3).it means maximum person

are aware from Loan Against Warehouse Receipts which given by commercial bank.

- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Kisan credit card is 3.79 and 1.48 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Kisan credit card is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Kisan credit card which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna is 3.36 and 1.56 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Atal Pension Yojna is 3.89 and 1.65 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Atal Pension Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Atal Pension Yojna which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Pradhan Mantri Vaya Vandan Yojna is 3.08 and 1.55 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Vaya Vandan Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Pradhan Mantri Vaya Vandan Yojna which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Kisan Vikas Patra is 3.12 and 1.60 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Kisan Vikas Patra is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Kisan Vikas Patra which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Pradhan Mantri Mudra Yojna is 3.32 and 1.58 respectively. On the basis above mean value this

- study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Mudra Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Pradhan Mantri Mudra Yojna which given by commercial bank.
- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement P Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojna is 3.71 and 1.48 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojna which given by commercial bank.
  - Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojna is 3.59 and 1.56 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojna s very high (more than 3).it means maximum person are aware from Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojna which given by commercial bank.
  - Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Suknya Samriddhi Yojna is 3.65 and 1.33 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Suknya Samriddhi Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Suknya Samriddhi Yojna which given by commercial bank.
  - Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Jeevan Suraksha Bandhan Yojna is 3.81 and 1.29 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Jeevan Suraksha Bandhan Yojna is very high (more than 3).it means maximum person are aware from Jeevan Suraksha Bandhan Yojna which given by commercial bank.
  - Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Pradhan Mantri Aawas Yojna Yojna is 3.40 and 1.03 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Pradhan Mantri Aawas Yojna Yojna is very high (more than 3).it means maximum

person are aware from Pradhan Mantri Aawas Yojna which given by commercial bank.

- Table 2 revealed that mean, and standard value of statement Venture capital fund for scheduled castes under the social sector initiatives is 3.14 and 1.49 respectively. On the basis above mean value this study concluded that awareness level among peoples towards Venture capital fund for scheduled castes under the social sector initiatives is very high (more than 3).it means maximum person are aware from S Venture capital fund for scheduled castes under the social sector initiatives which given by commercial bank.

**Hypothesis testing: there is no significant level of awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank.**

Under this study researcher used the one sample T test. Under this study researcher used standard mean is 2.90 and compare the actual mean (which calculated on the response of respondents) with standard mean.

**H<sub>01</sub>. there is no significant level of awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank.**

	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank	500	3.2307	.62872	.02969

	Test Value = 2.90					
	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
					Lower	Upper
awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank	14.461	499	.000	.47065	.4124	.5429

On the basis one sample T test revealed that null hypothesis such as (**awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank**) is rejected due to level of significance value (.000,  $p < 0.05$ ). So this study concluded that

**awareness among rural people towards various rural development services of commercial bank** is positive. So it can be concluded that awareness level among people are increasing.

**CONCLUSION:** on the basis of data analysis this study concluded that commercial bank only not help in controlling of money circulation but also play important role in rural economy of Jharkhand. Present time, commercial bank operating or offering various scheme to development of farmer, rural people, Small medium enterprise but it can be possible when people will be aware from that. On the basis above data analysis it finds that awareness among people towards development scheme is positive but another also show that there is need to more advertise because awareness is not very high. So its duty of bank to advertise of commercial bank offer near to near rural people, in common language due which they can benefits from that scheme.

#### **References:**

- Tooraj Sadeghi (2010). Customer satisfaction factors (CSFs) with online banking services in anIslamic country: I.R. Iran. *Journal of Islamic Marketing* 1(3):249-267
- Shamsher Singh (2011). The impact of ATM services on customer satisfaction in Indian banks. *Int. J. Financial Services Management*, Vol. 5, No. 2
- George, K., & Sajeev A. (2012). An investigative study of operational performance and service quality of Indian public sector banks. *International Journal of Business Performance Management*, 13(3/4), 408-425
- Snehal Kumar (2013). Customers' Satisfaction in Indian Banks: Problems and Solutions. *International Journal of Economic Research* 14(9):69-76
- Gudep and Elango (2006) Gap Analysis- A comparative analysis of customer Gap between private and public sector banks in Jammu and Kashmir. *International Journal of Advanced Research* 5(1):890-906
- Haini, H. (2021). Financial access and the finance–growth nexus: evidence from developing economies. *International Journal of Social Economics*. 53(4), 326-328
- Lal, T. (2019). Measuring impact of financial inclusion on rural development through cooperatives. *International Journal of Social Economics*. 18(5), 21-24

## बस्तर के संघर्ष और 'भूमकाल' विद्रोह : 1910

डॉ. केदार प्रसाद मीना\*

kpmeena.du@gmail.com

आदिवासी इतिहास और विद्रोह परम्परा के साधारण पाठकों की आम धारणा है कि विद्रोह करने में केवल झारखंड के ही आदिवासी अग्रणी रहे हैं, पर सच यह है कि झारखंड के आदिवासियों के ही समान बड़े विद्रोहों को अंजाम देने में बस्तर के आदिवासी भी घटकर नहीं रहे हैं। उन्होंने भी लगातार संघर्ष किये हैं और कई छोटे-बड़े विद्रोहों को अंजाम दिया है। हालांकि कई वजहों से इनकी चर्चा अकादमिक जगत में पर्याप्त नहीं हो सकी है। 1818 में मराठा राज्य के भोसलाओं की हार के बाद राजपूताना की तरह बस्तर भी अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया था। इस वर्ष अंग्रेजों की बस्तर राज्य के साथ एक संधि हुई। इस संधि के तहत बस्तर के महाराजा ने अंग्रेजों को 5000 रुपये सालाना मालगुजारी देना स्वीकार किया। इस संधि के साथ ही बस्तर राज्य के बाहरी मामले अंग्रेजों के हाथ में आ गये। इसके बाद अंग्रेजों का हस्तक्षेप लगातार बढ़ता गया और 1853 में वे राज्य के आंतरिक मामलों के भी नियंत्रण में आ गये।<sup>1</sup> 1865 में बस्तर को पूर्ण राज्य की बजाय एक जमींदारी राज्य का दर्जा देकर उसकी ताकत और कम कर दी गयी। लेकिन बस्तर को इस समय प्रत्यक्ष अंग्रेजी शासन के भीतर नहीं लाया गया। बस्तर अमीर राज्य नहीं था। उससे कमाई इतनी नहीं होने वाली थी जितना प्रत्यक्ष शासन लागू करने पर सरकार का खर्च आ जाता। बस्तर को प्रत्यक्ष शासन के अंतर्गत 1891 में तब लाया गया जब नये वन कानूनों के तहत वनों को संरक्षित व सुरक्षित घोषित कर ठेकेदारों को दिया जाना तय हो गया और जब भारी आमदनी का जरिया अंग्रेजी सरकार को नजर आ गया।

देश के अन्य आदिवासियों की तरह बस्तर के आदिवासियों ने भी अंग्रेजी हस्तक्षेप का तत्काल विरोध किया है। 1818 की बस्तर की संधि के तुरंत बाद 1819 में 'परालकोट विद्रोह' हुआ। इसके बाद लगातार 'तारापुर विद्रोह' (1842), 'मारिया बगावत' (1842), 'कोई विद्रोह' (1859), 'मुरिया विद्रोह' (1876) व प्रसिद्ध 'भूमकाल' (1910) आदि बड़े विद्रोह हुए। इनमें कुछ विद्रोह ऐसे हैं जो आदिवासियों ने गैर-आदिवासी राजाओं-जमींदारों के नेतृत्व में किये। इनमें से अंतिम व बड़ा विद्रोह 'भूमकाल' (1910) पूरी तरह आदिवासी नेतृत्व वाला विद्रोह था। यह विद्रोह प्रसिद्ध आदिवासी योद्धा गुंडाधुर के नेतृत्व में हुआ था।

बस्तर के राजा ने 1870 में अंग्रेजों के साथ एक और समझौता किया। उसने स्वीकार किया कि वह अंग्रेजों द्वारा चाही गयी आगामी सभी वन-नीतियों व वन-कानूनों को स्वीकार करेगा। इस संधि के लिए अंग्रेजों

\* एसोसियेट प्रोफेसर, हिंदी, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110017

ने राजा पर भारी दबाव बनाया था क्योंकि रेलवे के निर्माण के लिए उन्हें वनों की अबाध कटाई करने और ठेके पर देकर उनसे भारी कमाई करनी थी। अंग्रेज इस समझौते से पहले ही, 1861 ई. में 'अपर गोदावरी वर्क्स' व 'मद्रास रेलवे' के लिए 30, 000 सिल्लियाँ काटकर राजमुंदरी को निर्यात कर चुके थे<sup>2</sup> 1897 में जगदलपुर के कोकावाड़ा में रेलवे स्लीपर बनाने का काम शुरू हुआ। उसके लिए वनों की भारी कटाई शुरू की गयी। 1906 में बस्तर राज्य ने 'मद्रास टिंबर कंपनी' को एक लाख स्लीपर्स, 'मैसर्स बेकेट एंड कंपनी' को 25, 000 स्लीपर्स के लिए अनुबंध किया। इससे राज्य को भारी मुनाफा होने लगा। इस मुनाफे के लिए कुछ वर्ष बाद बस्तर के आदिवासियों पर भारी कहर ढाये गये। बस्तर राज्य के दीवान पंडा बैजनाथ ने 1908 में एक नया वन-कानून लागू कर दिया।<sup>3</sup> इस कानून के पीछे अंग्रेजों का हाथ था। दीवान राजा की बजाय सीधे अंग्रेजों द्वारा संचालित हो रहा था। इस कानून के तहत अप्रत्यक्ष रूप से, सारे वनों को ठेकेदारों के लिए सुरक्षित घोषित कर दिया गया और आदिवासियों के द्वारा जंगली वस्तुओं के इस्तेमाल पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया। आदिवासी रोजमर्रा की जरूरतों जैसे पत्तलों के लिए पत्तों, मुँह साफ करने के लिए दातौन, जड़ी-बूटियों व फल-फूलों के लिए तरस गये। राज्य ने इस दिशा में बहुत पहले ही सोचना शुरू कर दिया था। 1889 में दीवान ने घोषणा की थी कि लघु वन उत्पाद साफ तौर पर राज्य की संपत्ति हैं और इसलिए जो लोग उन चीजों को उसके वनों से लेते हैं, उन्हें उन पर शुल्क देना चाहिए।<sup>4</sup> उन दिनों इन उत्पादों का व्यापार बंजारे करते थे। जाहिर है आदिवासी शुल्क दे नहीं सकते थे और ऐसे में सीधे-सीधे राज्य को यह अधिकार मिल गया कि वह इन उत्पादों का व्यापार करें। वनों पर इस तरह प्रतिबंध लगाने से आदिवासियों की खेती भी बर्बाद हो गयी। वे झूम खेती करते थे। अब उनके लिए वनों को काटकर या जलाकर खेत तैयार करना भी संभव नहीं रह गया था। इस कानून से आदिवासियों के मन में भारी आक्रोश पैदा हुआ।

विद्रोह की दूसरी तात्कालिक वजह भी पंडा बैजनाथ की हरकत ही बनी। उसने पूरे राज्य को शिक्षित बनाने की ठानी और जबरिया शिक्षा व्यवस्था लागू कर दी। आदिवासियों को इस बाहरी शिक्षा का महत्त्व समझाये बगैर जबरन पढ़ाया जाने लगा। उनके बच्चों को घरों से निकाल कर जबरन गैर-आदिवासी भाषाओं में शिक्षा दी जाने लगी। यह नयी शिक्षा व्यवस्था आदिवासियों की घोटुल शिक्षा पद्धति से पूरी तरह अलग व दर्दभरी थी। आदिवासियों के शिक्षा व ज्ञान के केंद्र घोटुल होते थे, जहाँ युवावस्था तक बालक-बालिका सामाजिक तौर-तरीके सीखते थे।<sup>5</sup> यह नयी शिक्षा पद्धति उस घोटुल शिक्षा पद्धति से पूरी तरह भिन्न थी। इसका विरोध करने पर आदिवासियों पर भारी अत्याचार किया जाता था। उनको पेड़ों से उल्टा लटका दिया जाता और उनकी आँखों में मिर्च डालकर उसकी बुरी तरह पिटाई की जाती। गैर-आदिवासी स्कूल मास्टर आदिवासियों से नफरत करने वाले क्रूर लोग थे। वे आदिवासी महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाते थे और आदिवासियों का आर्थिक शोषण भी करते थे।<sup>6</sup>

आदिवासियों से जबरन बेगार करायी जाती थी। नंदिनी सुंदर के मुताबिक 1876 के बाद बेगार की माँग और ज्यादा बढ़ गयी थी क्योंकि बस्तर में नौकरशाही एवं सरकारी मशीनरी लगातार बढ़ती जा रही थी।

अब किसानों से अधिक रसद सामग्री व श्रम की माँग होने लगी थी।<sup>7</sup> 1898 में रायपुर से जगदलपुर वाली सड़क बनी। इसके निर्माण के दौरान आदिवासियों से पहली बार बड़े स्तर पर कठोर बेगार करायी गयी। इन्हीं दिनों क्षेत्र में भयानक सूखा पड़ा। लोग जीने के लिए अपनी औरतों-बच्चों को बेचने लगे। जंगल के उत्पाद व शिकार करना अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबंधित हो चुका था। पेट भरने को कुछ नहीं रहा। जिंदा रहने के लिए लोग खरगोश का मल तक खाने लगे। महँगाई आसमान को छू गयी थी। 1890 में एक रुपये में 50 किलो धान मिलता था जो 1900 ई. में घटकर आठ किलो रह गया।<sup>8</sup> ऐसे भयानक सूखे के समय में भी आदिवासियों से बेगार करायी गयी। इस बेगार के बदले उन्हें मजदूरी नहीं, दिनभर में सिर्फ महुआ का एक चिपड़ा मिलता था। आदिवासियों की मजबूरी का फायदा उठाकर बाहरी लोग उनकी लड़कियों के साथ खुलेआम अनाचार करते थे। सरकारी कर्मचारी भ्रष्ट थे और अवैध उगाहियों के लिए वे स्थानीय लोगों को परेशान करते रहते थे।<sup>9</sup>

इन समस्याओं से बुरी तरह त्रस्त आ चुके बस्तर के आदिवासियों ने दीवान पंडा बैजनाथ की शिकायत राजा रूद्र प्रताप देव से की, लेकिन वहाँ से उन्हें कोई सहायता न मिलनी थी, न मिली। इसके बाद आदिवासी राजा की सौतेली माँ रानी सुवर्ण कौर व उसके चचेरे भाई व पुराने दीवान लाल कालेंद्र सिंह से मिले। वहाँ से उन्हें कुछ आश्वासन मिले। लाल कालेंद्र सिंह ने आदिवासियों से कहा कि राजा व अंग्रेजों से लड़ना पड़ेगा। थोड़े सोच-विचार के बाद विद्रोह को आवश्यक जानकर इसके लिए योजना बनानी शुरू कर दी गयी। राज दरबार से जुड़े लाल कालेंद्र सिंह, कुँअर बहादुर सिंह, मूरत सिंह बख्शी, बाला प्रसाद नाजिर व वीर सिंह बैदार आदि ने अपनी हवेलियों में ही बैठकें शुरू कर दी। इन बैठकों में आदिवासी (धुरवा व माडिया) नेताओं को भी बुलाया जाने लगा। इनमें सबसे प्रमुख था धुरवा आदिवासी नेता गुंडाधुर। वह उलनार गाँव का रहने वाला था। वीर सिंह बैदार गडिया गाँव का मालदार था। वह माडिया आदिवासियों के बीच अच्छा प्रभाव रखता था। ऐसी ही एक बैठक में उसने घोषणा की, “गुंडाधुर धुरवों को तैयार करें और मैं अपने यहाँ के माडियों को तैयार करता हूँ।”<sup>10</sup> इन बैठकों में गुंडाधुर का साथी डेबरीधुर भी आता था।

लगभग एक महीने तक चले विचार-विमर्श के बाद विद्रोह की शुरुआत हुई। लाल कालेंद्र सिंह के साथ इक्कीस आदिवासी गाँवों के मुखियाओं ने विद्रोह करने की शपथ ली। विद्रोह के प्रतीक-लाल मिर्च, तीर व लाल कालेंद्र सिंह का चाकू व कोट आदिवासी गाँवों में घुमाये जाने लगे। विद्रोह के प्रचार की इस प्रक्रिया के खर्च के लिए हर गाँव से चंदा उगाही की गयी। आदिवासी कुछ ही दिनों में पूरी तरह उबाल पर आ गये।

31 जनवरी, 1910 को दीवान पंडा बैजनाथ को खबर मिली कि आदिवासी गाँवों में हलचल बढ़ गयी है और युद्ध के प्रतीक-मिर्च, तीर, आम की डाली, मिट्टी का ढेला गाँव-गाँव घुमाये जा रहे हैं। 6 फरवरी को जब वह बीजापुर में पोलिटिकल एजेंट डी ब्रेट से मिलकर वापस जगदलपुर आ रहा था, उसे रास्ते में खबर मिली कि पुसपाल, छिंगपाल, कुकानार व करंजी के बाजार लूटे जा रहे हैं। विद्रोहियों ने कुकानार बाजार के एक पठान व्यापारी नरसब खान को पीट-पीटकर मार डाला क्योंकि ये व्यापारी उनका बेजा आर्थिक शोषण करते थे, उनकी लड़कियों को अपनी ‘लौंडियाँ’ बनाकर रखते थे। विद्रोह के दौरान आदिवासियों ने इनको

दौड़ा-दौड़ा कर मारा, “यह बहनचोद तेल खाता है और चरबी बढ़ाता है और हम लोगों को लूटता है- इसे मार डालो।”<sup>11</sup> विद्रोहियों की योजना थी कि बीजापुर से जगदलपुर लौट रहे दीवान को पकड़ लेना है लेकिन दीवान को इसकी भनक लग गयी थी। इसलिए वह वापस बीजापुर लौट गया। विद्रोहियों ने बाजारों, महाजनो के घरों, स्कूलों, थानों व सभी सरकारी इमारतों को जला दिया, कई को लूट लिया। गैर-आदिवासी निवासियों व अफसरों के परिवारवालों को काट दिया गया। 13 फरवरी, 1910 तक इलाके में आदिवासियों की लूटमार-मारकाट अनवरत चलती रही। चारों तरफ के गाँवों से पुलिस, व्यापारी, स्कूल मास्टर, सरकारी वन-विभाग के सभी कर्मचारी और गैर-आदिवासी जगदलपुर शहर की ओर भागने लगे।

7 फरवरी को राजा रूद्र प्रताप देव ने विद्रोह की खबर तार से पॉलिटिकल एजेंट डी ब्रेट को दी। इस खबर के आधार पर सरकार ने विद्रोह को दबाने की कार्यवाही शुरू की और सरकारी कुमुक 12 फरवरी को जगदलपुर पहुँच गया। लेकिन सैन्य कार्यवाही करने की ताकत राजा व सरकार के पास अभी नहीं थी। विद्रोह फैलता व बढ़ता जा रहा था। रायपुर, धमतरी, भोपालपट्टनम, बीजापुर, दंतेवाड़ा व कुटूरु की ओर से जगदलपुर आने वाली डाक झुमका व टोकापाल में जब्त कर ली जाती। राज परिवार के नाखुश लोग भी विद्रोह में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे थे। राजा के सौतेले भाई कुँवर बहादुर सिंह ने जगदलपुर-धमतरी की तार लाइन काट दी। राजा के चाचा मुकुंददेव माछमारा ने कुंजम को लूटने में सक्रियता दिखायी। राजा की सौतेली माँ रानी सुवर्ण कौर ने मोरतपाल के भोंदिया माँझी को बुलाकर दीवान के हाथ काटने का आदेश दिया।<sup>12</sup>

आखिर सैन्य कार्यवाही शुरू की गयी। 9 फरवरी को कैप्टन डूरी व विद्रोहियों के बीच लड़ाई हुई। इसमें लगभग 100 विद्रोही मारे गये। इससे बल पाकर 12 फरवरी को सेना ने अपनी कार्यवाही बढ़ा दी। आदिवासी गाँवों पर कहर ढाती सेना ने छोटा डोंगर में प्रवेश किया। इसका नेतृत्व कैप्टन डूरी ही कर रहे थे। विद्रोही भी डूरी का जमकर सामना करते रहे। 16 फरवरी, 1910 का दिन बस्तर के इतिहास की एक बड़ी घड़ी बना। जगदलपुर के पास इंद्रावती नदी के तट पर रात में हजारों विद्रोही डटे हुए थे। उनका इरादा जगदलपुर को अपने नियंत्रण में करना था। नदी के उस पार विद्रोहियों की भारी संख्या थी और नदी के दूसरी तरफ जगदलपुर शहर की रक्षा में जुटे थे खुद पॉलिटिकल एजेंट डी ब्रेट व उनका साथी कमांडर गेयर। अंग्रेजी फौज तोपों-बंदूकों से लैस थी और आदिवासी अपने पारंपरिक हथियार तीर-धनुष आदि के साथ। इतनी बड़ी संख्या में विद्रोहियों को देखकर एकबारगी कमांडर गेयर सन्न रह गया। उसने चालाकी से काम लिया। उसने आदिवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि वह रैयत के दुःख-दर्द जानने व उनके निवारण के लिए आया है। लेकिन उसकी यह चालाकी धरी की धरी रह गयी। विद्रोहियों ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। आक्रोशित गेयर ने अपने सिपाहियों को गोलियाँ चलाने का हुक्म दे दिया। इंद्रावती नदी के तट पर करीब छह घंटे युद्ध चलता रहा। गोलियों की बाढ़ के आगे तीर-धनुष कमजोर साबित हुए। विद्रोहियों की लाशें बिछ गयीं। हुंगा माँझी, आयुत, एरका, कोला, कोसा, मासा, रेका, विज्जा, भीमा, डोम, लम्का व वोडी आदि विद्रोही नेता इस लड़ाई में मारे गये। सरकारी रिकॉर्ड के मुताबिक इस लड़ाई में केवल पाँच आदिवासी मारे गये।<sup>13</sup> जबकि सच यह है कि इस

लड़ाई में हजारों आदिवासी मारे गये। लाशें नदी में गिरती रहीं जिनकी कोई गिनती नहीं हुई। गुंडाधुर को सिर में चोट आयी और वह रणक्षेत्र छोड़ने को मजबूर हो गया। उसके इस कदम से कुछ विद्रोही नेताओं में आपसी मतभेद पैदा हो गये। सोनू माँझी नामक विद्रोही नेता ने इस हादसे व गुंडाधुर के निकल जाने से दुःखी होकर घोषणा कर दी कि अब वह अंग्रेजों के साथ है। लेकिन इस बदलाव की असल वजह सोनू माँझी का डर प्रतीत होता है। इंद्रावती नदी के तट पर भारी नरसंहार देखकर वह विद्रोही डर गया था। सोनू माँझी अंग्रेजों का सहायक बन गया जबकि क्षेत्र के जमींदार, राजा (जैसे कांकेर का) व ईसाई बने आदिवासी पहले से अंग्रेजों के सहायक बने हुए थे।<sup>14</sup> इस घटना के बाद विद्रोही बिखरने लगे। 16 फरवरी की इस ऐतिहासिक लड़ाई के बाद जगदलपुर पूरी तरह सेना के कब्जे में आ गया। इस लड़ाई के बाद डि ब्रेट व गेयर ने युद्ध की नयी रणनीति बनानी शुरू कर दी। 26 फरवरी को नया मुंडा तालाब पर विद्रोहियों के एक शिविर को सेना ने घेर लिया। बताया जाता है यहाँ 511 लोगों को गिरफ्तार किया गया और कई आदिवासी मारे गये। राजदरबार से जुड़े विद्रोही नेता लाल कालेंद्र सिंह को 25 फरवरी को उसके कई साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार पंजाबी बटालियनों को क्षेत्र में तैनात करने लगी, इनके सहारे आदिवासियों के भीतर बसी विद्रोह की भावना को हमेशा के लिए नष्ट करना था।

बिखरे हुए विद्रोही अब उलनार व नेतानार गाँव में सिमट रहे थे। वहाँ वे लड़ाई की नयी रणनीतियों पर विचार कर फिर से संगठित होना चाह रहे थे। 16 फरवरी व 26 फरवरी की लड़ाई में वे बड़ी तबाही झेल चुके थे। राज दरबार से जुड़े उनके सलाहकार गिरफ्तार हो चुके थे। अब सारी जिम्मेदारी गुंडाधुर पर थी। वह घायल था और उसका साथी (सोनू माँझी) अंग्रेजों का सहायक बन चुका था। कुछ विद्रोही निष्क्रिय हो चुके थे। सेना की तादात बहुत बढ़ चुकी थी। पंजाबी सैनिक आदिवासियों को जानवरों की तरह मार-काट रहे थे। ऐसे में सीधी लड़ाई लड़ना संभव नहीं रह गया था। आदिवासी विद्रोही अब गुरिल्ला युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। लेकिन कुछ डरपोक व स्वार्थी आदिवासी विद्रोहियों की हर खबर अंग्रेजी फौज को दे रहे थे। 27 मार्च, 1910 के दिन विद्रोहियों का पड़ाव उलनार गाँव में था। सोनू माँझी ने इसकी खबर पुलिस को दे दी। रात में गेयर व डी ब्रेट ने उन पर हमला कर दिया। रात के अंधेरे में दो-तीन घंटे तक लगातार युद्ध चलता रहा। सुबह देखा गया कि 21 आदिवासी गोलियों से छलनी हो चुके थे। कई सौ लोग घायल पड़े थे।<sup>15</sup> यह लड़ाई अंतिम साबित हुई। इतिहासकार हीरालाल शुक्ल के अनुसार यह घटना 29 मार्च, 1910 की है और लाला जगदलपुरी के अनुसार 25 मार्च, 1910 की। इन दोनों के अनुसार यह घटना उलनार गाँव में नहीं, बल्कि नेतानार गाँव में घटी। सोनू माँझी की धोखेबाजी के चलते इस बड़ी लड़ाई में विद्रोही बुरी तरह पराजित हुए और बड़ी तादाद में मारे गये। सोनू माँझी का यह धोखा आदिवासी गीतों का हिस्सा बन गया। एक गीत के अनुसार माँझी ने विद्रोहियों को शराब पिलाकर बेहोश कर दिया और फिर ईसाई पादरी को खबर कर दी थी। 3 मई को डेबरीधुर, मांडया माँझी सहित कई विद्रोहियों को जगदलपुर के गोल बाजार में इमली के पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी गयी। गुंडाधुर को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए 10, 000 रुपये का इनाम घोषित रहा, पर वह आज तक नहीं मिला।<sup>16</sup>

‘भूमकाल’ को तो सरकार ने कूररतापूर्वक दबा दिया लेकिन आदिवासियों की शिकायतों पर कोई विचार नहीं किया गया। विद्रोह के पूरी तरह दमन के बाद आदिवासियों का बड़े स्तर पर नरसंहार किया गया। उनके गाँव के गाँव जला दिये गये। पंजाबी पलटन ने लगातार चार साल तक वहाँ के गाँवों पर अत्याचार-अनाचार किया। एक ‘भूमकाली’ गीत के अनुसार—

“नौजवानों ने गोलियाँ खायीं

डोकरा-डोकरा मर गये

गोरा-राज के सिपाही आये

लड़कियों को पकड़ा

बस्तर राज की माटी ने पुत्र-पुत्रियों का रक्तपान किया

गोरे सिपाहियों ने मुर्गे पकाये

हम खा रहे हैं महुआ

सफेद-सफेद साहेब

सफेद-सफेद घोड़ा

आया-आया हमारे गाँव में

हाथ में लिये कोड़ा।”<sup>17</sup>

‘भूमकाल’ को इतनी कूररता से दबाया गया कि आदिवासी लंबे समय तक फिर विद्रोह करने की हिम्मत नहीं कर सके। अगली विद्रोही घटना 47 साल बाद 1966 में राजा प्रवीरचंद्र भंजदेव की हत्या के समय हुई,<sup>18</sup> पर इसका रूप पुराने विद्रोहों से काफी भिन्न था। भूमकाल के बाद दीवान पंडा बैद्यनाथ के खिलाफ सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की। लाल कालेंद्र सिंह की सारी जागीर सरकार ने जब्त कर ली। अंग्रेजों ने यह स्वीकार नहीं किया कि उनकी नीतियों के कारण यह विद्रोह हुआ था। यह सही है कि इस विद्रोह में एक संतानरहित विधवा (रानी सुवर्ण कौर) व एक निराश आदमी (लाल कालेन्द्र सिंह) की महत्वाकांक्षा निहित थी, पर यह उससे भी बड़ा सच है कि आदिवासियों का आर्थिक शोषण व उन पर हो रहा चौतरफा अत्याचार इस विद्रोह की प्रमुख वजह बना था। सरकार ने अपनी नाकामियों को स्वीकार नहीं किया। गुंडाधुर के नेतृत्व में हुआ यह आदिवासी विद्रोह भारत की संपूर्ण आदिवासी विद्रोह परम्परा में सशस्त्र व खूनी विद्रोहों की आखिरी कड़ी साबित हुआ। इसके बाद आदिवासी विद्रोहों का स्वरूप बदलने लगा। अब आदिवासी एकजुट होकर शस्त्र उठाने-भारी खून खराबा करने की बजाय समाज सुधार व धर्म सुधार रूपी आंदोलनों की ओर आकर्षित होने लगे थे। इसके बाद सरकारों से मांग करने, प्रतिवेदन देने और शांतिपूर्ण आंदोलन करने की परम्परा देखने को मिलनी शुरू हुई।

## संदर्भ :

1. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 104
2. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 123
3. शुक्ल, हीरालाल. (1992). हिस्ट्री ऑफ द पीपुल ऑफ बस्तर- ए स्टडी इन ट्राइबल इंसर्जेसी. नई दिल्ली : शारदा पब्लिशिंग हाउस. पृ. 219
4. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 127
5. शुक्ल, हीरालाल. (1992). हिस्ट्री ऑफ द पीपुल ऑफ बस्तर- ए स्टडी इन ट्राइबल इंसर्जेसी. नई दिल्ली : शारदा पब्लिशिंग हाउस. पृ. 221
6. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 146
7. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 145
8. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 143
9. जोशी, मदन मोहन. (1967). बस्तर-इंडियाज स्लीपिंग जाइअन्ट. नयी दिल्ली : पी.पी.एच. पृ. 107
10. जगदलपुरी, लाला. (2007). बस्तर-इतिहास एवं संस्कृति. भोपाल : मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी. पृ. 24
11. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 155
12. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 157
13. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 160
14. स्मिथ, ई. क्लेमेंटी. (1945). द बस्तर रेबेलिअन, 1910. मेन-इ-इंडिया (संपादक- आर.सी. रॉय, डब्ल्यू.जी. आर्चर, वेरियर एलविन); वोल्यूम-25, राँची, छोटानागपुर; पृ. 242 - 246
15. सुंदर, नंदिनी. (2009). गुंडाधुर की तलाश में. नयी दिल्ली : पेंगुइन बुक्स. पृ. 167
16. चंद्रिका. (2012). लेख-गुंडाधुर और उसका 'भूमकाल'. केदार प्रसाद मीणा (संपादक) : क्रांतिकारी आदिवासी-आजादी के लिए आदिवासियों का संघर्ष; साहित्य उपक्रम. पृ. 96
17. मीणा, केदार प्रसाद. (संपा.). (2012). क्रांतिकारी आदिवासी. पृ.138
18. जोशी, मदन मोहन. (1967). बस्तर-इंडियाज स्लीपिंग जाइअन्ट. नयी दिल्ली : पी.पी.एच. पृ. 16

## पर्यावरणीय नैतिकता : वेदों से आजतक

डॉ. किरण कुमारी\*

kirankumari6163@gmail.com

### सारांश :-

पर्यावरणीय नैतिकता अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पृथ्वी का नैसर्गिक संतुलन बना रहेगा तभी इसके निवासी आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत कर पायेंगे। धरती सभी जीवधारियों का निवास स्थल है। सिर्फ मनुष्य का इस पर एकाधिकार नहीं है; यह बात ध्यान देने योग्य है। मानव सभ्यता के विकास क्रम में भी प्रयावरण का जिक्र मिलता है। प्रारम्भ में पर्यावरण के साथ मनुष्य का अतिशय जुड़ाव देखने को मिलता है। इस बात को साक्ष्य के साथ इस शोध पत्र में विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध गुणात्मक है।

**मूल शब्द :** पर्यावरण, नैतिकता, मूल्य, प्रकृति, नीतिशास्त्र, अस्तित्व, समस्या, वैदिक दर्शन।

मनुष्य के जीवन और कल्याण के लिए अनिवार्य “मूल्य” पर्यावरणीय नैतिकता के अन्तर्गत आते हैं। यहाँ “मूल्य” शब्द से अभिप्राय अर्थशास्त्रीय मूल्य (Price) से नहीं है बल्कि जीवन मूल्य से है, जो कि नीतिशास्त्र पर आधारित है। नीति शास्त्र में मानव व्यवहार में अच्छाई का क्या मूल्य है, इस पर विस्तार से विचार किया गया है। उपयोगितावादी विचारक जिससे सबसे अधिक हित हो, कल्याण हो, उसे ही श्रेष्ठ मूल्य मानते हैं। नीतिशास्त्र की कतिपय परिभाषायें इस प्रकार हैं:- रशवर्थ कीडर कहते हैं कि “नीतिशास्त्र की मानक परिभाषाओं में आदर्श मानव चरित्र का विज्ञान या नैतिक कर्तव्य का विज्ञान जैसे वाक्यांश आम तौर पर शामिल रहे हैं।”<sup>1</sup> रिचर्ड विलियम पॉल और लिंडा एल्डर की परिभाषा के अनुसार नीतिशास्त्र एक संकलानाओं और सिद्धांतों का समुच्चय है, जो कौन सा व्यवहार संवेदन-समर्थ जीवों की मदद करता है या उन्हें नुकसान पहुँचाता है। ये निर्धारित करने में हमारा मार्गदर्शन करता है।”<sup>2</sup> कैम्ब्रिज डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी यह कहती है कि नीतिशास्त्र शब्द का उपयोग सामान्यतः विनिमयी रूप से “नैतिकता” के साथ होता है और कभी-कभी किसी विशेष परंपरा, समूह या व्यक्ति के नैतिक सिद्धांतों के अर्थ हेतु इसका अधिक संकीर्ण उपयोग होता है।<sup>3</sup> नीतिशास्त्र शब्द के कई अर्थ होते हैं। इसका सन्दर्भ दार्शनिक नीतिशास्त्र या नैतिक दर्शन से हो सकता है।

\* असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), डोरण्डा महाविद्यालय, राँची

अगर पर्यावरण शब्द पर विचार किया जाये तो पता चलता है कि “पर्यावरण” शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा के इन्वारोरेन (Envororen) शब्द से हुई जिसका अंग्रेजी अनुवाद है एनवायरनमेंट (Envoronment)। हिन्दी भाषा का पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि + आवरण। परि का अर्थ है - चारों ओर और आवरण का अर्थ घेरा अर्थात् हमारे चारों ओर जो भी प्राकृतिक और मानव निर्मित चीजें हैं जिसमें हम सभी तथा अन्य जीवधारी रहते हैं सब मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। प्रसिद्ध भूगोलविद फिटिंग ने पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा है कि पर्यावरण किसी जीवधारी को प्रभावित करनेवाले समस्त कारकों का योग है। पर्यावरण के सभी घटक एक दूसरे से संबंधित होते हैं जिससे एक में संकट पैदा होने से समस्त पारिस्थितिकी प्रभावित होती है एवं इसका प्रभाव सभी जीवधारियों पर पड़ता है। इसलिए सभी धर्म में, ग्रंथों और वेदों में, इसकी सुरक्षा एवं संरक्षण की बात कही गयी है।

वेदों में पर्यावरण के सभी घटकों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, पेड़-पौधे एवं समस्त जीव-जन्तु की सुरक्षा एवं संरक्षण की बात कही गयी। मानव जीव की खुशहाली पर्यावरण पर निर्भर करती है। वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण मानव मन है। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में ईश्वर द्वारा सृष्टि के सृजन का रोचक उल्लेख है। ऋग्वेद में पृथ्वी एवं सूर्य के प्रति सामंजस्य का भाव स्थापित करते हुए इन्हें माता एवं पिता तुल्य दिखाया गया है। अथर्ववेद में सूर्य रश्मियों से चिकित्सा करने की विधि भारतीय मनीषियों द्वारा खोजी गयी थी। वेदों में वायु को शुद्ध करने के लिए एवं अनेक व्याधियाँ दूर करने का उपाय यज्ञ और हवन बताया गया है।

पर्यावरण का संबंध न सिर्फ वर्तमान पीढ़ी से है बल्कि भावी पीढ़ी के साथ-साथ पृथ्वी पर रहने वाले अन्य प्राणियों से भी है। वस्तुतः पर्यावरणीय नैतिकता इस बात से सम्बन्धित है कि हम संसाधनों का उपयोग और वितरण किस प्रकार करते हैं। सनातन धर्म में पर्यावरणीय घटक वनस्पति को देवतुल्य मानकर उसकी पूजा-अर्चना की गई एवं इसके महत्त्व को वैज्ञानिक भी प्रमाणित कर चुके हैं। इस धर्म में पशु-पक्षियों को देवताओं के वाहन के रूप में निरूपित किया गया है। इसके अलावे पर्यावरण का एक और महत्त्वपूर्ण घटक जल है जिसका नाम अमृत है। यह विभिन्न रोगों की दवा है एवं रोगनाशक है आवश्यक यह है कि वनस्पतियों का संरक्षण और संवर्धन किया जाय, पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ संरक्षित हों और जल स्रोतों जैसे कुएँ, तालाब, झरने, नदी, नालों की रक्षा की जाय, उसमें दूषित जल डालने पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।

पर्यावरणीय समस्या मानवकृत है। यदि मानव अपना अस्तित्व कायम रखना चाहता है तो पुनः वेद की ओर लौटना पड़ेगा, अन्यथा सम्पूर्ण प्राणी जगत का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। इसीलिए प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा बताए गए मार्गों का अनुसरण करना चाहिए।

विचारणीय प्रश्न है कि क्या हम संसाधनों का ऐसा उपयोग कर सकते हैं जिससे कि किसीको तो केवल जीवित रहने के लिए ही संसाधन उपलब्ध हों, जबकि किसीको इतने संसाधन मिले जिससे दूसरा व्यक्ति संसाधनों का अत्यधिक उपयोग करे। संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण के अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय पहलू

भी होते हैं, जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए। संसाधनों का समान वितरण नगरीय, ग्रामीण एवं निर्जनवासी समुदायों के निर्वहनीय विकास का आधार है।

पर्यावरण अर्थात वातावरण अर्थात परिवेश जिसमें हम रहते हैं, उसके प्रति हमारा क्या नैतिक आचरण होना चाहिए? सीधी सी बात है कि हमें अपने परिवेश को स्वच्छ रखना चाहिए। साथ ही हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रकृति मुक्त हस्त दान देती है, यहाँ तक तो ठीक है पर उसका अंधाधुन्ध दोहन अच्छी बात नहीं। कवि ने कहा है-

“वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै, नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने , साधुन धरा शरीर।”

वृक्ष तो साक्षात् परोपकार की प्रतिमूर्ति हैं। हम उनपर पत्थर फेंकते हैं और वे हमारे ऊपर मीठे फल। यहाँ तक तो ठीक है पर डालियों को क्षति पहुँचाना, या आर्थिक लाभ के लिए उन्हें कटवा देना या बेच डालना अनुचित है। पेड़-पौधे प्राणी जगत का आधार हैं ये प्रकृति के उपकारी मुक्त अवदान हैं।

मनुष्य को प्राणवायु प्रदान करते हैं पक्षियों को अपनी शाखाओं पर सुरक्षित आश्रय देते हैं तथा पशुओं को पत्तियाँ और शीतल छाया मुहैया कराते हैं। उनका सब कुछ प्राणी जगत को अर्पित है। पर मनुष्य क्या कर रहा है?

चूँकि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या वर्तमान विश्व के लिए एक चुनौती है जिसका समाधान आवश्यक है, अन्यथा सम्पूर्ण प्राणी जगत का अस्तित्व संकट में पड़ जायेगा। सामान्यतः वेद पर आधारित सभी दर्शन वैदिक दर्शन कहलाते हैं। षड्दर्शन वेद की मूल मान्यताओं पर आधारित होने के कारण वैदिक दर्शन कहलाते हैं जिसमें प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय चिंतन हुआ है तथा इसके मूल घटकों की सुरक्षा एवं संरक्षण पर जोड़ दिया गया है। ऋग्वेद भारतीय दर्शन का उत्स है और उपनिषद् वेद का अनिवार्य अंग।

इसमें अनेक ऋचाएँ ऐसी हैं जो बताती हैं कि पर्यावरण मानव-जीवन के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है। ऋग्वेद की ऋचाओं में गंगा, यमुना एवं सरस्वती जैसी नदियों की महिमा का गायन किया गया है तथा इन्हें जीवन का श्रोत बताया गया है। यजुर्वेद में जीव-जन्तु और वनस्पति की शांति के लिए प्रार्थना की गयी है।

वेद आधारित दार्शनिक सम्प्रदाय सांख्य योग, मीमांसा और वेदान्त महत्त्वपूर्ण वैदिक दर्शन हैं जिसमें मानव एवं पर्यावरण के सम्बन्ध का महत्त्व बताया गया है। मीमांसा में नैवेद्य का संप्रत्यय, यज्ञ का संप्रत्यय, पूजा विधान आदि के द्वारा पर्यावरण के संरक्षण और प्रतिरक्षण पर जोर दिया गया है। सांख्य दर्शन द्वैतवादी है और यह प्रकृति और पुरुष नामक दो सत्ताओं में विश्वास करता है। सृष्टि के सभी पदार्थ पेड़-पौधे और सभी

जीव-जन्तु प्रकृति की ही संरचना हैं। निर्माण एवं विध्वंस का कारण भी प्रकृति के तीन गुण ही हैं। जब तमोगुण की वृद्धि बहुत अधिक हो जाती है तो रजोगुण सब कुछ को अपने ही पदों में परिभाषित करने का प्रयास करता है। योग-दर्शन के अनुसार जितनी हानि पर्यावरण को मनुष्य की चित्तवृत्ति से होती है उतनी किसी अन्य प्राणी से नहीं। मनुष्य की चित्तवृत्ति ही प्रदूषित हो चुकी है।

आज का मानव तन, मन और आत्मा से दोषपूर्ण हो चुका है। उसमें लोभ, क्रोध, स्वार्थ, क्लेश आदि इतना भर गया है कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं। इसलिए आवश्यकता है कि मानव का शरीर स्वस्थ और मन पवित्र हो तभी उसमें चित्त निरोध संभव है और चित्त निरोध के उपरांत मानव मन में प्राणी मात्र के लिए वैर भाव शेष नहीं रह सकता है। ऐसे व्यक्ति का भोजन, कर्म और चिन्तन सभी संतुलित हो जाते हैं। यही संतुलन पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त वेदान्त दर्शन के सृष्टिवाद में पर्यावरणीय घटकों का महत्त्व रेखांकित है।

आधुनिक वैज्ञानिक, औद्योगिक प्रगति तथा बढ़ती जनसंख्या ने पर्यावरण को इस प्रकार प्रदूषित करना आरंभ कर दिया है कि मानव के अस्तित्व को ही भय उत्पन्न हो गया है। नदियों के तट पर स्थित नगरों के गन्दगियों, कारखानों के अवशिष्ट पदार्थ जलवायु और भूमि को इस भाँति प्रदूषित कर रहे हैं कि न तो जल पीने योग्य बचा है और न वायु श्वास लेने योग्य है। ऐसी स्थिति में भूमि भी निवास के योग्य कहाँ? अतः पर्यावरण का अध्ययन और प्रदूषण को रोकने के उपाय करना हमारा कर्तव्य है।

वर्ष 1985 में स्टेटस ऑफ इंडियाज एनवायरनमेंट (Status of India's Enviroment) नामक शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इसमें बताया गया कि अमीर लोग पर्यावरण का अत्यधिक दोहन कर रहे हैं, जबकि इसका खामियाजा गरीब और वंचित वर्ग विशेषकर आदिवासी एवं महिलायें भुगत रहे हैं। इसका कारण यह है कि इनकी आजीविका ही पर्यावरण पर निर्भर है। अक्सर जब गरीब ग्रामीण समुदाय जलावन के लिए जंगलों से लकड़ी एकत्रित करते हैं तो कहा जाता है कि वनों का विनाश किया जा रहा है, किन्तु जब अमीर वर्ग भारी मात्रा में इमारती लकड़ी का प्रयोग करता है तो उसके विषय में कुछ नहीं कहा जाता है।

पर्यावरणीय नैतिकता से संबंधित कई मुद्दे हैं, जिनमें उत्तर और दक्षिण के देशों के बीच समानता और विषमता का मुद्दा लैंगिक समानता की जरूरत का मुद्दा, भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों के संरक्षण का मुद्दा तथा पशुओं के अधिकार आदि मुद्दे शामिल किये जाते हैं। उत्तर और दक्षिण के बीच समानता एवं विषमता से तात्पर्य संसाधनों के असमान स्वामित्व एवं वितरण से है। एक ओर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के धनी राष्ट्र हैं तो दूसरी ओर दक्षिण के विकासशील देश हैं। उत्तर के धनी औद्योगिक देश भारी मात्रा में पर्यावरणीय संसाधनों की खपत करते हैं, जबकि दक्षिण के विकासशील देश अधिक जनसंख्या के बावजूद पर्यावरणीय संसाधनों का सीमित उपयोग ही करते हैं। इस अन्यायपूर्ण आर्थिक व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है, साथ ही न्यायपूर्ण प्रबन्ध की जरूरत। इसके लिए अमीर देशों में रहनेवाले लोगों में एक नई सोच का पैदा होना जरूरी है।

इसीप्रकार नगर ग्राम समानता का मुद्दा भी अहम है। ज्ञातव्य है कि नगरों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ग्रामीण समुदायों की साझी संपत्ति का अधिकाधिक उपयोग होता आया है। इस समस्या के हल के लिए नगरवासी अमीरों को समझना होगा कि उनके संसाधन ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं तथा उन संसाधनों की वाजिब कीमत उन्हें ही चुकानी होगी।

लैंगिक समानता का मुद्दा भी पर्यावरणीय नैतिकता से सम्बन्धित है। पूरे भारत में स्त्रियाँ, पुरुषों से अधिक कार्य करती हैं इससे यह प्रश्न उठता है कि एक ग्राम समुदाय के पर्यावरणीय साधनों पर किसका अधिकार होना चाहिए। इसके समाधान के लिए महिलाओं को अधिक अधिकार देने होंगे क्योंकि महिलायें प्राकृतिक संसाधनों के महत्त्व को पुरुषों से अधिक गहराई से समझती हैं। चिपको आंदोलन पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए किया गया एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन था। आंदोलन के अन्तर्गत 26 मार्च 1974 ई0 को उत्तर प्रदेश जो अब उत्तराखण्ड है, के वनों में शांत और अहिंसक विरोध प्रदर्शन किया गया। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय के लिए हो रही वनों की कटाई को रोकना था और इसे रोकने के लिए महिलायें वृक्षों से चिपक कर खड़ी हो गयी थीं। इसीप्रकार भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों के संरक्षण का मुद्दा है। इसके लिए वर्तमान पीढ़ी को यह समझना होगा कि वे पर्यावरणीय संसाधनों का इसप्रकार से प्रयोग करें ताकि भावी पीढ़ी को भी संसाधन उपलब्ध हो सकें। पर्यावरणीय नैतिकता से सम्बन्धित मुद्दों में पशुओं के अधिकार का मुद्दा भी महत्त्वपूर्ण है। कहने का तात्पर्य यह है कि क्या मनुष्य जैसी केवल एक प्रजाति ही पृथ्वी के उन सभी संसाधनों का अकेले उपयोग या शोषण कर सकती है जिनपर मनुष्य के अतिरिक्त पौधों एवं पशुओं की अरबों प्रजातियों का भी हक है। इसके लिए मनुष्य को समझना होगा कि प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग में उसे एकाधिकार नहीं प्राप्त है। उनके साथ अन्य प्राणियों एवं वनस्पतियों को भी प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग का अधिकार प्राप्त है। इसके समाधान में गाँधीजी का दर्शन महत्त्वपूर्ण हो सकता है जिसके तहत मनुष्य अन्य प्राणियों का स्वामी नहीं है बल्कि वह निम्नतर पशुजगत का न्यासी मात्र है। मानव द्वारा की जानेवाली सभी क्रियाओं का प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है और इससे पर्यावरण में परिवर्तन होता है। नैसर्गिक प्रक्रियायें प्रदूषण को कम करती हैं और पर्यावरण को शुद्ध परन्तु मानव की अनेक क्रियाओं के फलस्वरूप पर्यावरण अनेक बार इतना प्रदूषित हो जाता है कि फिर वह नैसर्गिक क्रियाओं के द्वारा भी पूरी तरह शुद्ध नहीं हो पाता। इसलिए वैदिक उप्यों के अनुसरण की आज नितान्त आवश्यकता है। यदि उनका अनुसरण किया जाय तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ही उत्पन्न नहीं होगी।

आधुनिक दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की राय में सभी जीव के प्रति प्रेम ही नैतिक जीवन की सबसे व्यापक और सार्वभौम कसौटी है। जबतक जीवों के प्रति हमारे मन में अगाध प्रेम नहीं उत्पन्न नहीं हो जाता, तबतक सत्य और असत्य मात्र अमूर्त प्रत्यय ही रहते हैं। उनके विचार में अन्य नैतिक सदगुण, जैसे क्षमा, त्याग, सहिष्णुता, शान्तिप्रियता, धैर्य आदि सभी जीवों के प्रति अगाध प्रेम के ही विभिन्न रूप हैं।

इस संदर्भ में विवेकानन्द के ये विचार अत्यन्त उपयुक्त हैं - प्रत्येक मनुष्य एवं प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं-

1. भलाई की शक्ति में विश्वास
2. ईर्ष्या और सन्देह का अभाव
3. जो भला बनने और भलाई करने के लिए यत्नवान् है उसकी सहायता करना<sup>5</sup> यदि मनुष्य अन्य जीवों और वनस्पतियों का संरक्षण और संवर्द्धन करे तो इसी में मनुष्य जाति की भी भलाई सन्निहित है।

### संदर्भ :-

1. वर्मा, अशोक कुमार. (1957). प्रारम्भिक आचार शास्त्र. Retrieved from <https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.346302/page/n19/mode/2up>
2. झा, प्रो. अनिरुद्ध. & मिश्र, रामनाथ. (1964). आचार शास्त्र के मूल सिद्धांत. दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास.
3. Paul Nervall, An Introduction to Ethics
4. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974). भारतीय नीति शास्त्र. पटना : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृ. 194
5. विवेकानन्द. (2014). पत्रावली, प्रथम भाग. नागपुर : रामकृष्ण मठ. पृ. 108

## सन्नाटे के द्वन्द्व से विद्रोह की यात्रा का नायक है शेखर

विजय कुमार यादव\*

vijay275201@gmail.com

### सारांश

सब कुछ पा लेना ही नहीं बल्कि कुछ न पाना भी जीवन का उत्स है। 'शेखर एक जीवनी' में शेखर जीवन के हर एक उत्स से गुजरना चाहता है और इसमें कुछ हद तक सफल भी होता है, लेकिन मनुष्य की जो फितरत है, जो चाह है, जो इच्छा है वह कभी खत्म नहीं होती, बल्कि बढ़ती ही जाती है। किशोरवय शेखर प्रेम में सबकुछ पा लेने का प्रबल चाह रखता है जो उसके जीवन में संभव नहीं हो पाता। 'शेखर एक जीवनी' सिर्फ किशोर से युवा होते शेखर की कथा नहीं है, बल्कि यह यात्रा उन तमाम युवाओं की कथा है जिनके जीवन में गहन सन्नाटे का द्वन्द्व है और उससे बाहर निकलने का एक रागात्मक अभिव्यक्ति है। आधुनिक जीवन मूल्य और व्यक्ति की स्वतंत्रता इसके केंद्र में है।

**मुख्य शब्द :** शेखर, विद्रोह, संघर्ष, प्रेम, द्वन्द्व

### प्रस्तावना

'शेखर एक जीवनी' में अज्ञेय ने एक ऐसे युवक के जीवन-संघर्ष को व्यक्त किया जो अपनी बौद्धिकता का प्रयोग केवल दिखाने के लिए नहीं करता, बल्कि प्रेम और बौद्धिकता के ऊहापोह में जीवन के सार्थकता पर भी सवाल करता है। यही वह सवाल है जो नायक शेखर को विद्रोही परंपरा में खड़ा करता है। जो अब तक चला आ रहा है, जैसी पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था है उसे न मानना और उससे अलग विचार रखना विद्रोह की श्रेणी में आता है। शेखर इसी विचारवाही का युवक है। सामन्ती पितृसत्तात्मक समाज में 'प्रेम' हमेशा से विद्रोह का निकष रहा है। प्रेमियों के लिए यह समाज किसी न किसी रूप में व्यवधान डालता रहा है। प्रेम जीवन का वह राग है जिसके तार जब एक बार झंकृत होते जाते हैं तो उसमें एक विशेष प्रकार का नाद उत्पन्न होता है। इस नाद की स्वर लहरियाँ बाधक बनने वाली हर चीज से टकराती है; वह चाहे परंपरा ही क्यों न हो? शेखर रूढ़िबद्ध परंपराओं से टकराता है और विद्रोह का वाहक बनता है।

### अंतर्वस्तु विश्लेषण

समाज और परंपरा मनुष्य को भय और अहंकार के सिवाय कुछ और नहीं देता, जबकि प्रेम इन सबसे मुक्त करता है। प्रेम की चाह व्यक्ति की पहली प्राथमिकता है। तभी तो शेखर कहता है- "प्रेम ने मनुष्य को मनुष्य

\* पी-एच. डी. शोधार्थी, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

बनाया! भय ने उसे समाज का रूप दिया! अहंकार ने उसे राष्ट्र में संगठित कर दिया!”<sup>1</sup> भय ने ही ईश्वर को बनाया है। इस भय के बरक्स नास्तिकता का तर्कशक्ति है, लेकिन यह तक शक्ति हमारे समाज में बहुत समय तक नहीं टिकती है। नास्तिक शेखर सरस्वती का पूजक बनता है।

युवा होते शेखर के जीवन में शारदा का प्रवेश होता है, लेकिन दोनों का संबंध बहुत कम दिनों तक रहता है, क्योंकि शेखर को मैट्रिक की परीक्षा देने लाहौर जाना पड़ता है। वापस आने के बाद उसकी मुलाकात शारदा से नहीं हो पाती। प्रेम का जो अंकुरण शुरू हुआ था वह बहुत जल्द ही मुरझा गया। शारदा से मिलने की तीव्र चाह उसके घर पर लटकते ताले से अधूरी रह जाती है। इस अधूरी रह गई चाह को वह स्वीकार्य करता है। अपनी पुस्तक में रोमा रोला के कथन को पढ़ता है- “सत्य उनके लिए है जिनमें उसे सह लेने की शक्ति है, उस दिन उसने अनुभव किया कि वह संपूर्ण है, मुक्त है और पुरुष है।”<sup>2</sup> शेखर अब अपने को स्वतंत्र और पुरुष के रूप में पाता है। शेखर जो अभी तक बालक था और अपने पिता के छत्रछाया में था अपने को अलग व्यक्तित्व में पाता है और जो अब तक शांतचित था वह उत्सुकता और आक्रामकता से भर गया। उसकी यह आक्रामकता जीवन को नए रूप में समझने की भी है। शेखर जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे ही चीजों को देखने की उसकी दृष्टि भी बादल रही है। वह अपने आस-पास घटित हर चीज पर सवाल करता है। ये ऐसे सवाल हैं जो उसके मन में बचपन से हैं, लेकिन डांटे जाने की डर से या कहें कि समाज की डर से दबा दिया जाता है। शेखर परंपरा रंजक और संस्कारी आदर्श युवक नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास से लबरेज युवा है जिसे सवालों से टकराना अच्छा लगता है? ये सवाल जीवन जगत के सवाल हैं जिसे परंपरा और संस्कारों से आबद्ध कर दिया गया है।

शेखर का विद्रोह न तो परंपरा से विद्रोह है और न ही भौतिक द्वन्द्वात्मक विद्रोह। इस विद्रोह में मानवीय गरिमा और व्यक्ति का अस्तित्व केंद्र में है। युवा शेखर के व्यक्तित्व में सर्वाधिक बदलाव मद्रास में पढ़ाई के दौरान आता है। यह बदलाव विद्रोह के रूप में अधिक निरूपित हुआ है। सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक जीवन के केंद्र में मनुष्य के अस्तित्व को लेकर विद्रोह की चिंगारी शेखर के किशोर मन में पहले से ही था। तभी वह कहता है- “स्त्री-स्त्री है और पुरुष-पुरुष।” शेखर का यह भाव फ्रायड से अधिक प्रभावित जान पड़ता है जिसके केंद्र में स्त्री और पुरुष की दो भिन्न संरचना मनुष्य के मूल संरचना से जोड़ता है जहाँ माँ, बहन, पिता और भाई पहले मनुष्य हैं। रिश्ता एक वाह्य आवरण है जो मूल में व्यक्तित्व में बाधक है। शेखर इन रिश्तों से विद्रोह करते हुए अपनी बहन से प्रेम करता है। ‘शेखर एक जीवनी’ में इसका निरूपण अज्ञेय इस तरह करते हैं- “आज ही मालाएँ पहनाते समय और गायन सुनते समय उसके मानसिक क्षितिज के ऊपर आयी है एक अत्यन्त कोमल स्पर्श से बहिन के कपोल को छूकर बालक कहता है कितनी अच्छी लगती हो

तुमा।”<sup>3</sup> (शेखर एक जीवनी, पृष्ठ पृष्ठ संख्या 5 भाग 1) भारतीय संस्कृति में इस तरह के रिश्ते मान्य नहीं हैं, लेकिन अज्ञेय इसकी वकालत व्यक्ति के ‘प्रेम’के रूप में करते हैं।

फ्रायड के यहाँ जो शिशु प्रेम और सेक्स की भावना है उसे अज्ञेय ‘शेखर एक जीवनी’ में कलात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से जो वर्जित है उसके प्रति शेखर के मनोभावों में एक विशेष प्रकार का विद्रोह है। शेखर के विद्रोही मन के बारे में बच्चन सिंह लिखते हैं- “विद्रोह उसकी अस्मिता का कवच है। वह विद्रोह करता है- सामाजिक प्रणालियों के विरुद्ध, विवाह के विरुद्ध, प्रेम के विरुद्ध, माँ-बाप के विरुद्ध, हर चीज के विरुद्ध।”<sup>4</sup> सरस्वती सगी बहन है तब पर भी शेखर उसके प्रति आकृष्ट होता है और सरस्वती के विवाह के उपरांत यह आकर्षण समाप्त हो जाता है। इसके उपरांत शेखर के जीवन में शारदा का प्रवेश होता है। अज्ञेय ने शारदा और शेखर के प्रेम को रूमानी प्रेम के रूप में चित्रित किया है। शेखर के द्वारा प्रेम की बात को शारदा अस्वीकार्य कर देती है। स्थायित्व की तरफ बढ़ता संबंध अचानक से असफल हो जाता है।

शेखर के जीवन एवं विचारों में स्थिरता न होकर एक तरह के सन्नाटे का द्वन्द्व है। ऐसा लगता है कि वह इस द्वन्द्व से वह बाहर निकलना भी नहीं चाहता। कई बार उसके ऊपर आधुनिक विचारों का प्रभाव अधिक दिखता है तो कुछ एक बार वह परंपरावादी भी बन जाता है। इस संदर्भ में मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा का कथन अधिक समचीन प्रतीत होता है। वे लिखते हैं- “शेखर पश्चिम की पूँजीवादी संस्कृति से प्रभावित हिन्दुस्तान के उन निकम्मे लोगों में से है, जो एक तरफ विद्रोह की लम्बी-चौड़ी बातें करके अपनी हीन भावना सन्तुष्ट करते हैं, दूसरी तरफ आत्मपीड़ा के अभिनय से अपने अस्तित्व को सार्थक कर नारी से करुणा की भीख माँगते हैं। उसका विद्रोह और आत्मपीड़ा-दोनों ही उनके निकम्मे व्यक्तित्व के दो पहलू हैं।”<sup>5</sup> शेखर की चाह पश्चिम की है, लेकिन सोच मध्यकालीन भारत की। वह अनेक लड़कियों से प्रेम करना चाहता है, लेकिन ऐसा कर नहीं पाता। पौरुषहीनता की ग्रन्थि उसे और भी उच्च उच्चशृंगल बना देती है। यह उच्चशृंगलता बाद में आकर मौसैरी बहन शशि में स्थिर होता है। यह स्थिरता भी बहुत स्थायित्व के भाव के साथ संचालित नहीं हो पाता, क्योंकि शशि का व्यवहार एक विवाहित स्त्री की तरह दुःख-सुख का है और शेखर का मन इन सब से परे है। शेखर और शशि का संबंध एक त्रासद मोड़ तक पहुँच जाती है जहाँ से दोनों को अलग होना पड़ता है। शशि का अनचाहा विवाह उसके घर वाले कहीं और कर देते हैं जहाँ उसे न प्यार मिलता है न अपनत्व मिलता है और न ही पत्नीत्व का सुख ही मिल पाता है। बाद के दिनों में परित्यक्त शशि शेखर के साथ रहने लगती है जहाँ प्रेम का स्पर्श उसके जीवन को फिर से स्पंदित कर देता है। संघर्ष के थपेड़ों को झेलते हुए शशि का शरीर क्षीण हो गया है, लेकिन आत्मा दीप्तमान है। वहीं शेखर शशि को पाने के बाद भी आत्मा और शरीर के द्वन्द्व से मुक्त नहीं हो पाता और एक उलझन में रहता है।

शेखर एक जीवनी में जहाँ व्यक्तिवाद और कलावाद केंद्र में है तो वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रप्रेम, क्रांतिकारिकता एवं सामाजिक विद्रोह के भी सूत्र मौजूद है। अज्ञेय उपन्यास के भूमिका में लिखते हैं- “क्रांतिकारी अंततोगत्वा एक प्रकार के नियतवादी होते हैं। लेकिन यह नियतवाद उन्हें अक्षम और निकम्मा बनाने वाला कोरा भाग्यवादी नहीं होता, वह उन्हें निर्भय होकर अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता है। वह गीता के कर्म योग से एक सीढ़ी आगे होता है- यदि यों कहा जाय कि क्रांतिकारी का नियतवाद अटल नियति की स्वीकृति न होकर, जीवन की विज्ञान संगत कार्य-कारण परंपरा पर गहरा(यद्यपि अस्पष्ट) विश्वास होता है तो शायद सच्चाई के निकट होगा।”<sup>6</sup> शेखर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। उसे केवल उन्मुक्त प्रेमी या व्यक्तिवादी मात्र नहीं ठहराया जा सकता। जीवन एवं समाज के प्रति वह अपना दायित्व समझता है। अज्ञेय अपने इस नायक के बारे में लिखते हैं- “शेखर निस्संदेह व्यक्ति का अभिन्नतम निजी दस्तावेज है। (I record of personal suffering) है, यद्यपि साथ ही वह उस व्यक्ति के युग-संघर्ष का प्रतिविम्ब भी है- मेरा आग्रह है कि उसमें मेरा समाज और युग बोलता है कि वह मेरे और शेखर के युग का प्रतीक है।”<sup>7</sup> अज्ञेय स्वयं स्वीकार्य करते कि उनका नायक महज व्यक्तिवादी नहीं है, बल्कि वह युग प्रवर्तक भी है। यह युग प्रवर्तक की जो भावना है वह उस समय के युग बोध से आया है। गुलाम भारत और द्वितीय विश्वयुद्ध के आलोक में कोई नायक अपने समाज से कटकर नहीं रह सकता। शेखर भी उससे अछूता नहीं है।

शेखर हिन्दी साहित्य का पहला ऐसा नायक जो ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है। किशोर उम्र में ही उसके मन में ईश्वर के प्रति सवाल उठने लगता है और अंततः वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। “मैं ईश्वर को नहीं मानता। मैं प्रार्थना भी नहीं मानता! भवानी झूठ है। ईश्वर झूठ है। ईश्वर नहीं है।”<sup>8</sup> एक ऐसे परिवार में जहाँ माँ, भाई, बहन एवं पिता ईश्वर को मानते हैं वहाँ शेखर पिता की बातों को न मानते हुए उनकी अवहेलना करता है और पिता द्वारा पिटे जाने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कम से कम उसके लिए ईश्वर नहीं है। शेखर का ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करना नास्तिक होने के साथ ही अपने पिता की सत्ता को भी न मानना है। शेखर पारिवारिक एवं धार्मिक यथास्थिति से बाहर निकलकर विद्रोह की शुरुआत करता है। शेखर मनुष्य के अस्तित्व को लेकर दिग्भ्रमित नहीं है। उसका अटूट विश्वास है कि मनुष्य अपने बुद्धि से निरंतर आगे बढ़ता है उसमें ठहराव नहीं है बल्कि गतिशीलता है। किशोरावस्था में विद्रोह की जो चिंगारी शेखर के अंदर पनपी उसके उपचार के लिए जो भी प्रयत्न किया गया उसका उलटा असर हुआ। “वह मनचला, उद्धत, सबसे अलग रहने वाला अड़ियल टट्टू हो गया। और उसे सीधे करने के जो उपचार किए गए उनका भी उलटा असर हुआ।”<sup>9</sup> शेखर का यह अड़ियलपन तार्किकता के साथ है। वह किसी भी चीज पर यूँ ही विश्वास नहीं करता, बल्कि उसे तार्किकता के कसौटी पर कसता है और तब जाकर उसे स्वीकार करता है।

शेखर के विद्रोह परंपरा को समाज और व्यक्ति के बीच रखकर परखने का प्रयास किया जाता है। विद्रोह को समाजिकता से जोड़ कर देखा जाता है जबकि सबसे पहले विद्रोह व्यक्तिगत स्तर पर ही होता है। समाज के साथ न जुड़ने का यह अर्थ नहीं होता कि वह समाज विरोधी है। शेखर ने अकेला रहना चुना है। उसने साहित्य को चुना है जहाँ वह अकेला रहकर भी समाज से जुड़ता है। साहित्य से बड़ा समाज से जुड़ने का दूसरा कोई सरोकार नहीं है। इसलिए शेखर व्यक्तिगत होते हुए भी समाज से अलग नहीं है। संस्कृति और सभ्यता के सवाल पर वह अपने पिता से सवाल करता है- “सभ्यता का क्या यही अर्थ होना चाहिए कि जीवन की ललकार अनसुनी कर दिया जाय, बढ़कर उससे टक्कर लेने की शक्ति को कुचल दिया जाय?”<sup>10</sup> शेखर ने जो सवाल खड़ा किया है वह उसके सामाजिक प्रतिबद्धता को कहीं से भी कमतर नहीं दिखाता। वह किसी भी तरह के बंधन और दासता को स्वीकार नहीं करता और न ही इसे बढ़ावा देता है। शेखर मानवीय गुणों दया, माया एवं संवेदना से युक्त है जो कि उसके समाजिकता को दर्शाता है। जेल में उसका सामाजिक परिवेश बाबा मदन सिंह से विशेष रूप से जुड़ता है, क्योंकि वे भी दासता, परवशता के संदर्भ में शेखर के मत से सहमत हैं। वे कहते हैं- “दासता- एकदम घृणित परवशता- और किसे कहते हैं? अप्रिय के ज्ञान को नहीं, असत्य में विश्वास को भी नहीं, दासता कहते हैं उस अवस्था को जिसमें हम सत्य और असत्य को जानने में असमर्थ हो जाते हैं, दासता वह बंधन, वह मनाही जो हमारा ज्ञान माँगने का अधिकार छीन लेती है।”<sup>11</sup> मदन सिंह जिस वस्तिकता से शेखर को साक्षात्कार कराते हैं उसे शेखर अपने किशोरावस्था में ही परख लिया है।

अज्ञेय ने ‘शेखर एक जीवनी’ के माध्यम से आधुनिक जीवन बोध को व्यक्त किया। समाज में अभी तक की जो परिपाटी थी उससे इतर व्यक्ति की समाजिकता और उसके मनोभावों को केंद्र में रखा है। इस संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी का अभिमत है- “परंपरागत साहित्य में जो राष्ट्रीय दृष्टि अपने ऐतिहासिक विकास की परिपूर्णता के बाद विकृति को प्राप्त हो रही थी, उससे ऊपर उठकर ‘शेखर’ के कथाकार ने मानव संघर्ष तथा नियति की एक ऐसी कहानी प्रस्तुत की है, जिसका नायक संपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय परिवेश के साथ एक आधुनिक व्यक्ति है।”<sup>12</sup> शेखर ने आधुनिकता को परंपरा और संस्कार के रूप में नहीं पाया है, बल्कि इससे बगावत करके पाया है। शेखर समाज के बने बनाए मूल्यों पर नहीं चलता। उसके लिए मानवीय मूल्य सर्वोपरि है सामाजिक मूल्य नहीं।

### निष्कर्ष:

शेखर विद्रोह का आख्यान रचता है। समाज की सड़ी-गली आचार संहिता, पारंपरिक संरचना और ऐसे सामाजिक मूल्य जिसके केंद्र में व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है से विद्रोह है। वैयक्तिक स्वतंत्रता से ही व्यक्ति का विकास संभव है। ऐसे में सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ बाधक बनती हैं। शेखर इन्हीं बाधाओं को दूर करता है यानीकि इससे विद्रोह करता है। शेखर असामाजिक नहीं है बल्कि समाज

की नकली मर्यादाओं को नहीं मानता। इसके बदले वह व्यक्ति के स्वतंत्रता को अधिक महत्व देता है। आजीवन व्यक्ति के स्वतंत्रता के लिए भटकने वाला शेखर किशोरावस्था में ही पारिवारिक मर्यादाओं को मनाने से इनकार कर देता है। शारीरिक यंत्रणाओं के बावजूद भी वह इसे स्वीकार्य नहीं करता। परिवार से विद्रोह शुरू करने वाला बालक अपने युवा अवस्था में समाज से भी विद्रोह करता है। यही नहीं वह विदेशी शासन व्यवस्था के खिलाफ भी विद्रोह करता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की शेखर की नियति ही विद्रोह का है। हर वह व्यक्ति जो आधुनिक विचारों को आत्मसात किया हो वह किसी भी तरह के जड़ परंपरा के साथ नहीं रह सकता। जीवन को आबाध रूप से गतिशील बनाएगा न कि गतिहीन। शेखर व्यक्ति के स्वतंत्रता में बाधक हर एक चीज से विद्रोह करता है।

---

**संदर्भ :-**

- <sup>1</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 67
- <sup>2</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 179
- <sup>3</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 5
- <sup>4</sup> सिंह, ज्ञानेन्द्र प्रताप. (2018 मार्च 5). शेखर: एक जीवनी' में शेखर के विद्रोह का स्वरूप  
<http://gyanendra07.blogspot.com/2018/03/kskj-d-thouhesa-kskj-ds-fonzksg-dk-loi.html>
- <sup>5</sup> शर्मा, रामविलास. (2014). *प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ. 148
- <sup>6</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 8
- <sup>7</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 10
- <sup>8</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 90
- <sup>9</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 93
- <sup>10</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग1 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 142
- <sup>11</sup> अज्ञेय, हीरानंद सच्चिदानंद. (2016) *शेखर एक जीवनी*. भाग 2 दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 95
- <sup>12</sup> प्रभाकर, ओम. *शेखर एक जीवनी: मूल्य और उपलब्धि*. (सं. डॉ. रामकमल राय. शेखर एक जीवनी: विविध आयाम). दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ. 95

## मेत्ता : मानसिक शांति का योग

डॉ. पंकज कुमार सिंह\*  
pankajvillage@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार राय†  
chinmay69@gmail.com

### सारांश

‘मेत्ता’ जिसे हिंदी में मैत्रीभावना के नाम से जाना जाता है इसे गौतम बुद्ध के द्वारा विकसित किया गया। यह ऐसा मानसिक योग है जिससे मन शांत व स्वस्थ होता है। इसमें मन से ही अपने साथ पूरे विश्व के भले व सुखी होने की कामना की जाती है, इससे न केवल मैत्री करने वाले का लाभ होता है, अपितु जिसके प्रति मैत्री करते हैं उसका भी लाभ होता देखा गया है। यह व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर करता है न कि अलौकिक शक्ति पर। अतः यह वैज्ञानिक है। इसको करने के लिए न तो कोई धर्म, जाति, देश व काल आड़े आते हैं और ना ही कोई आर्थिक क्षति होती है। यह अद्वैत के दर्शन पर आधारित है। दुर्भाग्य से मेत्ता जन सामान्य से ओझल है; वैदिक समय से मेत्ता का जिक्र मिलता है किंतु वह समय के साथ जन सामान्य से ओझल होता गया, जिसे गौतम बुद्ध ने इस ज्ञान को न केवल जा अपितु इसे पल्लवित व पुष्पित भी किया। आज फिर यह जन सामान्य से ओझल होते दिख रहा है। बौद्धों में तो इसका ज्ञान है और धर्मों के तुलना में अधिक किंतु वहाँ भी व्यापक रूप नहीं है। यह शोधपत्र मेत्ता के दर्शनिक व व्यवहारिक पक्ष को उजागर करता है।

**मुख्य शब्द :-** मेत्ता, मैत्रीभावना, योग, मानसिक शांति, स्वास्थ्य, प्रेम।

### प्रस्तावना

मेत्ता गौतम बुद्ध द्वारा विकसित किया व बताया गया मनः आध्यात्मिक अभ्यास है, जिसमें मन में ही सबकी भलाई की कामना की जाती है। यह एक प्रकार का ध्यान है जिसे मैत्री-ध्यान कह सकते हैं (मिश्र, 2009)। जैसा कि मेत्ता सुत्त में गौतम बुद्ध कहते हैं :-

“अत्तूपमाय सब्बेसं सत्तानं सुखकामतां। पस्सित्वा कमतो मेत्तं सब्बसत्तेसु भावये ॥1॥

सुखी भवेय्यं निदुक्खो अहं निच्चं अहं विया हिता च मे सुखी होतु मज्झता चथ वेरिनो ॥2॥

अर्थात् अपने समान सब प्राणियों को सुख चाहने वाला देखकर क्रमशः सब प्राणियों पर मैत्री-भावना करें॥1॥ मैं सदा अपने समान सुखी और दुःख रहित होऊँ। मेरे हितैषी, मध्यस्थ और बैरी-जन भी सुखी हों ॥2॥ (धर्मरक्षित, 1968/2001, पृ 102)।” आष्टांगिक मार्ग इसका व्यापक रूप है। इससे स्पष्ट होता है कि मैत्री भावना में गौतम बुद्ध ने जीव मात्र के लिए कल्याण की कामना करने की बात कही है।

वैसे मेत्ता की अवधारणा गौतम बुद्ध से पहले भी विविध कालों में रहा। जैसे कि वैदिक प्रार्थना में कहा गया है, “मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वभूतानि समीक्षे” अर्थात् मैं सभी लोगों को मित्र की आँखों से देखूँ। पौराणिक

\*पोस्ट डॉक्टरल फेलो, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली & म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

† शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

काल में प्रसिद्ध श्लोक है, “सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तुनिरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥” बाइबिल का आदेश है, “...And thou shall love thy neighbor as thyself” (तू अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा)। इस्लाम में भी हमसाया को यानी साथ रहने वालों को प्यार करने का निर्देश किया गया है।

अब प्रश्न उठता है कि इतना सब गौतम बुद्ध से पहले था तो मेत्ता के लिए गौतम बुद्ध का क्या योगदान है? इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि उन्होंने मेत्ता की विधा को न केवल संहिताबद्ध कर योगसाधना के रूप प्रचलित एवं प्रतिष्ठित किया अपितु मेत्ता के परिणामस्वरूप बाह्य व्यवहार में जो परिवर्तन आते हैं या आने चाहिए उन्हें भी व्याख्यायित किया (मिश्र, 2009; संघरक्षित, 2012)। गौरतलब है कि गौतम बुद्ध योगी थे और ध्यानयोग में माहिर थे। उनका उपदेश स्वयं पर अनुभव किया हुआ होता था। लोगों से कहते थे कि जो बातें तुम्हें अच्छी न लगे वह कदापि इसलिए न मान लो कि मैं कहता हूँ। यही कारण है कि बौद्ध धर्म सुखी होने की खातिर किसी ईश्वरीय ताकत पर निर्भर होने की बजाय, स्वयं के परिवर्तन पर जोर देता है। मेत्ता भी कोई ईश्वरीय ताकत पर निर्भर नहीं है बल्कि स्वयं के मेत्ता के अभ्यास पर निर्भर है। यह वैज्ञानिक है और इंद्रियानुभूति पर आधारित है। मेत्ता का अभ्यास करने वाला कोई भी व्यक्ति कुछ ही दिनों में लाभ का अनुभूति करने लगता है।

### उद्देश्य

1. मेत्ता दर्शन का विश्लेषण करना।
2. मेत्ता के लाभों का विश्लेषण करना।
3. मेत्ता को जनसामान्य की समझ लायक बनाना।

### प्रविधि

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध प्राविधि का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के लिए विषयाधारित प्रकाशित ग्रंथों का उपयोग किया गया है। इसमें प्रो. कमालाकर मिश्र के मैत्री मंत्र को लिया गया है। यह शोध का व्याख्यात्मक प्रकार है। इसमें तथ्यों की विवेचना करते हुए उनके वैचारिक विश्लेषण को व्याख्यायित किया गया है।

### विश्लेषण

यदि कोई जानना चाहे की मेत्ता किस हद तक किया जाए यानी इसका आदर्श शिखर क्या हो? करणीय मेत्तसुत्त में गौतम बुद्ध कहते हैं, “माता यथा नियं पुत्तं, आयुसा एक पुत्त मनुरक्खे। एवम्पि सब्भूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं ॥ अर्थात् माता जिस प्रकार जान की परवाह न कर अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है, उसी प्रकार प्राणिमात्र के प्रति असीम प्रेम-भाव बढ़ावे (धर्मरक्षित, 1968/2001, पृ. 26)।” यहाँ एक तो

माता का पुत्र प्रेम से मेत्ता (प्रेम) के शिखर का भान होता है तो दूसरे इकलौते पुत्र से इसकी ममत्व का भान होता है। गौतम बुद्ध ने इस गाथा से सबके लिए सहज और अनुभवजन्य उदाहरण लोगों के समक्ष रखा है।

बुद्ध धर्मावलंबियों के अलावा वर्तमान में 'शिवचर्चा' का प्रचलन बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में बहुत तेजी से फैल रहा है। उसका दार्शनिक सिद्धांत गौतम बुद्ध के मेत्ता से मिलता है। उसमें लोग अपने सगे-संबंधियों के लिए दया मांगते हैं, भजन कीर्तन करते हैं। यह वर्तमान समय में मेत्ता का परिवर्तित रूप कहलाएगा।

### मेत्ता-दर्शन

मेत्ता का दर्शन अद्वैत, अभेद, सर्वात्मवाद, एकात्मवाद आदि नामों से जाना जा सकता है। यानी सभी वस्तुतः एक हैं, सबमें तात्त्विक एकता है। यह दर्शन कल्पना पर या कोरे विश्वास पर आधारित न होकर अनुभव पर आधारित है। हम अज्ञानवश दूसरों को पराया समझ बैठते हैं, जब एकत्व का ज्ञान हो जाता है तो मेत्ता स्वतः प्रस्फुटित हो जाती है। स्वामी रामतीर्थ कहते थे, "करूँ मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो मेरा"। जब तथाकथित दुश्मन भी मेरा ही है तो उसका हित भी मेरा हित है।

हम अक्सर फिल्मों में देखते हैं कि दो भाई अपने बचपन में ही बिछुड़ जाते हैं। बड़े होने पर दोनों के अलग-अलग रास्ते हो जाते हैं। उन दोनों के कार्य एक दूसरे के विरुद्ध होता है, जिससे एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। एक दूसरे को मारने दौड़ते हैं। ज्योंहि उनको यह पता हो जाता है कि हम दोनों बिछुड़े भाई हैं त्योंहि उनकी दुश्मनी मित्रता में बदल जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि दुश्मनी का आधार एक दूसरे को पराया मानना है। मेत्ता का दर्शन इस परायापन को पहले खत्म करता है।

### कमलाकर मिश्र द्वारा मेत्ता मंत्र का संक्षिप्त रूप

कमलाकर मिश्र जी का कहना है कि किसी के प्रति मेत्ता करने के लिए निम्नलिखित तीन मंत्र<sup>‡</sup> का सहारा ले सकते हैं :-

1. आप हमारे ही हो।
2. आप भला हो जाओ।
3. आप सुखी होओ।

<sup>‡</sup> यह तीनों मंत्र गौतम बुद्ध ने नहीं बनाया है बल्कि कमलाकर गुरु जी या उनके गुरु प्रो. लालजी राम शुक्ल या उनके गुरु प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान एवं साधक भिक्षु जगदीश काश्यप जी ने बनाया होगा। यह भावना जन सामान्य के लिए उपयोगी है। जब प्रो. कमलाकर गुरु जी से बोला कि इसके अलावा दूसरा भी मैत्री के कामना कर सकते हैं, तो उन्होंने बोला जरूर। इसमें कोई बंधन नहीं है। हर किसी की भावनाएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

मंत्र इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि मन में बार-बार इसकी भावना करते हैं (मननात् मंत्रः)। जैसे कि मंत्र जाप करते हैं। चूँकि इसे मन में ही मनन किया जाता है इसलिए यह एक प्रकार का ध्यान है। जिसे मैत्री-ध्यान कहा जाता है। यह बात स्पष्ट कर देना जरूरी है कि मन में मैत्री करने का अर्थ यह कतई नहीं है कि इसका व्यवहार में मैत्री प्रकट नहीं होगा। गौतलब है कि किसी भी कार्य का प्रारंभ मन में ही होता है। इसलिए बाह्य व्यवहार में बदलाव का आधार मानसिक बदलाव से है अन्यथा वह दिखावा हो सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है, “मन ही देवता मन ही ईश्वर मन से बड़ा न कोए, मन उज्जीयारा जब-जब फैले जग उज्जीयारा होए, मेरा मन दर्पण कहलाए...” इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मेत्ता का अभ्यास अंतर्मन को बदलने का अभ्यास है।

मेत्ता से हम न केवल अपने समाज अपितु पूरे विश्व की सेवा करते हैं। भले यह सेवा मानसिक आधार पर हो। वैसे व्यवहारिक धरातल पर देखा जाए तो हमारी क्षमताएँ सीमित है इस सीमित क्षमता से हम न तो सबका शारीरिक और ना ही आर्थिक रूप से सेवा कर सकते हैं। किंतु मानसिक भाव की सेवा तो असीम है, इसके द्वारा हम सबकी सेवा निर्बाध रूप से कर सकते हैं। अब प्रश्न उठता है कि इससे दूसरों को क्या लाभ? इसका उत्तर है कि दूसरे को इससे बहुत लाभ होगा। सामान्य तौर पर देखें तो लोक में यह धारणा है कि “आपकी दुआ से अच्छा हो रहा है” या “उसकी बददुआ लग गई; सब खराब हो गया।” यह लोक धारणा कोरा नहीं बल्कि लोगों ने ऐसा महसूस किया है। जिस तरह से टेलीफोन, रेडियो व टेलीविजन की तरंगें दिखाई नहीं देती है किंतु टेलिफोन, रेडियो व टेलीविजन के सेट द्वारा उसे ग्रहण कर ली जाती है। उसी तरह मेत्ता की तरंगें मस्तिष्क से निकलकर वातावरण में प्रवाहित होती है और लक्षित व्यक्ति के मस्तिष्क को छूती है और प्रभावित करती हैं। प्रो. कमलाकर मिश्र (2009) ने मैत्री-मंत्र की व्याख्या कि है जिसे जान लेना आवश्यक है, ताकि उनके मंत्र का निहितार्थ समझ में आ सके। वह निम्नलिखित है :-

**1. आप हमारे ही हो :-** “जब हम कह रहे हैं कि ‘तुम हमारे ही हो’ तो इसका प्रयोग स्वामित्व (possessive) अर्थ में नहीं लिया जा रहा है वरन एकत्व या तादात्म्य या अपनत्व (unity, affinity) के अर्थ में किया जा रहा है। ...मैं अपने आप को अपना समझता हूँ वैसे ही उस व्यक्ति को भी अपना समझता हूँ (पृ.61)।”

वस्तुतः सभी अपने ही हैं हम अज्ञानवश या भूलवश अपनापन का दायरा बना बैठे हैं। योगी, मनीषियों, संतों व पैगंबरों ने इस सत्य को जाना है कि विश्व में कोई पराया नहीं है, यहाँ तक की पेड़, पहाड़, नदी आदि से भी आत्मीय संबंध है।

**2. आप भले हो जाओ:-** “मैत्रीमंत्र का दूसरा अंश है कि हम मैत्री दिए जानेवाले व्यक्ति के प्रति उसके भला होने की भावना या कामना करते हैं। वह भला हो ऐसी भावना करने की आवश्यकता यह है ... कि बिना भला

हुए कोई सुखी नहीं हो सकता। बिना भला हुए कोई अनैतिक तरीके से धन-दौलत प्राप्त कर ले सकता है (वह भी स्थायी रूप से नहीं), किंतु बिना भला हुए उसे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती (मिश्र, 2009, पृ.63)।”

जब हम दूसरे को भला होने की भावना या कामना करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से हम खुद भला बनते हैं। मनोवैज्ञानिक सत्य है कि हम दूसरों के प्रति जैसा भाव बार-बार करते हैं वैसा हम अपने अनजाने ही स्वयं बन जाते हैं (मिश्र, 2009)। जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

**3.आप सुखी होओ :-**सुखी होने की कामना या भावना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकता है, किंतु एक बात का ध्यान देना निहायत जरूरी है कि वह सुख जीवन नाशक न हो। उदाहरण के तौर पर शराबी को यदि शराब मिले तो वह प्रसन्न हो जाएगा किंतु वह प्रसन्नता उसके लिए जीवन नाशक है। अतः हम अपने मैत्री भावना में उसे शराब छोड़ने की कामना करेंगे। दूसरी बात यह कि कोई रोगी, दुखी व्यक्ति के लिए विशेष मेत्ता करते हैं तो उसके रोग मुक्त व दुःख के कारणों के खत्म होने की कामना करते हैं।

### जीवन में मेत्ता की उपयोगिता

प्रकृति ने हमारे दैनिक जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण चीजों को निःशुल्क दिया है। जैसे हमारा खुद का शरीर, पृथ्वी, हवा, पानी, सूर्य प्रकाश आदि। इसी में प्रेम (प्रेम और मेत्ता पर्यायवाची शब्द है) एक ऐसा वस्तु है जो प्रकृति ने निःशुल्क दिया है। चूंकि यह सहज ही सर्वसुलभ है इसलिए इसकी अहमियत तब तक नहीं होती जब तक इसमें गड़बड़ी नहीं पैदा होती। उदाहरणस्वरूप हममेंसे बहुत लोग शरीर के प्रति तब तक सजग नहीं होते जब तक कि उनका स्वास्थ्य खराब न हो जाए। ऐसे ही प्रेम (मेत्ता) के संदर्भ में है। किसी ने कहा है, “Loving is the art of living.” अर्थात् प्रेम करना जीने की कला है। यह कला (प्रेम करने की) देकर प्रकृति ने हमारे ऊपर बहुत बड़ी कृपा की है। किसी ने कहा है, “प्रेम जीवन का पोषक अमृत-रस है।” “यदि हम मन से पूर्ण स्वस्थ एवं सुखी होना चाहते हैं और अपने जीवन में तृप्ति एवं परिपूर्णता चाहते हैं तो हमारे लिए मेत्ता से बढ़कर कोई दूसरी विधा नहीं है (मिश्र, 2009, पृ. 67)।” मैत्री भावना के अभ्यास से अपना और दूसरों का अनगिनत लाभ है। देखने में लगता है कि हम तो दूसरों के लाभ के लिए मेत्ता करते हैं तो मुझे कैसे लाभ होगा। यह समझने के लिए गेंद का उदाहरण लेते हैं। जब गेंद दिवाल पर फेकते हैं तो गेंद दिवाल से टकरा कर पुनः हमारे पास ही आता है। क्रिया तो फेंकने की हुई किंतु प्रतिक्रिया पाने की हुई। मेत्ता के महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित है:-

**1 आनंद व तृप्ति :-** हमारे सारे कर्मों का मुख्य उद्देश्य आनंद व तृप्ति की प्राप्ति ही है। मेत्ता मन से किया गया शुभ भावना है जो हीन भावना, नीच भावना, संकीर्ण भावना से ऊपर उठाती है। ज्यों ही इन भवनाओं से ऊपर उठते हैं हमारे हार्मोस संतुलित रूप में सक्रिय हो जाते हैं। हृदय में प्रेम का संचार होने लगता है, जिससे मन तृप्त हो जाता है। सकारात्मक सोच का विकास होने लगता है, जिससे सर्वत्र आनंद ही आनंद अनुभूति होती है।

**2 मानसिक स्वास्थ्य :-** “बौद्ध परंपरा में साधक को पालिभाषा में “पीतिभक्खा” (प्रीतिभक्षक या प्रेमभोजक) कहा जाता है। साधक की चेतना प्रेम का भोजन कर पुष्ट होती है और उसकी साधना पूर्ण होती है (मिश्र, 2009, पृ. 72)। खाने का अर्थ प्रेम पाना नहीं अपितु प्रेम देने से है। यह बात सत्य है कि प्रेम पाने पर प्रेम देने की प्रतिक्रिया और नफरत पाने पर नफरत देने की प्रतिक्रिया होती है, किंतु नफरत में भी प्रेम देने की प्रतिक्रिया जगे तो वह मानसिक स्वास्थ्य को पुष्ट करता है।

जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन, दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए अध्ययन जरूरी होता है उसी तरह मन को स्वस्थ रखने के लिए प्रेम (मेत्ता) की जरूरत होता है। वैसे मानसिक स्वास्थ्य ही शारीरिक स्वास्थ्य का मूलाधार है। कहा भी जाता है, मन के हारे हार है मन के जीते जीत।”

**3 दूसरों के मानसिक दुष्प्रभाव से बचाव :-** “व्यक्ति के मन में रहने और उठने वाले विचार केवल उसके मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं रहते वरन अदृश्य रूप में बाहर आकर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सबकी विचार-तरंगें मिलकर एक अदृश्य मानसिक वातावरण तैयार करती है और उसमें आने वाले व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। यदि हम बुरे विचारों से निर्मित मानसिक वातावरण के संपर्क में अथवा बुरे विचार वाले व्यक्ति के संपर्क में आते हैं तो उसका दुष्प्रभाव पड़कर हममें भी बुराई आ जाती है। अतः अपने मन को दूसरों के विचारों के दुष्प्रभाव से बचाना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब बुरे विचार वाले व्यक्ति के मन से हमारा मन अधिक तगड़ा हो। तब उसका प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़ता वरन हमारा ही प्रभाव उस पर पड़ता है (मिश्र, 2009, पृ.73)।”

उदाहरण के तौर पर जब हम किसी तलाब से एक बाल्टी पानी निकालते हैं तो आस पास की पानी उसे आकर भर देता है, किंतु जब एक बाल्टी पानी डालते हैं तो वह चारों तरफ फैल जाता है। ठीक यही स्थिति मानसिक वातावरण की होती है। हम बहुतायत नजर लगाने की बात सुनते हैं उसका भी कारण यही है कि हम अपने मानसिक वातावरण में नजर लगाने वाले के मानसिक वातावरण से कमजोर पड़ जाता है और हम पर उसका नजर लग जाता है। इससे बचने के लिए मेत्ता का अभ्यास करना होगा।

**4 वासनाओं का उदात्तीकरण :-** “मेत्ता के अभ्यास का एक बहुत बड़ा लाभ है वासनाओं का उदात्तीकरण जो अन्य किसी प्रयास से प्राप्त नहीं होता। वासनाओं में सबसे सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण वासना कामवासना है। यह महत्त्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि यह शक्तिरूप है और यदि इसका सही उपयोग और सही अभियोजन नहीं हुआ तो यह व्यक्ति को मानसिक रोगी, पागल और अपराधी बना देगी; और यदि इसका सही रूपांतरण एवं उदात्तीकरण हो जाय तो यह जीवन में चमत्कार कर देगी, फिर व्यक्ति इससे जीवन के बड़े बड़े काम एवं सुंदर काम कर सकेगा (मिश्र, 2009, पृ. 77)।

उदाहण के तौर पर नाली के किनारे उगे सेव के पेड़ नाली के पानी मिट्टी से बढ़ता फलता है किंतु उसके फल में नाली के गंदे पानी व मिट्टी की बू तक नहीं आती। यह नाली के पानी व मिट्टी का रूपांतरण और उदात्तीकरण सेव के रूप में मिलता है जो सर्वग्राही है। अतः जिसके प्रति कामवासना जगे उसके प्रति मेत्ता का अभ्यास करें तो वह काम वासना प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। इससे उस महिला को लाभ हो या न हो किंतु स्वयं का लाभ जरूर होता है।

**5 सुख :-** कर भला तो होए भला या जैसा बोयेंगे वैसा पायेंगे की कहावत लोक में प्रचलित है यह बहुतों की आँखों देखी बात है। इसके अपवाद से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता, किंतु सत्य यही है कि बुरा का फल बुरा ही होता है, न हो तो करके देखों, नहीं तो उसके घर को देखों। हमारा एक शरीर विचारों का बना होता है जो स्थूल शरीर को प्रभावित करता है। यदि हम अच्छा विचार (मेत्ता) करते हैं तो अच्छा कर्म भी करते हैं और अच्छा फल भी मिलता है, जिससे हम सुख और समृद्धि को प्राप्त करते हैं। इस बात को एक फिल्म सेक्रेट ऑफ सक्सेज में वैज्ञानिक रूप से दिखाया गया है।

**आसन व विधि :** मेत्ता किसी भी बैठने के आसन व मुद्रा में किया जा सकता है। जैसे सुखासन, पद्मासन, वज्रासन, सिद्धासन या भैरव मुद्रा, भैरवी मुद्रा, ज्ञान मुद्रा, प्राण मुद्रा आदि। जैसे इसमें आसन व मुद्रा की कोई प्रतिबद्धता नहीं है जिसमें जिसको आराम मिले वही उसके लिए सही है। आँखें जरूर बंद कर लें, इससे अभ्यास सुगम हो जाता है, चूँकि आँख बंदकर करने में ध्यान स्थिर होने में सहायता मिलती है।

इसके बाद मन में छोटे व निकट के वृत्त से बड़े वृत्त के तरफ मेत्ता की शुरुआत करेंगे। इसमें तीन मैत्रीमंत्र<sup>§</sup> का अपने मन में भावना करेंगे। आप मेरे हो, आप भला होओ और आप सुखी होओ। निकट के वृत्त से बड़े वृत्त क्रमशः निम्न होंगे –

1. स्वयं\*\* < माता-पिता, पत्नी < मित्र < पड़ोसी < गाँव < जिला < राज्य < देश < विदेश < जीव जगत

जैसा कि गौतम बुद्ध मेत्ताभावना में कहते हैं, “अहं अवेरो होमि, अब्यापज्झो होमि, अनीघो होमि, सुखी अत्तानं परिहरामि। अहं विय मय्हं आचरियुपज्झाया मातापितरो हितसत्ता मज्झत्तिकसत्ता वेरीसत्ता अवेरा होन्तु, अब्यापज्झा होन्तु, अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु दुक्खा मुञ्चन्तु यथालद्धसम्पत्तितो मा विगच्छन्तु

<sup>§</sup> ये तीन मैत्रीमंत्र प्रो. कमालाकर मिश्र व उनके गुरु द्वारा सुविधा की दृष्टि से बनाया गया है। इसके अलावा कोई भी शुभ भावना किया जा सकता है। जैसा कि नीचे मेत्ताभावना से स्पष्ट है।

\*\* स्वयं पर मैत्री करने का सीधा सा अर्थ है कि वास्तविक वस्तुनिष्ठ परिस्थितियों को ध्यान में रखकर स्वयं की आलोचना करने की आदत छोड़ देना। आपने जो कुछ भी किया हो, चाहे, आपके हिस्से में बड़ी से बड़ी असफलताएँ क्यों न आई हो, लेकिन स्वयं के प्रति और दूसरे जीवित प्राणियों के प्रति मैत्री बढ़ाने की आपकी सदिच्छा आपके लिए आनंद का स्रोत बन जाएगी। स्वयं के प्रति मैत्री की अनुभूति सच्चे संतोष की कुंजी है (संघरक्षित, 2012)।

कम्मस्सका (धर्मरक्षित, 1968/2001, पृ. 96-98)।” अर्थात् मैं बैर रहित हूँ, व्यापाद रहित हूँ, उपद्रव रहित हूँ, सुखपूर्वक अपना परिहरण कर रहा हूँ। मेरे समान मेरे आचार्य उपाध्याय, माता, पिता, हितैषी प्राणी, मध्यस्थ रहने वाले प्राणी, बैर रहित हों, व्यापाद रहित हों, उपद्रव रहित हों, सुखपूर्वक अपना परिहरण करें। दुःख से छुटकारा पायें। प्राप्त सम्पत्ति से वंचित ना हों, कर्म-स्वक हों।

2. सारे प्राणिमात्र (जलचर, थलचर, नभचर) के प्रति यही भाव कीजिए। आप सभी भी हमारे हो, आप भला होओ, आप सुखी होओ। जैसा कि उरगेन संघरक्षित (2012) अपने पुस्तक ‘लिविंग विद् काइंडनेस’ में कहते हैं, “बिल्कुल सूर्य की तरह, जो प्रकाश और ऊर्जा देते समय चुनाव नहीं करता, जब भी आप मैत्री महसूस करते हैं, तब कौन योग्य है, कौन अयोग्य इसका कौन प्राप्तकर्ता है, कौन नहीं, ऐसा चुनाव न करें (पृ. 87)।”

3. वनस्पतियों एवं पूरे पर्यावरण के प्रति भी इस रूप में शुभकामना करें – “पेड़-पौधे स्वस्थ एवं हरे भरे रहें, धरती शस्य-श्यामला हो, नदियों में निर्मल जल प्रवाहित हो, वायु शुद्ध हो, सारा पर्यावरण एवं वातावरण शुद्ध एवं सुखद हो, आदि (मिश्र, 2009, पृ. 113)।”

4. हम वृत्त का और विस्तार करेंगे, “वह है अशरीरी या सूक्ष्म शरीरधारी जीवों का वृत्त। शरीर छोड़े हुए लोग (अर्थात् मरे हुए लोग), पितर लोग, सूक्ष्म एवं वायवीय अस्तित्व वाली आत्माएं, भूत-प्रेत आदि अशरीरी जीव इस वृत्त में आते हैं। इन सबका भी मन ही में ध्यान कर इन सबको भी पूर्वत रीति से मेत्ता दें। .... यदि कोई दुष्ट<sup>††</sup>, पापी या शत्रु<sup>‡‡</sup> मर गया है तो उसके सुधरने, पश्चात्ताप करने एवं आगे का जीवन-मार्ग सही करने की मेत्ता दें। कई घरों में प्रेतात्माओं द्वारा उत्पीड़न होने की खबरें अखबारों में आती रहती हैं। वहाँ संदिग्ध प्रेतात्माओं का ध्यान कर उनके प्रति मेत्ता करने से समस्या का हल हो जाता है (मिश्र, 2009, पृ. 113)।” प्रो. कमलाकर मिश्र ने ऐसा सफल प्रयोग किया है।

ऐसा करने के दौरान कई बार मन भटक जाता है, तो इससे परेशान होने की कोई बात नहीं है। दुबारा मेत्ता पर ध्यान ले जाएं। दूसरी बात यह कि मेत्ता के उक्त चक्र जल्द ही पूरा हो जाता है, तब जरूरी होता है कि पुनः दुबारा, तबारा चक्र शुरू किया जाए। तीसरी बात यह कि दुष्ट व्यक्ति के प्रति मेत्ता करने का मन नहीं बनता

<sup>††</sup> गौरतलब है कि हमें दुष्ट, पापी व्यक्ति से नफरत नहीं होती है बल्कि उसके दुष्टता से होती है, यदि वह अपनी दुष्टता व पाप करना छोड़ दे तो हम उसी तरह से प्यार करेंगे जिस तरह से अन्य सज्जन व्यक्तियों को। ठीक ही कहा गया है पाप से घृणा करो पापी से नहीं।

<sup>‡‡</sup> शत्रु के प्रति मैत्री के संदर्भ में उरगेन संघरक्षित जी अपने पुस्तक लिविंग विद् काइंडनेस में कहते हैं, “अभ्यास के इस चरण में आप उस व्यक्ति को इस आधार पर मैत्री का विषय नहीं बनाते कि उसने क्या किया या क्या नहीं किया, बल्कि इसलिए बनाते हैं क्योंकि वह वहाँ पर मौजूद है।” आगे आचार्य शांतिदेव की पुस्तक ‘बोधिचर्यावतार’ के हवाले से कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति जो हमें हानि पहुँचाता है, वह संस्कारों के कारण पहुँचाता है तथा जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता। कोई व्यक्ति पहले से ही क्रोधित होने की इच्छा नहीं रखता है कि ‘मुझे क्रोधित होना है।’ दरअसल, द्वेष और क्रोध के बीज हमारे जागरूक नियंत्रण से परे उत्पन्न होते हैं और जिस द्वेष का प्रति उत्तर हम द्वेष से देते हैं, वह भी अकारण होता है। इसे किसी भी सुरत में जायज नहीं ठहराया जा सकता और यह मुद्दा भी नहीं है। क्रोध और द्वेष वास्तव में बड़ी ही दुःखद और तनाव से भरने वाली मनोवस्थाएं हैं। वह किसी भी सुरत में लाभदायक नहीं हो सकती।

है किंतु वह दुष्ट व्यक्ति मन में पीड़ा उत्पन्न करते रहता है। इससे निजात पाने के लिए उसके प्रति कठोर मेत्ता दें। मन ही मन उससे दृढ़ मानसिक शब्दों में कहे जैसा कि हम अपने बिगड़े बच्चे व प्रियजन को कहते हैं, - “तुम भी हमारे ही हो, तुम रास्ता भटक गए हो और बिगड़ गए हो। तुम रास्ते पर आओ और अपना सुधार करो। अपने किए पर पश्चाताप करो और भला हो जाओ। यदि नहीं सुधरते हो तो प्रकृति तुम्हें दण्ड देगी ही, अतः सुधर जाओ ताकि दुःख से बच सको, इसी में तुम्हारा वास्तविक कल्याण है (मिश्र, 2009, पृ. 114)।” ऐसा करना ही चाहिए गौतम बुद्ध धम्मपद में कहते हैं, “सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो। अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्यन घातये।। अर्थात् सभी दण्ड से डरते हैं, सभी को मृत्यु से भय लगता है। इसलिए सभी को अपने जैसा समझकर न किसी को मारे, न मरवाये (कौसल्यायन, 1993)। वैसे भी दुष्टता का निवारण दुष्टता से नहीं किया जाना चाहिए। आँख के बदले आँख की परंपरा से सारी दुनिया अंधी हो जाएगी। चौथी और अंतिम बात हमें जो कुछ पाने की इच्छा हो रही है, वह दूसरों के लिए कामना करनी चाहिए। इससे वह वस्तु दूसरे को मिले या न मिले अपने को जरूर मिल जाती है। जैसा कि लोकोक्ति है कर भला तो होए भला।

### सामुहिक मेत्ता

सामुहिक मेत्ता का अभिप्राय दो या दो से अधिक लोगों का एक साथ बैठ कर मेत्ता से है। परिवार के लोगों को एक साथ बैठ कर मेत्ता जरूर करना चाहिए, इससे अनेक लाभ है। परिवार के सदस्यों का किसी एक समय साथ बैठना और मिलना भी अपने आप में एक लाभकारी उपलब्धि है। परिवार के सदस्य एक साथ मेत्ता का ध्यान (अभ्यास) तो करें ही, इसके साथ पारिवारिक एवं अन्य समस्याओं पर गणतांत्रिक ढंग से विचार कर सकते हैं। मैत्री भावना का अभ्यास एवं गणतांत्रिक विचार-विमर्श से तमाम पारिवारिक समस्याओं का हल निकल आता है। समवेत पारिवारिक अभ्यास के लिए आवश्यक है कि एक समयावधि निश्चित कर ली जाय – आधा घंटा, पौन घंटा, एक घंटा या जितना समय मिलना सम्भव हो – शाम को या छुट्टी के दिन या जब भी संभव हो। उस समय परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर मैत्री-ध्यान करें और ध्यान के बाद पारिवारिक अभिवृद्धि के लिए भी साथ बैठकर विचार विमर्श करें (मिश्र, 2009, पृ. 116)।”

इसी तरह गाँव के लोग या तो एक स्थान पर या एक निश्चित समय पर बैठ कर कर समवेत मेत्ता का अभ्यास कर सकते हैं और उसके बाद गाँव की समस्याओं पर विचार विमर्श कर सकते हैं। इससे लाभदायक और प्रभावी परिवेश का निर्माण होता है। जैसे कई नदियों की धारा एक साथ मिल जाए तो जल की मात्रा और वेग दोनों बढ़ जाता है।

ऐसे में मैत्रीध्यान शुरू करने से पहले और अंत में घंटी बजावें या कोई संकेत दें। जैसे ऊँ... या अल्लाह.... या आमीन...आदि शब्दों का सहारा लिया जा सकता है। इससे समूह के सभी लोग समझ जाएंगे

कि मेत्ता कब शुरू हो रहा है और कब बंद। जहाँ बैठे हैं वहाँ के लोग ही सबसे पहले वृत्त में आएंगे फिर पूर्व की तरह वृत्त को आगे बढ़ाते जाएँगे।

## निष्कर्ष

मेत्ता के संदर्भ में गौतम बुद्ध के प्रारंभिक शिक्षाओं में एक मेत्ता सुत्त (सुत्त-निपात) के रूप में और दूसरा करणीय मेत्त सुत्त के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अलावा चार ब्रह्म विहारों में प्रथम 'मैत्रीविहार' के संदर्भ में उनकी शिक्षाएँ भी पालि भाषा में सुरक्षित हैं। बाद के भिक्षुओं, आचार्यों ने इसे अपने अपने देश काल परिस्थिति के अनुसार व्याख्यायित किया है। प्रो. कमलाकर मिश्र द्वारा दिया गया मैत्री मंत्र आसान और सहज मालुम होता है, लेकिन उस मैत्री मंत्र के रहस्य को व्याख्यायित करना पड़ेगा तभी सामान्य जन उसे सहज रूप से समझ सकेगा। आज युट्यूब पर मेत्ता के विविध रूपों में अभ्यास करने को बताया गया है, उसे सून कर मेत्ता के प्रति अपने ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। हलाँकि इसका अनुभव व फल तभी प्राप्त होगा जब इसे किया जाए। जैसे पानी में तैरने की जानकारी प्राप्त कर लेने तैरना नहीं आ जाता। तैरने के लिए बार बार पानी में उतर कर तैरने का अभ्यास करना होता है उसी तरह मेत्ता का बार बार अभ्यास करने पर ही मेत्ता का लाभ मिल पाएगा।

## संदर्भ :-

कौसल्यायन, भ. आ. (1993). *धम्मपदं*. नागपुर: बुद्ध भूमि प्रकाशन.

धर्मरक्षित, भि. (संपा व अनु.). (1968/2001). *श्रामणेरे विनय (तृतीय सं.)*. लखनऊ: भारतीय बौद्ध समिति.

बुद्धघोष, आ. (2008). *विसुद्धिमग्ग (भाग-1)*. (भि. धर्मरक्षित, अनु.) नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन.

मिश्र, कमालाकर. (2009). *मेत्ता : मानसिक स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन का चामत्कारिक योग*. वाराणसी: काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था.

शाक्य, ज्ञानादित्य. (2013). *बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना*. अहमदाबाद : रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस.

शांतिदेव, आ. (2000). *बोधिचर्यावतार (तीसरा सं.)*. (शां. शास्त्री, अनु.) नागपुर: बुद्ध भूमि प्रकाशन.

संघरक्षित, उ. (2012). *लिविंग विद् काइंडनेस*. (प्रसन्नबोधि, अनु.) नागपुर: धम्मदूत प्रकाशन.

## क्रियाविशेषण के रूप में कार्य करने वाले विशेषणों का अध्ययन

मन्नु सिंह यादव\*

manookathar2016@gmail.com

### सारांश

चयनित शोध-पत्र विशेषण और क्रियाविशेषण के बीच के संबंध के ऊपर आधारित है। हिंदी भाषा में शब्दों को आठ शब्दवर्गों में बांटा गया है जो निम्न हैं; संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक। ऐसे देखा जाए तो विशेषण और क्रियाविशेषण दो अलग-अलग शब्द-वर्ग हैं; विशेषण वे होते हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम से पहले आते हैं और क्रियाविशेषण वे होते हैं, जो क्रिया से पहले आते हैं। इस शोध-पत्र में उन विशेषणों और क्रियाविशेषणों की बात की गई है जिन्हें देखा जाए तो कहीं-कहीं एक ही शब्द विशेषण और कहीं-कहीं क्रियाविशेषण के रूप में आता है। जैसे-

शब्द	विशेषण	क्रियाविशेषण
अच्छा	मोहन अच्छा लड़का है।	वह लड़का अच्छा गाता है।

मुख्यतः विशेषण के चार प्रकार किए गए हैं उनमें से देखा जाए तो बाकी तीन प्रकारों की अपेक्षा, गुणवाचक विशेषण अधिकतम मात्रा में क्रियाविशेषण के रूप में प्रयोग में मिलते हैं। ऊपर दिया गया अच्छा शब्द गुणवाचक विशेषण के अंतर्गत आता है और क्रियाविशेषण में परिणामवाचक के अंतर्गत आता है। यह शोध विषय सारांश से होते हुए बीज शब्द, भूमिका, विश्लेषित उदाहरण, निष्कर्ष से होते हुए संदर्भ ग्रंथ सूची तक वर्णित है।

**बीज शब्द:** विशेषण, क्रियाविशेषण, संज्ञा, सर्वनाम।

### भूमिका

विशेषण वे शब्द हैं जो संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं और क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं। किंतु कुछ विशेषण, क्रियाविशेषण के रूप में भी कार्य करते हैं। कुछ विशेष परिस्थितियों में एक ही शब्द विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयोग होते हैं; जैसे- उदाहरण (क) 'ज्यादा आदमी वहाँ घूम रहे थे', इस वाक्य में 'ज्यादा' 'आदमी' के आगे आया है और वह आदमी की विशेषता बता रहा है। इस वाक्य में 'आदमी' 'संज्ञा' है, इसलिए यहाँ पर 'ज्यादा' 'विशेषण' का कार्य कर रहा है। उदाहरण (ख) 'आजकल

\* पी-एच. डी. शोधार्थी, भाषा प्रौद्योगिकी, म. गां. अं. हिंदी विश्वविद्यालय. वर्धा

तुम ज्यादा बोल रहे हो', इस वाक्य में 'ज्यादा' 'बोलना' क्रिया से पहले आया हुआ है और वह क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहा है, इस वाक्य में 'तुम' 'सर्वनाम' है, जिसका 'ज्यादा' से कोई संबंध नहीं है। अतः यहाँ पर 'ज्यादा' क्रियाविशेषण का कार्य कर रहा है। इस प्रकार देखा जाए तो 'ज्यादा' शब्द विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है। उदाहरण -

इसके कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं-

क्र.	शब्द	विशेषण	क्रियाविशेषण
1.	अच्छा	मोहन <b>अच्छा</b> लड़का है।	वह लड़का <b>अच्छा</b> गाता है।
2.	अच्छी	वह <b>अच्छी</b> लड़की है।	वह <b>अच्छी</b> लगती है।
3.	बहुत	वहाँ <b>बहुत</b> लोग दिखाई दे रहे थे।	श्याम <b>बहुत</b> बोलता है।
4.	खुबसूरत	जमीन पर <b>खुबसूरत</b> कालीनें बिछी हुई हैं।	हम बहुत <b>खुबसूरत</b> मालूम होते हैं।
5.	ज्यादा	स्कूल में आज <b>ज्यादा</b> बच्चे नहीं थे।	आजकल तुम <b>ज्यादा</b> बोल रहे हो।

## 1. विशेषण और क्रियाविशेषण का संक्षिप्त परिचय

- कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके लगने से संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता या खूबी उभरकर सामने आ जाती है। अर्थात् संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द **विशेषण** कहलाते हैं। जैसे- ज्यादा बच्चे, बहुत लोग आदि।
- क्रियाविशेषण की बात की जाए तो क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय को **क्रियाविशेषण** कहते हैं; जैसे- तेज, अधिक, धीरे, यहाँ, वहाँ आदि।

### 1.1. विशेषण के प्रकार- विशेषण के मुख्यतः चार प्रकार हैं। तथा इनके कई उपभेद हैं-

- **सार्वनामिक विशेषण**- विशेषण रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे- ऐसा लड़का, जैसी करनी, वैसी भरनी, यह किताब, वह घर, कुछ लड़के, कोई आदमी।
- **गुणवाचक विशेषण**- संज्ञा और सर्वनाम के गुण का बोध कराने वाला विशेषण गुणवाचक विशेषण कहलाता है; जैसे- लाल साड़ी, अच्छा आदमी, गरीब छात्र, मीठा आम।
- **परिमाणबोधक विशेषण**- यह किसी पदार्थ की नाप या तौल का बोध कराता है। इसके भी दो उपभेद हैं; निश्चित- पांच लीटर दूध, तीन मीटर कपड़ा एवं अनिश्चित- सब लोग, बहुत पैसे।

इसके अंतर्गत संख्यावाचक और मात्रावाचक को रखा गया है।

### परिमाणबोधक विशेषण

#### संख्यावाचक

(यह संज्ञा अथवा सर्वनाम

#### मात्रावाचक

(पांच लीटर, थोड़ा सा , चार किलोमीटर)

की संख्या का बोध कराता है)



- गणनावाचक- एक, दो, तीन ।
- क्रमवाचक- पहला, दूसरा, चौथा ।
- आवृत्तिवाचक- तिगुना, चौगुना ।
- समुदायवाचक- तीनों, चारों, पांचों ।
- प्रत्येकबोधक- तीन-तीन, दो-दो, हर एक ।

**प्रविशेषण-** विशेषण अथवा क्रियाविशेषण की विशेषता बतलाने वाला शब्द प्रविशेषण कहलाता है, जैसे- राम अत्यधिक तेज छात्र है, सीता अति सुंदर लड़की है।

## 1.2. अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार प्रकार माने गए हैं -

### i. स्थानवाचक

- स्थितिवाचक – भीतर, बाहर, यहाँ, वहाँ आदि ।
- दिशावाचक – इधर, उधर, दाएँ, बाएं आदि ।

### ii. कालवाचक :

- समयवाचक – आज, कल, अभी, तुरंत आदि ।
- अवधिवाचक – आजकल, भर-दिन, नित्य आदि।
- बारंबारतावाचक – हर बार, कई बार, प्रतिदिन आदि।

### iii. परिमाणवाचक

- अधिकताबोधक – बहुत, खूब, अति आदि।
- न्यूनताबोधक – कुछ, लगभग, जरा, प्रायः आदि।
- पर्याप्तबोधक – काफी, ठीक आदि।
- तुलनाबोधक – कम, अधिक आदि।
- श्रेणी बोधक – बारी-बारी से, क्रमशः, तिल-तिल आदि।

### iv. रीतिवाचक

- निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, कारण, निषेध आदि।
- अर्थों का बोधक- यथा-संभव, ऐसे, वैसे, अवश्य आदि।

## 2. विशेषण एवं क्रियाविशेषण के कार्य-

### 2.1. विशेषण के कार्य-

- किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की विशेषता बतलाना। (राम स्वस्थ है) (सोना चमकदार है)
- हीनता बतलाना। (मुख नौकर मत रखो)
- अर्थ सिमित करना। (दौड़ते लड़के)
- संख्या का बोध कराना। (एक आम, पांच लड़के)
- मात्रा बतलाना। (एक किलो आटा, पांच लीटर दूध)

### 2.2 क्रियाविशेषण के कार्य-

- यह क्रिया की विशेषता बतलाता है।
- क्रिया के होने का ढंग बतलाता है।
- क्रिया के होने की निश्चितता तथा अनिश्चितता का बोध कराता है।
- क्रिया के घटित होने की स्थिति आदि दर्शाता है।
- क्रिया के होने में निषेध तथा स्वीकृति का बोध कराता है।

## 3. विशेषण के क्रियाविशेषणात्मक रूप में प्रयोग होने वाले कुछ उदाहरण-

क्र.	शब्द	विशेषण	क्रियाविशेषण
1.	बेजोड़	वह अपने ढंग की <b>बेजोड़</b> थी।	वह <b>बेजोड़</b> नाचता है।
2.	बढ़िया	<b>बढ़िया</b> आदमी हमेशा अच्छी बात करते हैं	वे लोग बहुत <b>बढ़िया</b> काटते हैं।
3.	अधिक	वह सबसे <b>अधिक</b> बलवान है।	वह सबसे <b>अधिक</b> लिखा होगा।
4.	लाजवाब	वाह क्या <b>लाजवाब</b> छबि है।	वास्तव में उनकी प्रस्तुति <b>लाजवाब</b> थी।
5.	कितना	तुम <b>कितना</b> मुर्ख हो। वह <b>कितना</b> पानी पीता है	तुम <b>कितना</b> बोलते हो अरे वह <b>कितना</b> रो रही है।
6.	अधिक	वहाँ <b>अधिक</b> लोग पहुँच गए	सबसे <b>अधिक बोलता</b> है <b>अधिक सोचने</b> लगती है
7.	सर्वाधिक	धोनी ने आज <b>सर्वाधिक</b> रन बनाया	<b>सर्वाधिक</b> प्रभाव पड़ता है
8.	पहले	<b>पहले</b> मैच में हार गए	वे लोग <b>पहले</b> पहुँच गया
9.	भारी	<b>भारी जल</b> का कव्थनांक ज्यादा होता है <b>भारी</b> पेड़ गिर गया	प्रतिशत वृद्धि बहुत <b>भारी</b> हुई है ये बादल काफी <b>भारी</b> हो गए
10.	तेज	<b>तेज</b> गेदबाज़ <b>वह</b> लड़का <b>तेज</b> है <b>वह</b> <b>तेज</b> व्यक्ति है।	वह <b>तेज बोलता</b> है तुम हमेशा <b>तेज बोलते</b> हो वह <b>तेज</b> दौड़ता है।
11.	अच्छा	<b>अच्छा लड़का</b> आज्ञाकारी होता है राम <b>अच्छा</b> लड़का है	एक-दूसरे को <b>अच्छा</b> समझते है ट्रेलर हो तो बहुत <b>अच्छा</b> रहता है मुझे उसका गाना <b>अच्छा</b> लगता है
12.	अलग-अलग	सभी लोग <b>अलग-अलग राय</b> दे रहे थे	अब तीनों <b>अलग-अलग</b> चलते हैं
13.	सुंदर	वह <b>सुंदर</b> लड़की है <b>सुंदर</b> लड़की जा रही है	मीरा <b>सुंदर</b> गाती है ऐसी <b>सुंदर</b> व्याख्या करते हैं अशोका <b>सुंदर</b> नाचती है
14.	बहुत	भूकंप में <b>बहुत</b> लोग मारे गए वहाँ <b>बहुत</b> लोग मारे गए थे	उसने <b>बहुत</b> समझाया वह <b>बहुत</b> बोलता है
15.	कुछ	कुछ लड़कियां <b>बहुत</b> होशियार है	<b>कुछ</b> बोलो भी / फिर न <b>कुछ</b> कह बैठे
16.	काफी	वहाँ <b>काफी</b> लोग खड़े थे	वह <b>काफी</b> बोल रहा है
17.	फालतू	<b>फालतू</b> लोग हमेशा उल्टा बोलते हैं	वह बहुत ज्यादा <b>फालतू</b> बोलता है
18.	प्यारा	रामू बहुत <b>प्यारा</b> है	अमित बहुत <b>प्यारा</b> लगता है

19.	कम	बहुत कम लोग यह बात जानते हैं	वह बहुत कम बोलता है
20.	ज्यादा	ज्यादा लोग चावल पसंद करते हैं	इस समय ज्यादा पढ़ रहे हो
21.	अकेला	अकेला आदमी क्या-क्या करे	वह अकेला घूमता रहता है
22.	ऐसा	हमने ऐसा शहर पहले नहीं देखा था	ऐसा करो कि काम खत्म हो जाए
23.	और	और लड़कियां क्या कर रही है	लड़का और तेज दौड़ा
24.	कोई	कोई आदमी आया	सभी में कोई पचास लोग थे
25.	क्या	तुम्हें मुझसे क्या काम है	तुम क्या आओगे, हमें ही आना पड़ेगा
26.	जैसा	जैसा काम वैसा दाम	तुमने जैसा चाहा वैसा हुआ
27.	ठीक	तुमने ठीक उत्तर दिया	ठीक लिखो, ठीक पढो
28.	थोड़ा	थोड़ा जल पिला दो	उसने थोड़ा समझा थोड़ा नहीं समझा
29.	बुरा	वह बहुत बुरा आदमी है	यह सब कुछ मुझे बुरा लगता है
30.	भला	वह भला आदमी है	यह सब कुछ मुझे भला लगता है

### निष्कर्ष

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में कुछ शब्द या कुछ विशेषण ऐसे हैं, जो क्रियाविशेषण का भी कार्य करते हैं। उन शब्दों के एक समान रूप विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयुक्त मिलते हैं। मैंने अपने शोध-पत्र में ऐसे लगभग 30 शब्दों को समाहित किया है, जो विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों का कार्य करते हैं। इसी आधार पर इस विषय पर विस्तृत शोध किया जा सकता है। यदि ऐसा होता है तो यह मेरे शोध-पत्र की हिंदी भाषा के विकास योगदान में अहम भूमिका हो सकती है।

### संदर्भ :-

- गर्ग, महेशचंद्र. (1978). परिनिष्ठित हिंदी का रूपग्रामिक अध्ययन. कल्पना प्रकाशन.
- गुरु, कामताप्रसाद. (2005). हिंदी व्याकरण. वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा.
- तरुण, हरिवंश. (2010). मानक हिंदी व्याकरण और रचना. नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान.
- पाण्डेय, अनिल कुमार. (2010). हिंदी संरचना के विविध पक्ष. नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान.
- प्रसाद, धनजी. (2019). हिंदी का संगणकीय व्याकरण. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.
- बाहरी, हरदेव. (2008). हिंदी शब्द-अर्थ-प्रयोग. इलाहबाद : अभिव्यक्ति प्रकाशन.
- सिंह, डॉ. सूरजभान. (2000). हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण. दिल्ली : साहित्य सहकार.

## स्वप्न दुःस्वप्न नाटक के आईने में आदिवासी पर्यावरणीय वैचारिक मान्यता

मनीष कुमार\*

manishmahour90@gmail.com

आदिवासी साहित्य मानव इतिहास से प्रकृति में मौजूद है। आदिमानव के समय से ही उसके द्वारा शिकार, अग्नि जैसी उपलब्धियों ने साहित्य को जन्म दिया। नए अविष्कारों का श्रेय भी आदिवासी समाज को जाता है। आदिवासी साहित्य ने ही सभ्य समाज की नींव भी रखी है। उन्हें असभ्य, जंगली जैसे शब्दों से परिभाषित किया जाता है। वह ना तो असभ्य ही है और न ही जंगली। हां, जंगल में रहने के कारण उन्हें प्रकृतिवासी कहा जाता है। लेकिन उन्हें जंगली, वनवासी जैसे शब्दों से परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह मानव हजारों वर्षों से प्रकृति में वास करता आया है। आज भी बहुत सहजता के साथ अपना जीवन प्रकृति के साथ बिता रहा है। जिसकी कल्पना भी तथाकथित सभ्य समाज तक नहीं पहुंच पाई है। जब कल्पना नहीं पहुंच पाई तो वह सभ्य समाज साहित्य में कहा जगह देता। क्योंकि साहित्य में कल्पना, चिंतन, मनन अनिवार्य है, जो तथाकथित सभ्य समाज के दृष्टि से आज तक भी परे है। इसी कारण लिपि मिलने पर आदिवासी ने अपने मौखिक साहित्य को लिखित रूप में उकेरना प्रारम्भ किया। जिसका प्रभाव हिन्दी में पिछले दो दशकों से दिखने लगा। पिछले दो दशकों में हिन्दी में आदिवासी साहित्य लिखा जा रहा है। जिसकी गति बहुत तीव्र है। जिसमें साहित्य की हर विधा के केंद्र में आदिवासी ने अपनी जगह बना ली है। वह अपनी समस्याओं के साथ-साथ अपने इतिहास पर भी बात कर रहा है। हिन्दी में कई रचनाकार उभर कर सामने आए हैं। जिन्होंने आदिवासी साहित्य को नया रूप प्रदान किया है। इसमें रमणिका गुप्ता जी का अतुलनीय योगदान है। इसके साथ साथ झारखंड से ग्रेस कुजुर, वंदना टेटे, रोज केरकेट्टा जैसी महिला रचनाकारों ने हिन्दी में लिखने के साथ अपनी आदिवासी मात्र भाषाओं में भी साहित्य रचा है। पूर्वी भारत में आदिवासी साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति, परम्परा को मजबूत किया है, तो वहीं छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों ने अपने अधिकारों के प्रति आवाज को बुलंद किया है।

राजस्थान और गुजरात में आदिवासी अपने अस्तित्व के लिए आज भी संघर्षरत होकर साहित्य की रचना कर रहे हैं। वहीं बिहार, उत्तर प्रदेश में कई कठिनाइयों का सामना करके आदिवासी अपनी आवाज को कलम का रूप दे रहे हैं। हिमाचल, उत्तराखंड के आदिवासी अपनी प्राकृतिक संस्कृति को साहित्य में उतार रहे हैं, तो कश्मीर, लद्दाख के आदिवासी अपने दर्शन से प्रभावित कर रहे हैं। दक्षिण भारत के आदिवासी अपने

\* असिस्टेंट प्रोफेसर, किरोड़ी मल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सम्मान और संस्कृति को साहित्य में प्रभाविक रूप दे रहे हैं। महाराष्ट्र के आदिवासी सांस्कृतिक चेतना से परिपूर्ण अपने लिए न्याय के विचारों को साहित्य में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। बंगाल और उड़ीसा के आदिवासी प्रकृति, संस्कृति से अपनी परम्पराओं को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। इस तरह पूरे देश के आदिवासी अपने लेखन के माध्यम से सर्व समाज के सम्मुख अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।

भारतीय रंगमंच में परिवर्तकारी कई प्रयोग किए गए हैं। जो एक विशाल परम्परा से होते हुए आज के तकनीकी युग तक रंगमंच में नजर आता है। रंगमंच प्रारम्भ से ही परिवर्तशील रहा है। हिन्दी में भारतेन्दु से प्रारम्भ हुए रंगमंच का स्वरूप कुछ और था तथा आज के रंगमंच का स्वरूप कुछ और है। आज तकनीकी सुविधाओं ने रंगमंच को नयी दिशा दिखने का प्रयास किया है। उसके बल पर रंगमंच में कई संख्याओं में सफल प्रयोग भी किए गए हैं। रंगमंच स्वयं में भी परिवर्तनशील कला है। रंगमंच का ही एक परिवर्तित अंग जो नुककड़ रंगमंच व नाटक से पहचाना जाता है। यह परिवर्तन देखते देखते रंगमंच सड़कों, गलियों, मोहल्लों, चौराहों तक पहुंच गया है। इसके लिए रंगकर्मियों के प्रयोगशील कार्य की मनोस्थिति का प्रभाव भी है।

आदिवासी रंगमंच में यह परिवर्तनशील कला उनके मौखिक रंगमंच से ही नजर आती है। जब वह किसी घटना की स्थिति, परिस्थिति का दृष्यांकन नाटकीय रूप में समूह के समीप करते थे। इसमें हर बार घटना वही रहती थी, स्थान बदल जाते थे। स्थान व समूह जुड़ने से उसी घटना का अनुकरण बदल जाया करता था। इन घटनाओं के केंद्र में शिकार करने की प्रक्रिया, जंगल में प्रकृति के विशालकाय रूप की प्रतिक्रिया, समूह टोले में किसी के जन्म मृत्यु की प्रतिक्रिया या अन्य तरह के अनुष्ठानों की प्रक्रिया समाहित रहती है। जो घटना के साथ-साथ स्थान, कथानक समूह को समय-समय पर परिवर्तित कर दिया करती है। घटना को कहने वाला आदिवासी भी पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तित होता आया है। जिसके परिणामस्वरूप जो कथा, गाथा कई हजार वर्षों पूर्व से चली आ रही है उसका वही रूप आज भी आदिवासी समाज में जस का तस नजर आता है। इससे उनमें प्रचलित कलाओं को देखें तो पाएंगे की गोदना, मूर्तिकला, चित्रकारी, नए-नए जीवनोपयोगी कलात्मक वस्तुएं आदि निहित है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आयी है। रंगमंच के स्वरूप को भी इन्ही तथ्यों के साथ पाते हैं कि लोक कथा कहने के ढंग में नाटक व रंगमंच में भी परिवर्तन आता गया है। कथा, गाथा के केंद्र का मूल वैसा का वैसा ही पाया जाता है। आदिवासी प्रकृति पूजक हजारों वर्षों पूर्व भी थे और आज भी उसी तरह के प्रकृति प्रेम के लक्षण देखे जाते हैं। वह अपने जीवन का ही अंग प्रकृति को मानते हैं, जिसमे वह बसते, रचते, खाते-पीते जीवन यापन व्यतीत करते हैं। दमयंती बेसरा आदिवासी लोक भाग 2 पुस्तक में अपने लेख के पृष्ठ संख्या 120 पर लिखती है कि “पहले आदिवासियों को किसी रंगमंच, प्रकाश - व्यवस्था अथवा दर्शक समूह की आवश्यकता नहीं होती, बस दो मृदंग और दो बांसुरी। मृदंग की ताल के साथ थिरकते पांवों को ताल से सारा परिवेश झूम उठता है। संताली युवक युवतियां भाव - विभोर हो उठते हैं और कानों तक पहुंचती संगीत लहरी एक अमिट रेखा सी खींच देती है। लगता है यही जिंदगी है। अदभुत है ना उनका धैर्य और संस्कृति प्रेम, आधुनिक सभ्य समाज जिसकी खोज और प्राप्ति में आज भी अनुसंधानरत है? यही निश्चल प्रेम बहुतों की ईर्ष्या

का कारण रहा है। उनके मन और शरीर किस मिट्टी के बने हैं? दो मृदंग कहीं भी हों जम जाते हैं। 'इनेज सेरेज अखड़ा' जीवन समझते हुए जीते हैं और भूल जाते हैं अपनी गरीबी, अपना अतीत। 'बस वर्तमान ही सत्य है' यही बात इन्हें दूसरों से अलग करती है।<sup>1</sup> इस तरह आदिवासी रंगमंच था, जिसका किसी प्रकार का कोई सुनिश्चित रूप नहीं था। जब मन चाहा वहा अनुकरण नाट्य कर लिया। समस्याओं के आने के पश्चात आदिवासी समाज ने अपनी आवाज को संवाद के रूप में मंच से स्थापित करने का कार्य किया। जिसका रूप आज हिन्दी में आदिवासी रंगमंच दिखाई दे रहा है।

यह नाटक आदिवासी समाज में वैश्विक स्तर पर आई समस्याओं का चित्रण करता है। वैश्विक स्तर पर जंगलों की कटाई से सीधे रूप में आदिवासी प्रभावित हो रहा है। वह अपनी लोक प्रचलित परम्पराओं को बचा पाने में पूरी तरह असक्षम है। वैश्विक स्तर के आदिवासी समुदाय जंगलों में ही वास करके अपनी संस्कृति, परम्परा को जीवित रखते आये हैं। वैश्विक स्तर पर उनकी लोक परम्पराएँ भी धीरे-धीरे लुप्तप्राय हो रही है। उनके प्रकृति धारण आशियाने उजड़ने से उनकी लोक संस्कृति पर सीधा असर पड़ रहा है। जंगलों की कटाई के कारण उन्हें जंगलों से खदेड़ दिया जा रहा है। आदिवासी जातियों के लुप्तप्राय होने से उनकी लोक संस्कृति में बसे लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक संस्कृति आदि भी लुप्तप्राय हो रही है। वह अपने जंगल के कटने से काफी हताश है। संघर्ष करने पर उन्हें मृत्यु या किसी प्रकार की सजा अमूमन होती है। इसलिए वह अपराधी होने के कारण भी धीरे-धीरे जेलों, शहरों में विलीन होते जा रहे हैं। यही स्थिति भारतीय आदिवासियों की भी है। एक आदिवासी जाति के लुप्त होने से लोक प्रचलन की सभी कलाएं भी लुप्त होती जाती है। यह नाटक इन्ही लोक प्रचलित कलाओं को लेकर चिंतन भी करता है और आदिवासियों को अपनी हक्र की लड़ाई के लिए मजबूत भी करता है।

इस नाटक के मूल में केन्द्रित समस्या पर्यावरण का नुकसान है जो जंगलों की निरंतर कटाई के कारण दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। पर्यावरण को न बचाया गया तो आदिवासी जातियां लुप्त हो जाएगी और उसके साथ यह धरती के हर मनुष्य के लिए भी खतरा बन जाएगी। यह नाटक प्राकृतिक आपदाओं की ओर भी संकेत करता है जंगलों के कटने से प्राकृतिक आपदाएं भी बढ़ी है। नाटककार संवाद में कहता भी है कि

“एक – वायु, शुद्ध वायु

एक – शुद्ध वायु, ऑक्सीजन

एक – वृक्ष देते है ऑक्सीजन

एक – वृक्ष लेते है कार्बनडाई ऑक्साइड

एक - कार्बनडाई ऑक्साइड की अधिकता

एक – धुंए की अधिकता, पेड़ों की कमी”<sup>2</sup>

इस तरह 'एक' नामक पात्र अपने संवादों में पेड़ों की महत्ता और पर्यावरण की हानि को दर्शाता है। नाटककार पर्यावरण की गंभीर समस्या को उजागर करने के साथ-साथ जंगलों में बसने वाली आदिवासी जातियों की भी समस्याओं का चित्रण वैश्विक परिप्रेक्ष्य में करते हैं। विश्व भर में शहरों के सौंदर्यीकरण के लिए जंगलों के सौंदर्यीकरण को समाप्त करने का प्रयास जोरों पर चल रहा है। इससे सीधे रूप में आदिवासी समुदाय ही प्रभावित हो रहा है। वही कई हजारों वर्षों से वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जंगलों में वास करता आया है। पर्यावरण को बचाने का उद्देश्य आदिवासी समुदाय के पास है। वह इसमें जीवनयापन करके इसको बचाने में आज भी सक्षम है। स्वार्थी समाज अपने स्वार्थ के लिए जंगलों की कटाई किये जा रहे हैं। जिसका सीधा असर पर्यावरण पर पड़ता है, कई द्वीप गायब हो गये हैं, कई जगह धरती बंजर हो गयी है, कई आदिवासी जातियां लुप्तप्राय हो गयी है। इसको रोकने के लिए भी वैश्विक स्तर पर आदिवासी समाज संघर्षरत है। नाटक में भी जगह-जगह आदिवासी संघर्ष का संकेत किया गया है। आदिवासी समाज अपनी समस्याओं का सामना स्वयं ही कर रहा है। वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के लाभ व हानि को भी सर्व समाज के सम्मुख रख रहा है।

आदिवासी परिवेश व पृष्ठभूमि आधारित नाटक में यथार्थ का चित्रण हुआ। आदिवासी नाटकों में समस्याओं का चित्रण मुखर रूप में होने से उनका यथार्थ चित्र उभर कर हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है। यह नाटक भी जंगलों के काटे जाने से वैश्विक स्तर के आदिवासियों के समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टि से उभारता है। इसमें ब्राजील, जापान, कैरोबियन व फ्रांस आदि के शहरों को चमकाने के लिए लकड़ियों का इस्तेमाल किया जाता है और लकड़ियों के लिए जंगल से पेड़ों को काटा जा रहा है। जिससे आदिवासी समाज सीधे रूप में प्रभावित होता है। नाटककार कोरस के संवाद से कहता है कि

“गरीब का एक मात्र इंधन है लकड़ी

लकड़ी, लकड़ी, लकड़ी

जंगल, जंगल, जंगल।”<sup>3</sup>

इससे स्पष्ट होता है कि वैश्विक स्तर पर गरीब समाज लकड़ी पर ही निर्भर रहता है। वह अपनी उपयोगिता के लिए केवल कुछेक लकड़ी का ही इस्तेमाल करता है। इसके इतर लकड़ी का इस्तेमाल कागज, फर्नीचर इत्यादि में करके सिर्फ पर्यावरण को अनेक स्तर पर नुकसान पहुंचाने का कार्य हो रहा है। इस नाटक में लकड़ी के लिए जंगल काटना और आदिवासी समाज के प्रभावित होने का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत होता है।

यह नाटक पूर्ण रूप में प्रकृतिपरक है। इसमें नाटककार ने पर्यावरण संरक्षण को केन्द्रीय भाव बनाकर पेश किया है। पर्यावरण बचेगा तो जीव-जंतु बचेंगे, पर्यावरण बचेगा तो प्राकृतिक आपदाएं कम होगी, पर्यावरण बचेगा तो आदिवासी जातियां लुप्त होने से बचेंगी, पर्यावरण को बचाने के लिए जंगलों का रख रखाव करना होगा। अपनी लोभप्रद सुविधाओं को छोड़कर, आदिवासी जीवन दर्शन को आत्मसात करना होगा। तभी इस

तरह हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। यह नाटक अपने उद्देश्य में आदिवासी जीवन दर्शन में बसे प्रकृति प्रेम को प्रमुखता से उभारता है। मानव और धरती को बचाने के लिए आदिवासियों के प्रकृति प्रेम में बसे मानवीय गुण को अपनाना होगा। तभी इस प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है और धरती को बचाया जा सकता है। नाटककार नाटक के प्रारम्भ में कहता है कि

“विज्ञान और टेक्नोलॉजी के युग में विकास की आड़ में जिस तरह पर्यावरण का हर्ष और विनाश हो रहा है उससे आज सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक संकट की स्थिति पैदा हो गयी है।”<sup>4</sup>

नाटककार भी नाटक के माध्यम से संकटग्रस्त स्थिति से परिचित कराते हुए प्रकृति को बचाने का मूल मन्त्र आदिवासी समाज के पास दर्शाता है। वही हजारों वर्षों से वैश्विक स्तर पर, अलग-अलग स्थानों पर प्रकृति के एकदम समीप रहकर जीवनयापन करता आया है। इस तरह की जीवन पद्धति को सम्पूर्ण मानव जाति को अपनाना होगा। तभी मानव व धरती को बचाया जा सकता है।

यह नाटक रंगमंच पर पर्यावरण, प्रकृति विषय को उकेरता हुआ यथार्थ का चित्रण दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। दर्शकों को चेतना प्रदान करने के साथ मानवीय समस्याओं को भी उभारता है। जंगलों को काटा जाना मंच पर यथार्थ चित्रण दृश्यांकित करता है। जंगल में आदिवासी रहते हैं और उनका विस्थापन होना लगातार जारी है। इस नाटक के विषय में यथार्थ मौजूद है तो यह मंच पर उतरकर भी यथार्थपरक रंगमंच को उभारता है। नाटककार 'एक' नामक पात्र से कहलवाते हैं कि

“बहुत कम इने-गिने जंगल ही रह गये है, जो अगले कुछ वर्षों में लुप्त हो जायेंगे।”<sup>5</sup>

नाटककार इस तरह से मानव समाज के समक्ष प्रश्न करते हुए समस्या का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं। जंगल कटेंगे, आदिवासी हटेंगे, आदिवासी जातियां लुप्त होती जा रही है। वैश्विक स्तर पर मानवीयता के संदेश को यह नाटक प्रस्तुत करता है। सभी पात्र मंच पर संवादों के यथार्थ से दर्शकों व समाज से प्रकृति को बचाने का उद्देश्य भी देते नज़र आते हैं।

यह नाटक मंच पर प्रस्तुत होकर पर्यावरण को बचाने का संकेत देता है। सभी पात्रों के संवादों में जंगल कटने की समस्या उभर कर सामने आती है। जंगल कटने की प्रक्रिया के बीच में आदिवासी पिस रहा है। वह अपनी संस्कृति में बसी अकल्पनीयता को भी खोता जा रहा है। यह नाटक जब मंच पर प्रस्तुत होता है तो आदिवासियों के प्रकृति रक्षक भाव को अकल्पनीय रूप में प्रस्तुत करता है। इस तरह के भाव को अन्य रंगमंच में कमतर स्थान मिल पाया है। इसलिए भी नाटक की वैश्विक पृष्ठभूमि में आदिवासी समस्या अकल्पनीयता को जन्म देती है। जो रंगमंच में वैश्विक स्तर पर आदिवासी समस्याओं की ओर इंगित करती है। आदिवासी रंगमंच में बसी अकल्पनीयता को भारतीय रंगमंच में अपनी उपस्थिति प्रभावी रूप में दर्ज कराती है।

आदिवासी पृष्ठभूमि व परिवेश आधारित नाटकों में नाटकीयता के पुट को अधिक रूप में देखा गया है। यह नाटकीयता आज के रंगमंच में तेजी से उभर कर अपनी समस्याओं से अवगत कराती चलती है। इस नाटक में भी आदिवासियों की कई जातियां वैश्विक स्तर पर लुप्तप्राय हुई हैं। इन लुप्तप्राय जातियों के साथ आदिवासी नाटकीयता के रूप को वैश्विक रंगमंच ने खो दिया है। इसके माध्यम से वैश्विक दृष्टिकोण पर आदिवासियों की स्थिति, परिस्थिति के साथ उनके नाटकीय स्वरूप का विवेचन हुआ है। नाटक में कोई आदिवासी पात्र न होने के बावजूद भी यह नाटक वैश्विक पृष्ठभूमि पर आदिवासी के प्रकृति प्रेम, आदिवासी का जीवन दर्शन झलकाता है। इस नाटक में जंगलों के कटने से सीधा असर आदिवासी समाज पर पड़ रहा है। यह नाटक कई रूपों में इस स्थिति को मंच से नाटकीय स्वरूप में प्रस्तुत कराता है। ताकि सर्व मानव समाज को जंगल व आदिवासियों की समस्याओं से अवगत कराया जा सके।

रंगमंच परिवर्तनशील प्रक्रिया से गुजरते हुए अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत होते रहें हैं। यह नाटक भी वैश्विक स्तर पर कटते जंगल तथा उनके कारण लुप्त होती आदिवासी जातियों का चित्रण करता है। यह नाटक मंच पर आने के बाद अपनी हर प्रस्तुति में परिवर्तनशीलता को ग्रहण करता है। नाटक के मंचन में आदिवासी व जंगल के कटने के विषय से सरोकार रखते हुए अपने रूप में अलग-अलग परिवर्तन हासिल करता है। नाटक में छः पात्र व कोरस के रूप में मंच पर नाटक को प्रस्तुत किया जाता है। नाटक अपनी हर प्रस्तुति में तरह तरह के प्रयोग करके परिवर्तनशीलता को प्राप्त होता है। नाटक वैश्विक स्तर पर संकट तथा लुप्तप्राय जातियों की चर्चा के साथ परिवर्तित होता हुआ मानव को जागृत करने का प्रयास करता है।

वर्तमान युग में आदिवासी रंगमंच ने अपने परिवर्तनकारी स्वरूप को पहचाना है और वह मंच पर आ गया है। मंच से ही अपनी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा का विषय रख रहा है। मंच से ही उसकी वर्षों पुरानी दूरी अब खतम होने लगी है। वह केवल समुदाय व अखड़ा रूपी ही मंचो पर अपनी व्यथा, कथा की रंगमंचीयता की पेशकश करता रहा है। अब वह आधुनिक उपकरणों से सम्पन्न मंचो पर भी अपनी व्यथा, कथा को सर्व समाज के सम्मुख रख रहा है। मंच पर अपने अनुरूप तरह-तरह के परिवर्तन भी कर रहा है। आज मंच उसे वह सब सुविधाएँ भी उपलब्ध करा रहा है जिससे वह अभी तक कोसो दूर था। हिन्दी रंगमंच ने आदिवासी को मंच पर कम देने के कारण वह स्वयं ही मंच से दूर रहने की पीड़ा को परिवर्तनशील स्वरूप में प्रदर्शित कर रहा है। आज अगर उसे मंच पर प्रकृति का चित्रण प्रस्तुत करना है तो वह आधुनिक उपकरणों के सहारे अपने अनुसार चित्रण कर रहा है। इसी तरह के कई परिवर्तनशील रंगमंचीयता से हिन्दी रंगमंच को शोचनीय व चिंतनीय अवस्था में भी ले जा रहा है। हिन्दी रंगमंच ने आदिवासी पृष्ठभूमि को न के बराबर व्यक्त किया है और अगर किया भी है तो उसका शास्त्रीय रूप अपने अनुसार गढ़ कर प्रस्तुत किया है। आदिवासी रंगमंच अपने अनुरूप परिवर्तनशील होते हुए रंगमंच में अपनी अलग अस्तित्वता को अपना रहा है। इसके लिए कई आदिवासी व गैर आदिवासी निर्देशक व कलाकार अपने अपने स्तर पर निरंतर प्रयास करने के कर्म में लगे हुए हैं।

21वीं सदी दलित, स्त्री, आदिवासी विषयों को उभारती नजर आती है। जो उन्हें अपनी भूमिका को सर्व समाज के सम्मुख रखने का प्रयास करती है। डा. दिनेश्वर प्रसाद अपनी पुस्तक 'लोक साहित्य और संस्कृति' में कहते हैं कि "अमरीका और अफ्रीका की आदिम जातियों के लोक नाटक पर्याप्त विकसित और समृद्ध है।" वैश्विक पृष्ठभूमि पर वैश्विक रंगमंच में आदिवासी रंगमंच को स्वीकारा जा चुका है। उनके रंगमंच में होने वाले परिवर्तनों की सराहना भी की जा रही है। भारतीय रंगमंच में आदिवासी रंगमंच के सवाल को लोक नाट्यो से जोड़ दिया जाता है। जबकि दोनों का रूप, स्वरूप, प्रतिमान, शैली एकदम भिन्न है। जो आदिवासी रंगमंच के जीवन की मानसिकता को परिदृश्य करता है। वह लोक नाट्यो में समाहित नहीं होता लोक नाट्यों को केवल स्थानीय व भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर लोक जनमानस की शास्त्रीय शैली के रूप में स्वीकार्यता प्राप्त है। वही आदिवासी रंगमंच किसी तरह की रूढ़ि शैली व बंधी बंधायी परिपाटी से भिन्न है। वह रंगमंच में अपने ऐतिहासिक परिदृश्य को उकेर रहा है और वर्तमान में उस पर घटने वाली हर समस्या से उत्पन्न मनोस्थिति का चित्रण कर रहा है।

आदिवासी रंगमंच की शैली में प्रगाढ़ता के दर्शन है। वह मंच पर शब्द व अर्थ की अनुरूपता के साथ साथ अपनी जीवन शैली को भी रखता है। उसके मूल में मंच पर उसकी अपनी जिजीविषा है, उसका अपना स्वतंत्र विचार है। स्वतंत्र विचार के साथ सामूहिकता का प्रबल उद्देश्य मौजूद है। इस सही रूप को सूत्र में पिरो कर वह रंगमंच के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त बना रहा है। इस तरह की सामूहिक भरी वैचारिकी हिन्दी रंगमंच से आज तक नदारद है। व्यक्तिवादिता, स्वार्थपरकता, श्रेष्ठता जैसे विषयो को ही आदिवासी रंगमंच नहीं अपनाया है। यह आदिवासी रंगमंच के विकास में एक बाधा के समान है। इस बाध्य को तोड़ने का कार्य आदिवासी रंगमंच के माध्यम से किया जा रहा है। आदिवासी रंगमंच शास्त्रीयता के नियमो से एकदम इतर है। संस्कृत नाटकों की शास्त्रीयता को वर्तमान के प्रयोगधर्मी रंगमंच ने भी छोड़ कर नए ढंग, शैली से अपनी-अपनी धारा को विकसित किया है। उसी तर्ज पर हिन्दी रंगमंच के सम्मुख सवालोंनेमुख होता आदिवासी रंगमंच अपनी परिकल्पना को गढ़ कर नए निष्कर्ष दे रहा है।

विमर्श के प्रभाव स्वरूप और प्रकृति के लिए सचेत भाव रखने वाले अनिल रंजन भौमिक ने "स्वप्न दू: स्वप्न" नाटक लिखा। जिसमे वह वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आदिवासियों को खदेड़े जाने की और जंगलों को बर्बाद करने के दृश्य को उभारते हैं। विश्व में बसे सभी आदिवासी जंगल में रहते हैं, जंगल में उपजे संसाधनों से जीवन यापन करते हैं। यही स्थिति भारत में भी है। जंगल में बसे खनिज संसाधनों पर विश्व के स्वार्थवृत्ति समाज की नजर गढ़ी हुई है। वह आज तक भी जंगलों को अपने लोभ में काटते जा रहे हैं। जिसका सीधा प्रभाव आदिवासी समाज पर पड़ रहा है। उनको वहां से खदेड़ कर कहीं और जाने पर मजबूर किया जा रहा है। यही स्थिति भारत में भी हूबहू है। भौमिक जी अपने इस नाटक में आदिवासियों की वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यथास्थिति को बयां करते हैं।

**संदर्भ :-**

1. भौमिक, अनिल रंजन. (2017). स्वप्न- दुःस्वप्न. इलाहाबाद : समानांतर प्रकाशन.
2. उरांव, डॉ. प्रकाश चन्द्र. (1993). आदिम जनजातियां. रांची : बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान प्रकाशक.
3. गुप्ता, रमणिका. (संपा). (2012). आदिवासी लोक भाग -2. दिल्ली : शिल्पायन प्रकाशन.
4. प्रसाद, डॉ. दिनेश्वर. (1973). लोकसाहित्य और संस्कृति. इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन.
5. प्रसाद, डॉ. दिनेश्वर. (1973). लोकसाहित्य और संस्कृति. इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन.
6. प्रसाद, डॉ. दिनेश्वर. (1973). लोकसाहित्य और संस्कृति. इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन.

**फार्म - IV**

- |  |   |   |
|--|---|---|
| 1. प्रकाशन स्थान   | : | वाराणसी                                   |
| 2. प्रकाशन तिथि  | : | 01 जून, 2022                              |
| 3. मुद्रक का नाम   | : | सूर्या आफसेट                              |
| राष्ट्रीयता  | : | भारतीय                                    |
| पता  | : | 30, विवेकानंद कालोनी, मलदहिया, वाराणसी    |
| 4. प्रकाशक का नाम  | : | अजय परमार                                 |
| राष्ट्रीयता  | : | भारतीय                                    |
| पता  | : | बी.- 30/239, नगवां, लंका वाराणसी- 221005  |
| 5. संपादक का नाम   | : | अजय परमार                                 |
| राष्ट्रीयता  | : | भारतीय                                    |
| पता  | : | बी.- 30/239, नगवां, लंका वाराणसी - 221005 |
| 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र स्वामी हो तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत के अधिक का साझेदार या हिस्सेदार हों। | : | कोई नहीं                                  |

मैं, अजय परमार एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

01 जून, 2022

प्रकाशक का हस्ताक्षर

## व्हाट्सएप के सहारे फल-फूल रही फेक न्यूज की रोकथाम में सहायक है भारतीय संस्कृति

अरविंद कुमार\*

arvindkumar.mgahv@gmail.com

### शोध सारांश

विविधताओं से भरे भारत में लगभग हर धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं। हर धर्म के अनुयायियों की उपासना पद्धति भी अलग-अलग है। हर भारतीय अपने इतिहास की परंपराओं, गुरुओं एवं महानायकों के प्रेरक जीवन व्यक्तियों एवं धार्मिक ग्रंथों में निहित सत्य, मर्यादा, अहिंसा, शौर्य, त्याग, तपस्या, वीरता, साहस, न्याय पद्धति, देवी देवताओं एवं पूर्वजों के प्रति आस्था, रण-कौशल, मित्रता भाव, उत्सव एवं दुःख मनाने के संस्कार आदि से परिपूर्ण जीवन मूल्यों का सम्मान करता है। इसके विपरीत यदि किसी के द्वारा भारतीय परंपरा, आस्था एवं मातृभूमि के प्रति दुराग्रह की भावना का प्रदर्शन किया जाए तो जाहिर है कि प्रत्येक भारतीय द्वारा इसका विरोध किया जाना स्वाभाविक होगा। ऐसी परिस्थितियों में भारत के सनातनी मूल्य एवं संस्कार ऐसे अराजक भरे माहौल को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सहारे भारत की सांस्कृतिक विरासत को फेक न्यूज के जरिए अपमानित कर अराजक माहौल बनाने में सोशल मीडिया के व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म की मुख्य भूमिका है। भारत में सोशल मीडिया के इंटरमीडियटरी प्लेटफॉर्म पर भारत के संवैधानिक निकायों का नियंत्रण न होना भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों हेतु बड़ा खतरा है। फेक न्यूज के प्रसार को भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों एवं सोशल मीडिया के व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म के जरिए कम किए जाने के संबंध में विश्लेषण इस शोध पत्र में किया गया है।

**बीज शब्द :** फेक न्यूज, भारतीय संस्कृति, फेक न्यूज के कारक, दुष्प्रचार, वायरल न्यूज के कारक, वायरल समाचार, अप्रत्याशित खबर, अनपेक्षित खबर, स्तरहीन पत्रकारिता, भारत में व्हाट्सएप।

### प्रस्तावना

भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। भारत के हर राज्य एवं प्रदेश में अलग-अलग बोली एवं भाषा बोली और समझी जाती हैं। अलग-अलग राज्यों में भौगोलिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि के अनुकूल अलग-अलग परिधान एवं खान-पान का चलन है। भारतीय अपने इतिहास के शौर्य एवं धर्मानुकूल सभी आचरणों को अपनी भाषा एवं बोली से अभिव्यक्त करते हैं। यदि भारत के इतिहास का गंभीरता से अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि भारत की संस्कृति त्याग-तपस्या पर केंद्रित है न कि विलासिता पर। वसुधैव कुटुंबकम की भावना को चरितार्थ करते हुए अपना सब कुछ खोकर अपनी मातृभूमि को बचाना भारतीय संस्कृति का मूलभूत आधार है। इसी आधार पर भारत समूचे विश्व में एक विशिष्ट राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है।

भारत में धर्म, नीति और मूल्यों पर आधारित निर्णायक युद्धों का प्राचीन इतिहास रहा है। भारतीय संस्कृति पुनर्जन्म एवं कर्मों के सिद्धांतों पर आधारित है। भारत की सनातनी संस्कृति विगत अनेक वर्षों से

\* पीएच. डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

निरंतर चली आ रही है। हमारे पूर्वजों ने इस संस्कृति रूपी धरोहर को अपनी सर्वोच्च विरासत समझकर अपनी आगामी पीढ़ियों हेतु हमेशा इसे सुरक्षित रखा है। एक रिपोर्ट (वेब दुनिया : 2022) के अनुसार भारत में विदेशी आक्रांताओं एवं आक्रमणकारियों ने अपनी घिनौनी विस्तारवादी नीति के अनुपालन में विदेशी घृणित मूल्यों को स्थापित करने के उद्देश्य से हमारी सनातनी परंपरा के मूल्यों के विपरीत, जैसे-असत्य, फरेब, हिंसा, अविश्वसनीयता आदि जैसे दुर्गुणों को ढाल बना कर भारत की अस्मिता को चुनौती देते हुए हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को आहत करने का बार-बार प्रयत्न किया है। इस प्रकार विगत कई युगों तक की प्राचीन भारत से आधुनिक भारत बनने की संघर्ष भरी यात्रा में शनैःशनैः असत्य, फरेब, हिंसा, अविश्वसनीयता एवं ऐंद्रिय आस्वाद से परिपूर्ण विलासिता केंद्रित जीवन पद्धति का मूल्यांकन करने की सामर्थ्यता भी भारतीयों में विकसित हुई है। किंतु आज भी भारत की सांस्कृतिक विरासत, धर्म, परंपरा एवं उपासना पद्धति में किए गए अनेपक्षित एवं अप्रत्याशित गतिविधियों के जरिए भारत के लोगों को भ्रमाया जा सकता है। भारत के सुप्रसिद्ध पत्रकार राम बहादुर राय के द्वारा संपादित पुस्तक काली खबरों की कहानी (2010) का अवलोकन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि 1980-90 के दौर में आई पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति को भारत में बड़ी ही पूर्व नियोजित रूप से थोप दिया गया जिसके फलस्वरूप भारत के मूल संस्कारों के विपरीत ऐंद्रिय आस्वादन की लालसा का प्रस्फुटन खुले रूप से होने लगा। उपभोक्तावादी संस्कृति के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज में गतिविधियां आत्मगत (Subjectively) न होकर वस्तुगत (Objective) की भावना से की जाने लगी और उससे भी दुःखद बात यह कि इन गतिविधियों को सामाजिक वैद्यता मिलने लगी।

भारत की मूल परंपराओं, ग्रन्थों और वास्तविक साहित्यों को तोड़मरोड़ कर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु समाज में प्रस्तुत किए जाने की प्रक्रिया के फलस्वरूप अज्ञानतावश अनेकों भारतीय अपने सच्चे स्वरूप को भुलाकर और ईश्वर की महिमा पर अविश्वास करते हुये शास्त्रानुसार, जीवन को कल्याणकारी और सुखी बनाने वाले ज्ञान, कर्म और भक्ति के मार्गों को छोड़कर उपभोक्तावादी संस्कृति के तंत्र के अर्धसत्य एवं दुष्प्रचार के जाल में फंस कर रह गए हैं। राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने वाली भारतीय पत्रकारिता भी वर्तमान दौर की उपभोक्तावादी संस्कृति से नहीं बची। उपभोक्तावादी संस्कृति के तहत 1980-90 के दौर से चली आ रही पत्रकारिता के जरिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को आराजक माहौल निर्मित करने की स्वतंत्रता में रूपांतरित करते हुए अर्धसत्य, दुष्प्रचार एवं असत्य सूचना को फेक न्यूज के रूप में समाज को दिखाना भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों का विनाश है। भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रभावित पत्रकारिता में पत्रकारिता के गेट कीपिंग सिद्धांत से मुक्त सोशल मीडिया के विविध मध्यस्थ प्लेटफॉर्म प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन्हीं प्लेटफॉर्म में से एक प्लेटफॉर्म व्हाट्सएप है। व्हाट्सएप की मूल कंपनी फेसबुक है। फेसबुक के अनुसार व्हाट्सएप एक इंस्टेंट मैसेजिंग एप है जो कि पूरी दुनिया में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की बातचीत करने एवं उनके मध्य आपसी विचार एवं भावनाओं को साझा करने के लिए बना है। किंतु एक रिपोर्ट (पत्रिका न्यूज:2022) के मुताबिक भारत में व्हाट्सएप का प्रयोग पूरी दुनिया से अलग और धार्मिक संदेशों, अप्रत्याशित एवं अनपेक्षित संदेशों, शुभ प्रभात एवं शुभ रात्रि से भरे संदेशों एवं निजी संबंधों के अंतर्गत की

जाने वाली अत्यंत गोपनीय गतिविधियों के लिए किया जाता है। 37 प्रतिशत भारतीय व्हाट्सएप के बिना अवसाद जैसी स्थिति का अनुभव करते हैं। अब विचारणीय होगा कि यदि इस प्लेटफॉर्म पर एक भी अराजक खबर (फेक न्यूज) प्रसारित होगी तो वह भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को क्षण भर में ध्वस्त कर सकने में सक्षम होगी। ऐसी विकट परिस्थितियों से मुक्ति पाने हेतु हमें यथा संभावित सार्थक मार्ग खोजने का प्रयास करना चाहिए।

### तथ्यों की विवेचना

यद्यपि अर्धसत्य सूचना एवं फेक न्यूज भारतीय संस्कृति का भाग है तथापि इसका निदान केवल भारत के मूल्यों से ही संभव है। भारत का इतिहास को अवलोकन करने के उपरांत ऐसे कई दृष्टांत मिलते हैं जो कि अर्धसत्य पर केंद्रित हैं। यूनेस्को द्वारा प्रकाशित पत्रकारिता शिक्षण एवं प्रशिक्षण संबंधी हस्तपुस्तिका (2018) के अनुसार जब अर्धसत्य एवं असत्य घटनाओं को किसी उपयुक्त व्यक्ति द्वारा दिखाया एवं सुनाया जाएगा तब वह समाचार बन जाता है या यू कहें कि वह फेकन्यूज बन जाती है। समाचार अपने आप में ही प्रामाणिक होता है अतः लोग उसकी प्रामाणिकता पर अपने-अपने जीवन मूल्यों के आधार पर विश्वास करते हैं। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित ग्रंथ “महाभारत” में वर्णित कौरवों और पांडवों के युद्ध के अनेकों दृष्टांतों में एक दृष्टांत के अनुसार धर्मात्मा युधिष्ठिर अपने गुरु द्रोणाचार्य को समाचार अथवा संदेश देते हैं कि ‘अश्वत्थामा हतो हतः इति नरो वा कुंजरो वा’ अर्थात् अश्वत्थामा मर गया किंतु मुझे पता नहीं कि वह नर था या हाथी। अश्वत्थामा मर गया सुनते ही गुरु द्रोण अपनी समाधि मुद्रा में आ जाते हैं तत्पश्चात उनकी मृत्यु हो जाती है। वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए यहां धर्मात्मा युधिष्ठिर द्वारा समाचार के रूप में बताए गए इस सत्य तथ्य को फेकन्यूज कहा जाना अप्रासंगिक नहीं होगा। यदि इसका विश्लेषण किया जाए तो ज्ञात होता है कि गुरु द्रोण अपने शिष्य युधिष्ठिर के धर्माचरण पर अत्यंत विश्वास करते थे। उनको विश्वास था कि युधिष्ठिर कभी असत्य नहीं कहेंगे। गुरु द्रोण अपने पुत्र अश्वत्थामा के प्रति इतने आशक्त हो गए थे कि युधिष्ठिर द्वारा कहे गए पूरे सत्य बिना सुने ही अर्थात् अर्धसत्य को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया दे दी। कहने का तात्पर्य है कि यदि सत्य तथ्यों की प्रस्तुति पर पूर्णतः विचार न किया जाए तो वह अर्धसत्य का रूप धारण कर लेता है और ऐसे में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है परिणाम स्वरूप अराजक माहौल बन सकता है। गुरु द्रोण का पुत्र मोह भारतीय मूल्यों के विपरीत है। अपने पुत्र के प्रति आशक्ति गुरु द्रोण की मृत्यु का कारण बनी। अतः भारत में कई सदियों से चली आ रही इस तरह की अर्धसत्य अथवा दुष्प्रचार जो कि समाचार के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, उन्हें उचित रूप से समझने एवं विचार-विमर्श करने की अत्यंत आवश्यकता है। केवल भारतीय संस्कृति के मूल्यों द्वारा इस तरह की भांति-भांति फेक न्यूज को निबटाया जा सकता है।

जून 2021 में टाइम्स ऑफ इंडिया में Fake news and social media शीर्षक से छपे लेख का अवलोकन करने पर कहा जा सकता है कि भारत की गौरवशाली संस्कृति में हेर-फेर की जाने वाली अनपेक्षित एवं अप्रत्याशित खबरों से भारत की भावुक जनता को दिग्भ्रमित किया जाना आसान है। उपभोक्तावादी

संस्कृति के अंतर्गत नागरिक पत्रकारिता को सुंदर लोकतांत्रिक मुखौटा पहनाकर कर सोशल मीडिया के तमाम मध्यस्थ डिजिटल प्लेटफॉर्म इन्हीं अप्रत्याशित गतिविधियों के प्रसार की गति को अत्यंत विस्फोटक रूप से बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। इक्कीसवीं सदी के इस पोस्ट ट्रुथ युग में विकसित राष्ट्र से विकासशील राष्ट्र तक सभी फेकन्यूज से पीड़ित हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध तमाम वेबसाइटों पर उपलब्ध पश्चिम देशों के द्वारा निर्गत आंकड़ों के अनुसार डिजिटल साक्षरता का आभाव होने के कारण पूरी दुनिया में फेक न्यूज के स्थान में भारत अग्रगण्य है। प्रायः दैनिक अखबारों में लेख आता है कि फेक न्यूज से भारत का लोकतंत्र खतरे में है। किंतु इस समस्या का समाधान भारत की संस्कृति एवं परंपरा पर नैतिकता की लाठी के सहारे अवलंबित मानवीय मूल्यों की आत्मगत पद्धति से किया जाना संभव है।

तथ्यों को वास्तविकता के धरातल पर जब तक कसा नहीं जाएगा तब तक हम उसे विश्वसनीय नहीं मान सकते। दीप्रिंट न्यूज पोर्टल पर उपलब्ध लेख (आटो फीड : 2022)के अनुसार दुर्भाग्य से, हमारे देश में, जो इतिहास हम पर थोपा गया है, वह पश्चिम का दुष्प्रचार है। नए संचार माध्यमों के डिजिटल प्लेटफॉर्म के द्वारा उपभोक्तावादी संस्कृति के अंतर्गत भारतीयों की भावना से खेलते हुए केवल पैसे कमाने के उद्देश्य से प्रपंचों को तीव्रता से फैलाया जाता है जो कि फेकन्यूज का महत्वपूर्ण कारक है। इसी कारण हमारे चारों तरफ दुराचार, अन्य अधर्मी कर्मों और पाखंडियों के पर्दाफाश होने के समाचार निरंतर प्राप्त होते रहते हैं। इस दृष्टि से पिछले कुछ वर्षों को देखा जाए तो स्वतः ही परिलक्षित होता है कि भ्रामक खबरें अपने अप्रत्याशित एवं सामाजिक महत्वों के तत्वों से परिपूर्ण होने के नाते कहीं ज्यादा तीव्र गति से समाज के हर तबके में फैल जाती हैं जो कि जनमानस के भीतर काफी आक्रोश भरा वातावरण तैयार करने में सक्षम होती हैं। इसी बात को ध्यान रखते हुए फूट डालो राज्य करो के उद्देश्य से कुछ असामाजिक तत्वों के द्वारा भारत की सांस्कृतिक विरासत से संबंधित अप्रत्याशित खबरों को फैला कर जनता के समक्ष भाष्य (Narrative) खड़ा करते हैं। समाज में नफरत फैलाने के उद्देश्य से फैलाया गया भाष्य भारतीय राजनीति की धुरी बन जाती है और समाज अलग-अलग टुकड़ों में बंट जाता है।

अक्सर दुष्प्रचार जानबूझ कर किया जाता है। वर्तमान परिस्थितियों के समाचारों पर विचार करने के उपरांत ज्ञात होता है कि भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों, एजेंसियों और आतताइयों के द्वारा अपने निजी लाभ हेतु सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दुष्प्रचार किया जाता है और देखते ही देखते यह दुष्प्रचार रूपी फेक न्यूज राष्ट्रहित की दृष्टि से एक सामाजिक महत्व की सूचना बन कर भारतीय जनमानस में निर्णायक जनमत बन जाता है। यह कहना उचित होगा कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, जिस पर हर भारतीय को गर्व की अनुभूति होती है, उसे बड़ी ही चालाकी से इसके विविध आयामों से छेड़छाड़ कर भारतीय राजनीति फलती फूलती है। भारत के विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता सोशल मीडिया के मध्यस्थ प्लेटफॉर्म के साथ-साथ व्हाट्सएप पर संदेशों को भेज कर अपनी छवि एवं लोकप्रियता बनाते हैं।

स्टेटिस्टा वेबसाइट (2022) के अनुसार सोशल मीडिया के डिजिटल प्लेटफॉर्म के संबंध में भारत में व्हाट्सएप को वर्ष 2009 में आई.ओ.एस संस्करण केवल लॉच किया गया था। वर्ष 2010 में व्हाट्सएप का ऐंड्रोइड संस्करण का उदघाटन हुआ। पूरी दुनिया में केवल 4 वर्षों (2010 से 2014) में व्हाट्सएप ने 20 करोड़ से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं के रूप में लोकप्रिय मैसेंजर एप के रूप में ख्याति प्राप्त की। व्हाट्सएप की लोकप्रियता को देखते हुए फेसबुक ने इसे 2014 में 1900 करोड़ डॉलर में खरीद लिया। आज केवल भारत में व्हाट्सएप के सबसे अधिक 49 करोड़ उपयोगकर्ता हैं। भारत में हर 3 स्मार्ट फोन में से 2 फोन में व्हाट्सएप का उपयोग किया जाता है। 12 नवंबर 2018 को बी.बी.सी. (2018) के द्वारा किए गए शोध से ज्ञात होता है कि भारत में सबसे अधिक फेक न्यूज धर्म एवं राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि की होती है। डिजिटल साक्षरता एवं भारत के मानवीय मूल्यों के आभाव के कारण व्हाट्सएप के जरिए लोग अप्रामाणिक सूचनाओं को अपने संपर्क में साझा करते हैं और देखते ही देखते अप्रत्याशित, अनपेक्षित एवं सामाजिक महत्व से संबंधित सूचना वायरल अर्थात् अधिक से अधिक साझा होने लगती है।

अक्सर देखा गया है कि चुनावों के दौरान भारत के विभिन्न दलों के प्रतिनिधि जनता के समक्ष छवि को धूमिल करने के उद्देश्य से अर्धसत्य का प्रसार समाज में करते हैं। इस दौरान पक्ष अथवा विपक्ष के नेता के द्वारा की गई गतिविधियों के वीडियो को तोड़मरोड़ कर अनपेक्षित रूप से बनाकर जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। दिनांक 4 जुलाई 2022 को पत्रिका अखबार में छपी रिपोर्ट के अनुसार भारतीय औसतन 4.7 घंटे रोजाना मोबाइल में व्हाट्सएप सहित विविध एप में व्यतीत करते हैं। चुनावी अभियान के दौरान सभी भारतीय मूल्यों के अनुरूप अनैतिक भरे कार्य व्हाट्सएप के जरिए संभव हो पाता है। किसी भी सूचना की सत्यता को बिना जाने उसे केवल एक मात्र व्यक्ति को फॉरवर्ड कर देने से देश में फेक न्यूज को निर्मित करने एवं प्रसार करने में प्रत्येक भारतीय की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। किसी भी खबर अथवा सूचना को आगे फॉरवर्ड करने से पहले व्यक्ति को विचार करना चाहिए कि संबंधित खबर को साझा करने के परिणाम किस प्रकार के हो सकते हैं। डिजिटल दुनिया के वर्तमान युग में स्मार्ट फोन का उपयोग कर रहे उपयोगकर्ताओं को सूचनाओं के प्रभाव की समझ की जिम्मेदारी का निर्वहन करने के उपरांत जान बूझ कर फैलाई गई फेक न्यूज का प्रसार कम किया जा सकता है।

इंडियन फैक्ट चेकिंग वेबसाइट बूम के संस्थापक एवं टीवी पत्रकार गोविंदराज इथिराज के अनुसार पूरी दुनिया में भारत राष्ट्र में सबसे अधिक इंटरनेट का अधिकतम प्रयोग किया जाता है और दिन-प्रतिदिन इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है। वे कहते हैं कि भारत में इंटरनेट उपयोग कर रहे बहुसंख्यक लोग इंटरनेट से ज्यादा व्हाट्सएप से परिचित हैं। व्हाट्सएप के द्वारा निर्गत डाटा विश्लेषण के परिणाम को देखने से ज्ञात होता है कि भारत में व्हाट्सएप का प्रयोग दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भांति-भांति प्रकार की गतिविधियों एवं क्रिया-कलापों के लिए किया जाता है। भारतीय व्हाट्सएप के जरिए इमेज, वीडियो एवं टेक्स्ट से भरे संदेशों को अपने अत्यंत व्यक्तिगत कार्यों के अंतर्गत संबंधित को भेजते हैं। पूरी दुनिया में सबसे अधिक संदेशों को

फॉरवर्ड भारतीय करते हैं अर्थात अधिकतम भारतीय व्हाट्सएप पर संदेशों अथवा सूचनाओं का सृजन न करके उन्हें प्राप्त संदेशों को फॉरवर्ड करता है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें डिजिटल संसाधनों के विविध प्रयोगों को सीखने में बहुसंख्यक भारतीय अभी प्रारम्भिक अवस्था में हैं। व्हाट्सएप द्वारा निर्गत डाटा विश्लेषण के अनुसार पूरी दुनिया में भारतीयों के द्वारा हंसी-मजाक से भरे सामाग्रियों (मीम्स) का प्रचार-प्रसार व्हाट्सएप पर सबसे अधिक किया जाता है। यही कारण है कि सोशल मीडिया के विविध प्लेटफॉर्मों पर भारतीयों द्वारा सर्वाधिक संख्या में नित्य दिन की जा रही गतिविधियों से डिजिटल कंपनियों के हो रहे लाभ के चलते ही कंपनियाँ फेक न्यूज के प्रसार को भारत में रोकने हेतु प्रयास नहीं कर रही हैं।

पूरी दुनिया में व्हाट्सएप के 200 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं। व्हाट्सएप में संदेशों को इन्क्रिप्टेड तकनीक से भेजा जाता है जिसके तहत संदेशों को सेंडर और रिसीवर के अतिरिक्त कोई भी नहीं पढ़ सकता है। अतः व्हाट्सएप के आधिकारिक बयान के अनुसार किसी भी सामाग्री को ब्लॉक करना उसकी नीति में नहीं है। अधिकतम भारतीयों को लगता है कि व्हाट्सएप हंसी-मजाक से भरे संदेशों (मीम्स), चमत्कृत कर देने वाले धार्मिक संदेशों, अप्रत्याशित एवं अनपेक्षित सामाग्रियों को फॉरवर्ड करने के लिए ही बना है। समाज के लिए हानिकारक एवं संवेदनशील सामाग्रियों को वायरल होने से रोकने के लिए व्हाट्सएप कंपनी ने संदेश अथवा सूचना को एक बार में केवल पाँच व्हाट्सएप चैट को फॉरवर्ड करने की अभूतपूर्व व्यवस्था बनाई है। कंपनी के मुताबिक इससे फॉरवर्ड किए जाने वाली सूचनाओं एवं सामाग्रियों में 25 प्रतिशत की गिरावट आई है। व्हाट्सएप की मूल कंपनी फेसबुक के अनुसार भारत में फेक न्यूज के प्रसार को रोकने हेतु उसने व्हाट्सएप चैट को डिजिटल बाजार में लाया था किंतु वर्तमान परिस्थितियाँ बताती हैं कि व्हाट्सएप की भूमिका फेक न्यूज को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत प्रभावी है। इस तरह भारत में फेक न्यूज के प्रसार के संकट का सबसे प्रमुख माध्यम ऑनलाइन व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म है।

अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी रॉयटर्स की आधिकारिक वेबसाइट पर 29 नवंबर 2019 को John Geddie एवं Fathin Ungku के द्वारा छपे लेख के अनुसार वर्ष 2019 के प्रारम्भिक दिनों में व्हाट्सएप की मूल कंपनी फेसबुक ने पूरे एशिया में चुनाव के दौरान फेसबुक पर लोगों के द्वारा की जाने वाली निंदनीय पोस्ट, अभद्र भाषा एवं संबंधित देश की मतदाता की सुरक्षा के लिए सिंगापुर में एक कार्यालय की स्थापना की थी, जिससे मर्यादाहीन एवं निंदनीय सामाग्रियों को रोकने की दिशा में उसके द्वारा सार्थक प्रयास किया जा सके किंतु भारत में इससे कोई सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिले। 2016 में अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान रूसी एजेंसियों ने अमेरिकी नागरिकों के फेसबुक एकाउंटों की जानकारी लेने के पश्चात अमेरिका में फेकन्यूज एवं भ्रामक सामाग्री फैलाकर चुनाव को प्रभावित करने का प्रयास किया था। चुनाव अभियानों के दौरान श्रीलंका के धार्मिक मामलों में हुए हिंसा की भ्रामक प्रस्तुति से परिपूर्ण संस्थागत दुष्प्रचारों से ब्राजील एवं मैक्सिको देश भी प्रभावित किए गए थे। सोशल मीडिया के प्रतिनिधि ऐसे मामलों को रोकने में असफल हुए थे। भारत की नियामक संस्थाओं के प्रतिनिधि व्हाट्सएप सहित सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

को उनके संबंधित प्लेटफॉर्म पर प्रसारित किए जाने वाली फेकन्यूज के संबंध में कई बार कानूनी कार्यवाही करने संबंधी पत्र लिख चुके हैं।

कैलीफोर्निया के डेली न्यूज एजेंसी के लॉस एंजेल टाइम्स में 2019 में छपे लेख के अनुसार व्हाट्सएप के आधिकारिक प्रवक्ता कार्ल वूग ने कहा कि व्हाट्सएप ने फेक न्यूज के प्रसार पर लगाम लगाने के उद्देश्य से विशेषज्ञों से बातचीत की। सार्थक बातचीत में दी गई सिफारिशों के परिणाम स्वरूप कहा गया कि व्यापक स्तर पर फेकन्यूज एवं दुष्प्रचार संबंधी सूचनाओं को पहचाने हेतु दी गई डिजिटल शिक्षा से ऐसे मामलों में कमी लाई जा सकती है। वर्ष 2018 में फ़ैक्टचेकिंग वेबसाइट “बूम” का व्हाट्सएप ने अपनी व्यावसायिक साझेदारी की थी जिसके अंतर्गत संदिग्ध संदेशों की जांच पड़ताल के लिए एक हॉटलाइन नंबर भी निर्गत किया गया था। सिंगापुर की समाचार एजेंसी लॉस एंजिल्स टाइम्स के रिपोर्टर शशांक बंगाली बताते हैं कि नित्य दिन इन नंबरों पर 25 से 30 संदिग्ध संदेश व्हाट्सएप को भेजे जाते थे।

सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसाइटी के कार्यकारी निदेशक सुनील अब्राहम के अनुसार फेक न्यूज की समस्या का स्वरूप वृहद है जिससे निबटने के लिए हमें व्यवस्थित सुधार करने की आवश्यकता है। अब्राहम के अनुसार सभी सोशल मीडिया कंपनियों को उनके एप्स एवं वेबसाइटों पर फेकन्यूज को पहचानने संबंधी एजुकेशनल टूल का निर्माण कर अपने अपने प्लेटफॉर्म पर लगाने की आवश्यकता है। साथ ही संभावित फेक न्यूज और संदेशों को उचित लेबल लगा देने की आंतरिक व्यवस्था भी व्हाट्सएप में होनी चाहिए, जिससे असत्यापित सामग्रियों को लोगों के द्वारा आसानी से पहचाना जा सके। इस प्रकार फेकन्यूज के प्रसार में बहुत हद तक कमी लाई जा सकती है।

### निष्कर्ष

भारत में फेक न्यूज की संस्कृति पुरानी है किन्तु समसामयिक प्रौद्योगिकी से परिपूर्ण डिजिटल माध्यमों से फेक न्यूज का प्रसार एवं प्रभाव अत्यंत तीव्र एवं भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को विनाश करने वाला हो गया है। इस विनाश को रोकने हेतु भारत के मूल्यों, परंपराओं एवं संस्कृतियों के धार्मिक अर्थों को आत्मसात करने के पश्चात उचित और अनुचित का निर्णय लेने की क्षमता एवं व्हाट्सएप सहित सोशल मीडिया के सभी मध्यस्थ प्लेटफॉर्म के द्वारा किए गए उचित प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत में फैल रहे फेक न्यूज संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा के लिए भारत प्रशासन द्वारा व्हाट्सएप कंपनी को उचित भारतीय कानून नियामक व्यवस्था के अधीन लाने का प्रयास सर्वाधिक सराहनीय कदम होगा।

### संदर्भ :-

जोशी, अ. (2022, जुलाई 3). *sanatan-dharma-history*. Retrieved जुलाई 8, 2022, from [https://hindi.webdunia.com: https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/british-and-mughal-empire-in-india-114122900014\\_11.html](https://hindi.webdunia.com: https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/british-and-mughal-empire-in-india-114122900014_11.html)

- डेका, प. (2021, जून 20). *readers blog*. Retrieved जुलाई 1, 2022, from <https://timesofindia.indiatimes.com:https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/world-of-words/fake-news-and-social-media-33975/>
- दीप्रिंट. (n.d.). *india*. Retrieved जुलाई 5, 2022, from <https://hindi.theprint.in:https://hindi.theprint.in/india/हम-पर-थोपा-गया-इतिहास-पञ्च/325070/>
- न्यूज, पत्रिका (2022, जुलाई 4). *jaipur-news*. Retrieved जुलाई 8, 2022, from <https://www.patrika.com:https://www.patrika.com/jaipur-news/father-of-the-cellphone-has-a-message-for-people-glued-to-devices-7631178/>
- पांडे, विश्वंभर नाथ. (1996). *भारत और मानव संस्कृति*. दिल्ली: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार.
- बंगाली, शशांक. (n.d.). *How WhatsApp is battling misinformation in India, where 'fake news is part of our culture'*. Retrieved जुलाई 1, 2022, from <https://www.latimes.com/:https://www.latimes.com/world/la-fg-india-whatsapp-2019-story.html>
- बीबीसी. (2018, नवंबर 12). *Beyond Fake News*. Retrieved जुलाई 2, 2022, from <https://www.bbc.com:https://www.bbc.com/hindi/india-46171965>
- राय, राम बहादुर. (2010). *काली खबरों की कहानी*. नई दिल्ली: रेमधाव प्रकाशन.
- विकीपीडिया. (n.d.). *Subjectivity*. Retrieved जून 29, 2022, from <https://en.wikipedia.org:https://en.wikipedia.org/wiki/Subjectivity>
- वेदव्यास. सम्पूर्ण महाभारत. गीता प्रेस गोरखपुर.
- व्हाट्सएप (2022, मार्च 10). *Privacy-policy*. Retrieved जून 8, 2022, from <https://www.whatsapp.com:https://www.whatsapp.com/legal/privacy-policy-eea#:~:text=if%20the%20recipient's%20device%20is,push%20notification%20to%20the%20device.>
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.). <https://indianculture.gov.in/hi>. Retrieved जुलाई 2, 2022, from <https://indianculture.gov.in/hi>
- Ceci, L. (2022, मई 25). *statistics*. Retrieved जुलाई 2, 2022, from [www.statista.com:https://www.statista.com/statistics/289778/countries-with-the-most-facebook-users](http://www.statista.com:https://www.statista.com/statistics/289778/countries-with-the-most-facebook-users)
- John Geddie, Fathin Ungku (2019, नवंबर 29). *article*. Retrieved जुलाई 1, 2022, from <https://www.reuters.com:https://www.reuters.com/article/us-singapore-fakenews-idUSKBN1Y3093>
- Posetti, J. (2018). *fight fake news*. Retrieved जुलाई 7, 2022, from <https://en.unesco.org:https://en.unesco.org/fightfakenews>
- wikipedia. (n.d.). *Objectivity*. Retrieved जून 29, 2022, from [https://en.wikipedia.org:https://en.wikipedia.org/wiki/Objectivity\\_\(philosophy\)](https://en.wikipedia.org:https://en.wikipedia.org/wiki/Objectivity_(philosophy))

## Religionism and Domestic Violence in Muslim Communities: Perceptual Analysis of Triple Talaq Act 2019

Aakriti Dewangan\*      Dr. Archana Yadav†      Prof. Arvind P Bhanu‡  
aakritidewangan92@gmail.com      archana.astha@gmail.com      apbhanu@amity.edu

### Abstract

*Domestic violence is such a silent scar which does not bleed. Triple Talaq, an instantaneous type of divorce prohibited in all the Muslim majority countries, which was prevailing in India till the enactment of Triple Talaq Act 2019 leaves women helpless in all terms. The author intends to bring forth post legislation changes in the life of Muslim women in terms of domestic violence cases in lieu of Triple Talaq, by employing mixed method research methodology and analyze the opinion of Muslim women regarding the implications of this Act in terms of domestic violence. In the sequence, the first section deals with the pathetic condition of Muslim women bearing domestic violence in lieu of Triple Talaq, the actual procedure of Quranic form of divorce and the Triple Talaq Act 2019 in detail and last one analyzes the opinion of Muslim women regarding the same. The findings of the paper conclude that no major difference has been witnessed.*

**Keynotes:** Women, Divorce, Muslim, Violence

### I. Introduction

Domestic violence is such an abuse which the people especially women silently bears due to fear of “log kya kahenge” i.e., social stigma. But this term has a very major impact on the life of victim and their environs. This abuse mainly resorted to women because of the mind-set that women are weak than man biologically, so they become

---

\* Pursuing PhD at Department of Social Work in Guru Ghasidas Central University, Bilaspur

† Assistant Professor, Department of Social Work, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur

‡ Professor of Law and Research, Actg. Director, Amity School of Law, Delhi.

easy target for men (Nirban, 2019). This scenario gives the women a secondary status in the household and society (Siddiqui, 2013). Approximately, one in three women worldwide has recognized domestic abuse in many forms and this data is still on the upsurge (Bakir, 2021).

Bharat is also a major victim of domestic violence, due to the prevalence of old customs and values. Further, women become after marriage totally dependent on their husbands socially and economically. The consequences of all these that for every fault in the household, women are to be blamed without any investigation and are thereby suppressed (Nirban, 2019). This domestic violence is mainly prevalent among the age group of women ranging from 15 to 44 years (Kaur & Garg, 2008). While Uttar Pradesh and Bihar topped the list in the matter of domestic violence, but no one corner is left in the Bharat, where women are not facing this violence, be it in a very small intensity and amount.

Domestic violence is not restricted towards any one religion or caste; in fact it is widespread worldwide. One of such community who is facing one form of domestic abuse which is not a violence itself as per their religion but demand has been raised by women from all over the Bharat to take action against it. The community is Muslim and the abuse is the prevalence of instantaneous form of divorce i.e., *Talaq-e-biddat* (Triple Talaq). This form of divorce make the Muslim women helpless in all terms i.e., physically, emotionally, socially etc. because the community generally don't pay attention towards their education and thereby they are financially helpless. The marital bond breaks down instantaneously on uttering the word *Talaq* thrice by respective husband. The women remained always in fear regarding this form of divorce till the enactment of Triple Talaq Act 2019 or can be properly called as *Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Act 2019*.

Tribal areas and people are known for their simplicity with having the concept of equality, but due to modernization and urbanization, this abuse has taken steps towards that area also. Chhattisgarh is one of them. Today, the state is excelling in all terms of development, but simultaneously, domestic violence is also taking roots there promptly. The Muslim women in these areas also were facing the above said abuse.

The Act although came for the protection of Muslim women from this type of abuse, but with certain loopholes, which can in turn make the plight of Muslim women miserable (Pandiaraj, 2018). So, the paper has analysed the opinions of Muslim women of Durg-Bhilai city or can be famously called as Twin city regarding the legislation in terms of domestic violence and its implications on them. The result has come about to be negative i.e., the women of Chhattisgarh Muslim community are not happy with the interference of the Government and it can further lead to miserable life of women.

## II. Actual Procedure of Divorce among Muslim community

Khan (2014) has described the procedure of divorce among Muslim community as per the Holy Book "*Pavitra Quran*". It can be divided into three types –

1. *Talaq-e-ahasan*
2. *Talaq-e-hasan*
3. *Talaq-e-biddat*

It can be described as –

Although, the concept of divorce is most hatred to God (Allah), but if certain conditions arrives that it is impossible to live with one another, then God has instructed to depart away on good note.

Upon non satisfaction of marital life, the husband only has a right to give divorce but it is a very lengthy procedure. First, the husband utter the word *Talaq* once to the wife in front of two witnesses, one from each side, which is followed by three months of waiting period called as *iddat*. It requires the wife to reside with the husband only so that reconciliation happens, but intimacy is prohibited. Before the completion of *iddat* period, if husband changes their mind or consummation happens, then those utterances of word will be considered as void and marital life remain as it is. But if husband remains abide to his decision, then divorce happens with proper give and take of dower and no malice. This will be their first divorce or can be called as "*pehla talaq*". After that, if again the couple wants to reunite, then they can by performing marriage again with proper give and take of dower. But if again, husband wants to break the marital tie,

he can by performing the same procedure again and the second divorce happens called as “*dusra talaq*”. There is an endowment of third divorce also following the same procedure and this will be their third and final divorce called as “*teen talaq*”. After that, no patch up can happen normally, exception is performing *halala* i.e., woman marry another man, then if coincidentally that husband also gives divorce to her then that woman can marry to her previous husband. This form of divorce has been referred as *Talaq-e-ahasan*.

In *Talaq-e-hasan*, the same procedure goes, the only difference is of duration of *iddat*, which is of one month, instead of three months as in former type.

Both the above discussed form of divorce has been approved by Quran, but the third type of divorce has been unapproved by Islam, i.e., *Talaq-e-biddat*, and is more prevalent in Bharat, because the country belongs to majority of Sunnis (one of the ethnicity of Muslim community), who follows and approves this form of divorce. In this, there is no *iddat* period, the word *Talaq* has been pronounced simultaneously in one go.

### III. Triple Talaq Act 2019

#### 1. Background

The *Talaq-e-biddat* form of divorce is not only against the Quran, but also is against the humanity. A woman use to be thrown out of the home at any time, and the condition become worse when she is with her children. She became psychologically and financially helpless as they either know that this form of divorce is as per Quran or Spiritual leaders and family support this. In both cases, women bear it silently. But certain voices have been raised from time to time.

The case of Shah Bano has become a centre of attraction in 1985, when she filed a case against her husband Mohammad Ahmed Khan regarding compensation beyond *iddat* period. Her husband had betrayed her by pronouncing the word *Talaq* thrice and provided compensation only for the said *iddat* period as per Quran. She won the case with Rs. 250 per month as compensation in lieu of Article 125 which is a secular law

(Pandiaraj, 2018; Kundu, 2018 and Qureshi, 2019), and it lead to the enactment of Muslim women (Protection of Rights on Divorce Act) 1986.

Similarly, from time to time, voices raised by various Muslim women against this unapproved form of divorce like Daniel Latifi, Shahnaz Karim Sheikh, etc... Bhartiya Muslim Mahila Andolan (BMMA) has also raised this issue by various measures like voting, petition, making Nikahnamas in favour of female, judging separately the cases, giving training to Muslim women regarding Quran versus, etc...

Further, an organization of Muslim women's in Mumbai named Awaz-e-Niswaan i.e., voice of Women revealed that 65% cases of divorce among Muslims are the consequences of instant divorce (Islam, 2021)

Again, the case of Triple Talaq has emerged with the case of Shayara Bano in 2016, who petitioned to the Apex Court regarding banning of three ill practices in Islam i.e., Polygamy, Halala and Triple Talaq. Also, a mass petition has been organized by the BMMA to ban this practice, 5000 signatures has been collected and the association has also found out that 92% of the Muslim women are against this ill practice. (Islam, 2021)

All these cases are a proof of domestic violence tolerated by Muslim women in lieu of religion. One of the reasons of its prevalence is patriarchy and second is the Hanafi school of Islam which approves this malpractice. And this practice has a very major bad impact on the lives of Muslim women. One experience of Khadija Banu, who is the secretary of Rokeya Nari Unnayan Samiti, West Bengal can be discussed here. She has worked in the heavily Muslim dominated district – Murshidabad - with divorced Muslim women and their plight. According to her, the total number of Muslim women who are divorced in this district is approximately one lakh, and all through the *Talaq-e-biddat*. This type of violence creates so much suffering to the women that Murshidabad has been witnessed at the top position in the West Bengal in terms of illegal trafficking in West Bengal and it has a direct connection with the divorced Muslim women because they find it this business as easy to earn livelihood and easily got caught by the traffickers. (Islam, 2021)

## 2. About

The famously called Triple Talaq Act 2019 has been enacted to curb the practice of instantaneous divorce among Muslim community, and not the actual procedure of divorce i.e., *Talaq-e-ahasan* and *Talaq-e-hasan*.

Its provisions can be understand as follows –

1. Divorce by instantaneous means has been considered as illegal, void and a crime
2. This offence is followed by 3 years of imprisonment with fine as decided by magistrate
3. There is a provision of subsistence allowance to deceased women by husband
4. Custody of minor children to mother
5. The offence has been considered as cognizable (arrest without warrant) with a condition that complaint should be made by deceased women herself or her blood and marriage relatives
6. The offence has been made compoundable and bailable but only with the permission of Magistrate and consent of Wife (Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Act 2019 (20))

## IV. Rationale of the Study

Domestic violence is an abuse which has been always witnessed in every part of society worldwide but has always been ignored. It may be due to societal pressure that no one stands for this form of violence in one go and majority of the women suffers. Triple Talaq is such a form of abuse which has not been taken under the purview of domestic violence till date. Very few or none of the studies have thought about Triple Talaq practice in such a way. There is a need to look forward from this perspective. Further, to combat this practice, the Triple Talaq Act 2019 has been enacted, but as per literatures review it has been found out that certain section of Muslim community itself feels this Act as not lessening the burden on Muslim women, rather enhances it. Thereby, it can enhance the domestic violence cases embedded in it. So, there is a

urgent need to analyse the provisions of Triple Talaq Act and the discriminations exist in it.

### V. Objective

1. To analyse the opinions of Muslim women of Durg-Bhilai city (Twin city) regarding the legislation in terms of domestic violence and its implications on them
2. To analyse the provisions of Triple Talaq Act 2019

### VI. Methodology

The paper has opted for mixed method research methodology. Questionnaire as a tool has been utilized via Stratified Random sampling procedure to gather the opinions of Muslim women regarding the Act 2019 so as to mitigate domestic violence embedded in it and secondary data based analysis of the literatures has been opted to analyse the provisions of the said Act.

The total population of the Durg-Bhilai is 3,343,872, comprising 1,682,101 males and 1,661,771 females. Among these, Muslims contribute 6% of the total population i.e., 16119, comprising 8239 males and 7880 females (*Census 2011*).

This study gain the opinions of Muslim married females ranging from age 15 to 60 years and the sample size came out to be 367, by taking margin of error 5%, confidence interval 95% and response distribution 50%.

The Twin city has been selected for the study because the most literate population resides in this area. Further, certain areas in the city are known as the Muslim areas i.e., Kasaridih, Supela and Takiyapara.

### VII. Opinion of Muslim women of Twin City regarding the Act 2019

Some of the Muslim women were not acquainted fully with the provisions of this Act, so they were first told about it in detail, then the questionnaire has been presented before them. It consist of questions and the respective replies are as follows –

1. Are you in favour of the clause which prescribes 3 years of imprisonment to husband upon committing *Talaq-e-biddat*?
  - a. Yes - 161
  - b. No - 206
2. Are you in favour of the clause which says that the offence is cognizable?
  - a. Yes – 151
  - b. No - 216
3. What can be the implications of the Triple Talaq Act 2019 on Muslim women?
  - a. No difference – 140
  - b. Now fear can be seen among Muslim community but women life has become more difficult as divorce by this means is null and void which creates grounds for further divorce – 128
  - c. Misuse will be there – 51
  - d. Cases will decrease - 48

It can be observed clearly that majority of the Muslim women are not in favour of this Act and who are in favour of it, mentioned certain loopholes in it.

### **VIII. Analysis and Discussion of Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Act 2019 in lieu of domestic violence**

Although the Government has remained silent for a very long time regarding interference in the matter of Personal laws, but after increment in so much complaints filed to the Supreme Court regarding Triple Talaq, the said authority instructed the All India Muslim Personal Law Board (AIMPLB) to take measures in combating this ill practice by giving them a certain time limit and the said Board also contended the Apex court regarding it. But after this contention also, no measures has been taken by the Board and finally, Government has to take step.

#### 1. Making the offence “criminal”

There is a debate between the Supreme Court and Muslim organization regarding the criminality clause of the Triple Talaq Act 2019. First, Muslim community argues that

Triple Talaq was such a menace that has to be abolished, but it should be with the consensus held among community leaders, legal experts and shareholders so as to remove its imperfections, but Government resorted to make this offence as criminal. Second, the Muslim women who have raised voice against this ill practice are themselves dissatisfied because if *Talaq-e-biddat* is considered as null and void, then there is no logic in making it a criminal offence, because no crime has been done then. One of them named *Flavia Agnes* has remarked that this initiative by Government is making the image of Muslim women as devoid of rights and Muslim male as polygamous, lustful, barbaric and pre-modern. This criminality clause is showcasing the impression of power, rather than justice. Third, majority of the Islamic countries has banned this practice, but no one has criminalized it (Islam, 2020)

## 2. 3 years of imprisonment

The research in the twin city of Chhattisgarh states that 56.13% Muslim women of Durg Bhilai city are not in favour of the clause of the Triple Talaq Act which states that there is a three years of imprisonment to husband who give divorce to her wife via *Talaq-e-biddat*. They have given various justifications like three years of imprisonment has been reserved for crimes in Bharat that are expected to impede the peace and security of country like rioting (section 147), making or selling tool/gadget/device for forging (Section 233), if a person has been imprisoned illegally for 10+ days (Section 344), etc. In this way, the Indian Penal Code (IPC) has forbidden the discrepancy between major and minor offences. Further, it is a violation of the fundamental rights which provide protection and justice to minorities like article 14, 25 and 26. Also, Asaduddin Owaisi, AIMIM President mention the ambiguity of Government who discriminated between the Muslim and non-Muslim men on the grounds of imprisonment years for similar offence, that is 3 years for Muslim men and 1 year for non-Muslim men (Islam, 2020).

With this imprisonment clause, comes the dilemma of providing maintenance to respective Muslim wives. First, if the husband has been send behind the bars, then the

compensation problem shall arise. Indirectly, the whole responsibility of the family then resides with the women only, who are economically dependent (Islam, 2020)

Moreover, this form of divorce has been considered as null and void as per Act 2019 and if Muslim woman resort to file a complaint regarding *Talaq-e-biddat* against her husband, then that husband will be forced by his ego to give her wife divorce in a proper Quranic way. Indirectly, this clause is making the marriage broken rather than re-joining couple (Islam, 2020)

### 3. Cognizable clause

As per this clause, upon filing complaint by wife or her blood or marriage relatives against the husband regarding practicing of Triple Talaq, then the concerned police officer can arrest that husband without any arrest warrant.

As per present research, 58.85% Muslim women are not in favour of this clause. They have a say that at least it should be proved first otherwise some of the Muslim women may misuse it for their own sake.

### 4. Implications of Triple Talaq Act 2019

As per research, 38.14% Muslim women consider this Act as not a major breakthrough as no one will comply with this Act, instead Muslim community will abide by its personal law only and 34.88% Muslim women welcomes the interference of the Government but they have a fear that the Act can create more grounds for further divorce because this legislation has considered *Talaq-e-biddat* as null and void. While 13.9% Muslim women fear of more misuse by Muslim women and 13.07% Muslim women contend that cases will decrease now.

The dis-satisfied Muslim women also have a say that instead of resorting to the new legislation, it will be better if the previous legislations should have been made strict and revised i.e., Dissolution of Muslim Marriages Act, 1939. Further, the present Act made the Muslim women to approach the police and Court, which is against the teachings of Quran and Islam (Pandiaraj, 2018).

## IX. Conclusion

Triple Talaq, i.e., Talaq-e-biddat form of divorce is although prohibited in Quran but has been accepted by the Hanafi Sunni Muslims and Bharat belongs to majority of Sunnis. So, this practice is prevalent in Bharat. But the consequences of it are very dangerous as it take away the basic fundamental rights of Muslim women. They are suffering so much in lieu of religion, like after getting separation by instant divorce they become socially, economically and physically weak, which led them to pursue unwanted vocation like prostitution. Here, the domestic violence in form of Triple Talaq leads to the extreme form of violence for Muslim women. There is a need to curb it at the starting, so that it would not take the big form. So, Government of Bharat has taken step in the form of enactment of Muslim women (Protection of Rights on Marriage) Act 2019, but with certain loopholes.

The paper first has described and then analysed the Triple Talaq Act 2019 by taking opinions of Muslim women regarding this Act and it has been found out that majority of the Muslim women are not in favour of this Act and those who favours mentioned various loopholes such as it is against the fundamental rights i.e., Article 14, 25, 26, etc., the provision of 3 years of imprisonment is not fair, the provision of cognizable can lead to misuse of this Act, etc.

The Act 2019 has also been criticized by Maulana Abul Qasim Nomani, a Vice Chancellor of Dar-ul Uloom Deoband who considers the Act as both a target towards Muslim men and contrary to the welfare of Muslim women. Further, this initiative of Government will create communal violence (Islam, 2020).

Overall, the Muslim women have a say that this Act brings another form of domestic violence resorted to Muslim women. There was domestic violence before also, but it was at the level of society, but now in legal means also, Muslim women have to face the domestic violence.

## Reference

Bakir, M. (2021). Violence against women must stop; five stories of strength and survival. *UN News*, pp. 1-5. <https://news.un.org/en/story/2021/11/1106322>.

Directorate of Census Operations Chhattisgarh. (2011). *District Census Handbook–Durg*. Retrieved from [https://censusindia.gov.in/2011census/dchb/2210\\_PART\\_B\\_DCHB\\_DURG.pdf](https://censusindia.gov.in/2011census/dchb/2210_PART_B_DCHB_DURG.pdf)

Islam, M. (2020). A Critical Analysis of the Triple Talaq Act: Community Discontent with the Issues of “Criminalization” and “Maintenance”. *Tathapi*, 19(10). 296-302.

Islam, N. (2021). Instant Triple Talaq : A Curse on Muslim Women in India. *Journal of the Asiatic Society*, 63(1-2), 113-126.

Kaur, R., & Garg, S. (2008). Addressing domestic violence against women: An unfinished agenda. *Indian Journal Of Community Medicine*, 33(2), 73. Retrieved from <https://doi.org/10.4103/0970-0218.40871>

Khan, W. (2014). *Pavitra Quran*. Goodword Books.

Kundu, K. (2018). Analysis of Triple Talaq Judgment and the Road Ahead. *The World Journal On Juristic Polity*, 1 - 8.

Nirban, S. (2019). Domestic Violence. *International Journal Of Research In Social Sciences*, 9(2), 296-299.

Pandiaraj, S. (2018). Analysis of Muslim women (protection of rights on marriage bill, 2017). Retrieved from <http://www.acadpubl.eu/hub/>

The Muslim Women (Protection of Rights on Marriage) Act 2019 (20) (India)

Qureshi, Z. (2019). Post Divorce Maintenance in Shariah & Law (A Legal Appraisal). *Research Paper*. Retrieved from [https://www.academia.edu/40419051/POST\\_DIVORCE\\_MAINTENANCE\\_IN\\_SHARIAH\\_and\\_LAW\\_A\\_LEGAL\\_APPRAISAL](https://www.academia.edu/40419051/POST_DIVORCE_MAINTENANCE_IN_SHARIAH_and_LAW_A_LEGAL_APPRAISAL).

## यंत्र मुक्त सभ्यता की आवश्यकता

डॉ. राकेश मिश्र\*

mishrarakeshkumar2007@gmail.com

सभ्यता के साथ यह दिक्कत है कि वह न तो एक दिन में बनती है, और न ही एक दिन में मिटाई जा सकती है। गांधी जी की किताब 'हिन्द स्वराज' अपने वक्तव्य में 'आधुनिक सभ्यता' की टीका है। 1921 में 'यंग-इंडिया' के गुजराती अनुवाद की भूमिका में गांधी जी लिखते हैं 'इस किताब में आधुनिक सभ्यता की सक्त टीका की गई है। यह 1909 में लिखी गई थी। इसमें मेरी जो मान्यता प्रस्तुत की गई है, वह आज पहले से ज्यादा मजबूत हुई है। मुझे लगता है कि अगर हिन्दुस्तान 'आधुनिक सभ्यता' का त्याग करेगा तो उसे लाभ ही होगा (हिन्द स्वराज, हिन्द स्वराज के बारे में)।'

'आधुनिक सभ्यता' से आखिर गांधीजी का आशय क्या था ? आधुनिकता के बारे में गांधीजी के इस प्रसिद्ध कथन से तो हम परिचित ही है कि उन्होंने एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ इसे एक दिलचस्प विचार 'एन इंटेरेस्टिंग आइडिया' कहा था। 'आधुनिकता' एक दिलचस्प विचार होने के बावजूद एकदम से त्याज्य हो, वर्जित हो इसपर थोड़ा सोचने की आवश्यकता है। यह आधुनिकता ही थी जिसने ईश्वरीय आस्था को अपदस्थ कर मनुष्य को उसकी केन्द्रीयता का बोध कराया। तर्क को महत्व देकर उसके विवेक को धार दी। यह आधुनिकता ही थी जिसने मनुष्यता को समानता स्वतंत्रता और बंधुत्व का नारा दिया। फिर आधुनिकता तो एक प्रक्रिया है, जिसे सभ्यता के विकास क्रम में घटित होना ही है, फिर उस प्रक्रिया का 'त्याग' कैसे संभव है ? क्या यह आधुनिकता के 'त्याग' का विचार 'आधुनिकता' से ज्यादा दिलचस्प नहीं ?

जाहिर सी बात है गांधीजी आधुनिकता से कोई और आशय ले रहे थे। आधुनिकता का उनका अर्थ यंत्र आधारित जीवन पद्धति से या भारीयंत्रों से संचलित हमारा जीवन दरअसल गुलामी से आनंद का आदी हो जाता है। यह एक किस्म के नियतीवाद में फँसने के बराबर है, जिसे हम प्रौद्योगिकी नियतीवाद कह सकते हैं। एक बार जब हम मशीनों के उत्पादन से आदी हो जाते हैं, तो मशीनें अपने आपको जिलाये रखने के लिये हमें मनुष्य से उपभोक्ता बना डालती हैं। हम अपनी आवश्यकता और हवस में फर्क नहीं कर पाते। हमारी सामाजिकी को अपदस्थ कर वस्तुएँ स्वयं अपनी स्वायत्त और स्वतंत्र सामाजिकी का निर्माण कर लेती हैं, हमारा शरीर महंगी वस्तुओं और ब्रांड को टाँगे हैंगर से ज्यादा का अस्तित्व नहीं रखता। वस्तुओं की सामाजिकी को थोड़ा विस्तार से समझालने की जरूरत है। यह हमने किसी महंगे ब्रांड मसलत वुडलैंड का जूता खरीदा, तो हम उसे खादी के पाजामे पर नहीं पहन सकते, और यदि हमने जूते के वजन से ब्रांड की कोई पैट भी

\* एसोशिएट प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म. गां. अं. हि. वि. वि., वर्धा

खरीद ली तो उस पर कोई सस्ती सी कमीज नहीं डाल सकते। फिर हमें घड़ी चश्मा भी उसी जोड़ के लेने होंगे, और जब इतना सब हो जाय, तो क्या 'साइकिल' पर चलना हमें शोभा देगा ? इस सामाजिकी का दायरा फिर बढ़ता ही जाता है, और फिर धीरे-धीरे यह हमारी आत्मा तक का अपहरण कर लेता है। गांधी जी इस यंत्र आधारित सभ्यता पर फूलते इंग्लैंड की दशा के बारे में लिखा था, "यह सभ्यता तो अधर्म है और यह यूरोप में इतने दर्जे तक फैल गई है कि वहाँ के लोग आधे पागल जैसे देखने में आते हैं। उनमें सच्ची कूवत नहीं हैं वे नशा करके अपनी ताकत कायम रखते हैं।" (हिन्द स्वराज, 41)

यहाँ सिर्फ पूर्व और पश्चिम की बात नहीं है। यूरोप और भारत में गांधीजी के लिये कोई भेद नहीं था। बम्बई के कपड़ा मिलों की स्थिति के बारे में भी उन्होंने लिखा "बम्बई की मिलों में जो मजदूर काम करते हैं, वे गुलाम बन गये हैं, जो औरतें उनमें काम करती हैं, उनकी हालत देखकर कोई भी काँप उठेगा।" (हिन्द स्वराज, 94)

जाहिर सी बात है, गांधी जी श्रम को शोषण और पूँजी के संक्रेरण की प्रक्रिया से पूरी तरह वाकिफ थे। "मिलों से जिन्होंने रुपये जमा किये हैं, उनकी नीति दूसरे पैसे वालों से अच्छी नहीं हो सकती। अमेरिका के रॉफकेलर से हिन्दुस्तान के रॉफकेलर कुछ कम हैं, ऐसा मानना निरा अज्ञान है। गरीब हिन्दुस्तान तो गुलामी से छूट सकेगा लेकिन अनीति से पैसे वाला बना हुआ हिन्दुस्तान गुलामी से कभी नहीं छूटेगा। (हिन्द स्वराज, पृ. 94)

यंत्रों की जहिलता में कैसे मनुष्य की आत्मा की मुक्ति के लिये बेचैन गांधीजी यंत्र की मयववहता को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं, "यंत्र तो साँप का ऐसा बिल है, जिसमें एक नहीं बल्कि सैकड़ों साँप रहते हैं। एक के पीछे दूसरा लगा ही रहता है .....यंत्र का गुण तो मुझे एक भी याद नहीं आता जबकि उसके अवगुणों पर मैं पूरी किताब लिख सकता हूँ।" (हिन्द स्वराज, पृ. 96)

दरअसल आधुनिकता की कोख से निकले दोनों प्रमुख विचारधाराओं 'पूँजीवाद' और 'साम्यवाद' ने यंत्र पर नियंत्रण के सवाल को ही अपना वैचारिक आधार बनाया। इसलिये दोनों व्यवस्थाओं में मनुष्य सी नियती लगभग एक सी रही। सवाल यंत्रों पर अधिकार का नहीं था, सवाल यंत्रों से मुक्ति का था।

यदि हमें एक अहिंसक समाज का निर्माण करना है तो उसके लिये एक मिल किस्म की अहिंसक प्रौद्योगिकी इस्तेमाल में लानी होगी। इतिहास और उत्पादन व्यवस्था को सरल से जटिल मानने वालों से यह ठहरकर पूछने की जरूरत है कि क्या यह वाकई जटिल नहीं है कि हम ऐसे समय में यंत्रों से मुक्ति की बात कर रहे हैं, जब इसे आसानी से कोरा आदर्शवार और खब्त मान लिया जा सकता है ? हमारी मशीन आधारित कोई भी व्यवस्था ही एक हिंसक व्यवस्था होगी, और एक हिंसक प्रौद्योगिकी के माध्यम से अहिंसक समाज की रचना चाहना, उसमें मानवीय गरिमा और उदात्ता के लक्षण खोजना एक सरल खब्त के अलावा कुछ भी नहीं।

1909 में भी गांधी से पूछा गया था, और आज भी पूछने वालों की कमी नहीं है कि क्या ऐसा होगा ? ऐसा होने की बात तो इतिहास में कभी दिखाई नहीं दी। तो गांधी जी का वही उत्तर आज भी प्रासंगिक है, .....जो चीज इतिहास में नहीं देखी, वह कभी नहीं होगी, ऐसा मानना मनुष्य भी प्रतीष्टा में अविश्वास करना है जो बात हमारी अकल में आ सके, उसे आखिर हमें आजमाना तो चाहिये ही। (हिंदू स्वराज, पृ. 67)

मानव जाति को गांधी की जो सबसे बड़ी देन है, वह है, सत्याग्रह। सत्य, अहिंसा, प्रेम के मूर्तरूप जैसा यह साधन है। गांधी को ऐसा दृढ़ विश्वास था कि वे जिस स्वराज्य को प्राप्त करना चाहते हैं उसका साधन सत्याग्रह ही हो सकेगा। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, 'हिंसा भारत के दुखों का इलाज नहीं है। उसकी संस्कृति को देखते हुए उसे आत्मरक्षार्थ कोई भिन्न और उच्चता प्रसार का साधन काम में लेना चाहिए।'

इस आत्मविश्वास की झंकार 'हिंदू स्वराज' में बुलंदी से सुनाई देती है। 'इस बल को दया बल कहें, आत्मबल कहें अथवा सत्याग्रह कहें। यह बल अविनाशी है। इस बल का समावेश हमारे पुरखों ने इस कहावत में किया है कि 'एह नही सब रोगों की दवा'। यह बल जिसमें है, उसने सामने हथियार बल काम कर नहीं सकता। खतरे में पड़ जाए ऐसी अनेक समस्याएँ पैदा कर दी हैं। यंत्रीकरण के कारण हो रही अमानवीकरण की प्रक्रिया के बारे में दुनिया में गहराई से चिंतन हो रहा है। जिससे मानव विकास कुंठित होता हो, जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता हो तथा जीव सृष्टि को हानि पहुँचती हो, लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता हो, लोगों का मानस विकृत बनता हो, जिससे गाँव टूटते हों और मनुष्य अपने घर से उजाड़ बनता हो ऐसा औद्योगीकरण हरगिज नहीं चाहिए। ऐसी आवाज दिन-प्रतिदिन बुलन्द बनती जा रही है। उपयुक्त टेक्नोलॉजी और मानवीय टेक्नोलॉजी का विचार आज सर्वत्र फैल रहा है।

उपयुक्त टेक्नोलॉजी और मानवीय टेक्नोलॉजी की दृष्टि से देखें तो गांधीजी द्वारा प्रेरित खादी ग्रामोद्योग के कार्य उपयुक्त टेक्नोलॉजी और 'स्माल इज ब्युटिफुल' की बात कही, उसके पचास साल पहले ही गांधीजी ने उपयुक्त टेक्नोलॉजी के युग का श्री गणेश कर दिया था। उनका शास्त्र भले ही शूमाकर ने बनाया, उसका अमल गांधीजी ने बीसवीं सदी के प्रारंभ में ही कर दिया था। यंत्रोद्योगों के भारी बोलबाले के जमाने में गांधीजी ने 'हिन्दू स्वराज' में पुराने, प्रौढ, पवित्र.....की महिमा उच्च स्वर में गाई थी तथा उसी में हिन्दुस्तान का कल्याण है ऐसा ढोल बजाकर कहा था।

गांधीजी ने आधुनिक सभ्यता के रोग का निदान करके उसकी जड़ें कहाँ-कहाँ है यह सब बता दिया है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि यह देख रही थी कि इस पूरी सभ्यता की जड़ हिंसा रही है। हिंसा की मनोवृत्ति पूरी व्यवस्था को विषम बना रही है और भिन्न-भिन्न प्रकार के विपरीत परिणाम ला रही है। अतः इस सभ्यता को जड़मूल ले उखाड़ना यानि हिंसक मनोवृत्ति को ही जड़मूल से उखाड़ना होगा। हिंसा से कदापि अच्छे परिणाम नहीं आ सकेंगे। हिंसा का सहारा लेंगे तो उसमें से ऐसी ही विघातक सभ्यता का निर्माण होगा। जो हमें हरगिज नहीं चाहिए।

इस दृष्टि से उन्होंने बहुत गहराई में जाकर विचार किया है। 'हिन्द स्वराज' में इसका सविस्तार वर्णन करते हुए कहते हैं 'अंग्रेजों ने जो पाया वह मारकाट करके प्राप्त किया.....अंग्रेजों ने मारामारी की, वैसा हम भी कर सकते हैं.....परंतु उन्हें जो वस्तु मिली हमें भी वही मिल सकेगा। हमें वह नहीं चाहिए।'

यंत्रोद्योग के बारे में गांधीजी ने और भी अनेक मापदंड एवं कसौटियाँ बतलाई हैं जिनका समर्थन आज अनेक आधुनिक विचार प्रवाहों द्वारा हो रहा है। अपनी भूमिका स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने कहा 'मेरा विरोध यंत्रों से नहीं है, परंतु यंत्रों के पीछे जो पागलपन है उससे है। आज तो जिनको समय बचानेवाले यंत्र कहा जाता है उनकी भरमार है। कुछ लोगों का श्रम बचता जरूर है लेकिन लाखों लोग बिना काम के रास्तों पर भूखे भटकते फिरते हैं। इसलिए मैं यंत्रों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की बात कहता हूँ।'

औद्योगिक देशों में भी आठ-दस प्रतिशत बेकारी हमेशा रहती हो, ऐसा औद्योगिकरण गांधीजी को पसंद नहीं था। आज के विचारप्रवाह भी इस बात पर जोर दे रहे हैं कि कुशलता को भी नई व्याख्या होनी चाहिए। समाज में यंत्रों ने इतने लोगों को बेकार बना दिया, अर्थात् उन्हें हीन और निकम्मा बना दिया। अर्थात् इन लोगों की कुशलता तो शून्य बन गई। समाज में इतने लोगों की कुशलता शून्य बना देने वाली व्यवस्था कुशल कही जाए या अकुशल ?

यह एक मानवीय समस्या है। सिर्फ बेकारी .....दे देने से इसका हल नहीं हो जाता। सिर्फ पैसों का या आमदनी का सवाल नहीं है, परंतु अर्थपूर्ण कार्य द्वारा मानव व्यक्तित्व के समुचित विकास का है। इस बात की तरफ भी गांधीजी ने ध्यान खींचा है। 'मजदूरों को अच्छी मजदूरी मिले इतना ही नहीं परंतु वे कर सकें, ऐसा काम उन्हें हर रोज मिलना चाहिए।'

काम के बारे में गांधीजी की राय अत्यन्त तंदुरुस्त एवं समत्व युक्त है। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि 'संस्कारी मानव कुटुंब में श्रम का अनन्य स्थान है। उससे अपने देश की करोड़ों भूखी जनता तंदुरुस्त और सुखी बने तथा आध्यात्मिक दृष्टि से प्रगति करे, ऐसा मैं चाहता हूँ। और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें यंत्रों की आवश्यकता नहीं है।' इसी संदर्भ में उन्होंने एक दूसरा मंत्र दे दिया - 'मनुष्य के अंगों को काम के अभाव में जड़ और निरूपयोगी बना डालने की तरफ यंत्रों की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए।'

अंधाधुंध औद्योगिकरण ने आज समूची मानवजाति तथा समस्त पृथ्वी का अस्तित्व दुनिया को दो-दो महायुद्धों के नरक में झोंक दिया। यंत्रोद्योग के पीछे दौड़ने में भी यही लूट वृत्ति छिपी हुई है और यह मानव जाति को स्थाई रूप से नरक यातना का अनुभव करायेगी, ऐसी दृढ़ प्रतीति गांधीजी को हो गयी थी।

'हिन्द स्वराज' में उन्होंने साफ-साफ शब्दों में कह दिया है कि 'मशीने यूरोप को उजाड़ने में लगी हैं और वहाँ की हवा अब हिन्दुस्तान में चल रही है। यंत्र आज की सभ्यता की मुख्य निशानी है और वह महापाप है ऐसा मैं साफ देख सकता हूँ।' गांधीजी का मानना था कि यंत्र का उद्देश्य मानव श्रम का बचाव है। उसका

उपयोग करने का उद्देश्य धन का लोभ नहीं परंतु प्रमाणिक रूप से दया का होना चाहिए अतः लोभ के स्थान पर प्रेम को रखें। फिर सब अच्छा ही अच्छा होगा।

‘लोभ के स्थान पर प्रेम को स्थापित करो।’ सिर्फ इस एक कसौटी पर कसेंगे तो यंत्रों का विवेक सहज हाथ लग जायेगा। और यह प्रेम भी कैसा ! गांधीजी ने स्वयं इस दृष्टि से सिंगर का उदाहरण दिया है। सिंगर की मशीन के पीछे प्रेम रहा, अतः मानव सुख का विचार मुख्य था.....। अपनी पत्नी को सिंगर से सीने और बखिया लगाने का उकतानेवाला काम करते देखा। पत्नी के प्रति रहे प्रेम में गैर जरूरी मेहनत से उसे बचाने के लिए सिंगर को ऐसी मशीन बनाने की प्रेरणा दी।’

प्रेम की इस जड़ीबूटी से मानव कल्याण के लिए यंत्रों का अविष्कार और उपयोग हो ऐसा युग संदेश ‘हिन्द स्वराज’ के मार्फत गांधीजी दुनिया को दे गये हैं। गांधी तो यंत्रों के विरुद्ध हैं। इस तरह के कथन में गहराई नहीं है। गांधी तो यंत्रोद्योग के अंदर की जहर की थैली निकाल लेना चाहते हैं। पैसा और लोभ, लालसा रूपी जहर को थैली सहित तो यंत्र मानव जाति के लिए अभिशाप ही साबित होने वाले हैं, गांधीजी का यह निदान आज इतने वर्षों बाद पूरा-पूरा सच साबित हुआ है। इस बारे में गांधीजी सर्वश्रेष्ठ सूक्ष्मदर्शी एवं दूरद्रष्टा साबित हुए हैं। उनकी राय ज्यादा वैज्ञानिक, मानवीय और दूरदर्शी सिद्ध हुई यही कारण है कि गांधी मशीन की अलोचना करते हुए लिखते हैं कि ‘यंत्र आज की सभ्यता की मुख्य निशानी है और वह महापाप है।’ यंत्रों के बारे में गांधीजी की राय पर पहले से आज तक बहुत विवाद चलता आया है। परन्तु वह अधिकांश में गांधीजी की भूमिका का सम्यक आंकलन नहीं कर पाने के कारण हुआ है। यंत्रीकरण, प्रगति, वैज्ञानिकता आदि विचारों के साथ इतने घुल मिल गये हैं कि यंत्रों के विरोध में कुछ भी कहना यानि विकास, प्रगति या विज्ञान के विरुद्ध बोलना मान लिया जाता है। गांधी यंत्रों के बारे में निर्भ्रांत होकर सोच सके थे। बाहरी रौनक तथा चकाचौंध करने वाले चमत्कारों बहकावों में आये बिना उस के आर-पार देख सकने की तथा उसके मर्म को पकड़ लेने की एक अद्वितीय शक्ति और दृष्टि गांधी जी में थी। इसलिये वे देख सके थे कि यह यंत्रोद्योग तो आधुनिक सभ्यता का छिपा तीर है। वैज्ञानिक प्रगति, मानव कल्याण आदि के आंचल के पीछे छिपकर वास्तव में तो इनके पीछे सारी दुनिया को कब्जे में कर लेने की और भरपेट लूटने की विकराल लालसा काम कर रही है।

‘हिन्द स्वराज’ लिखा गया, उसके एकाध वर्ष पहले 1908 में गांधीजी ने लिखा था, ‘यह स्मरण रखना चाहिए कि पश्चिम की सभ्यता को सौ वर्ष हुए हैं। वास्तव में गिने तो पचास ही होंगे। इतने से वर्षों में ही पश्चिम की प्रजा वर्ण संकर जैसी दिखने लगी है। यूरोप की जो दशा है वह हिन्दुस्तान की कभी न हो। यूरोप की प्रजा एक-दूसरे के ऊपर बैठी है। परन्तु हर एक के पास जो शास्त्रास्त्र हैं, उन्हीं के डर से वे चुप-चाप बैठे हैं। किसी समय जबरदस्त आग भड़केगी तब यूरोप में नरक का दृश्य निर्माण होगा। यूरोप का प्रत्येक राष्ट्र काले लोगों को अपना भक्ष्य मानकर बैठा है। सिर्फ पैसे का ही जहाँ लोभ हो वहाँ दूसरा कुछ होने वाला भी नहीं है। कोई भी नया देश उनको दिखा तो वे सब कौओं की भांति उस पर टूट पड़ते हैं। ऐसा वे अपने कारखानों के लिए करते हैं।’

बीसवीं सदी के पहले दशक में यूरोप के बारे में जिस नरक की आंशका गांधीजी ने व्यक्त की थी उसी नरक से दूसरे तथा चौथे, पाँचवे दशक में यूरोप को गुजरना पड़ा। स्पर्धा और गलाकाट मुकाबले को मुख्य प्रेरक बल मानकर चलनेवाली आधुनिक सभ्यता इस सिद्धांत के तर्क शुद्ध परिणाम पर पहुँच गई। प्रकृति को और सारी दुनिया को लूटने के लिए बाहर निकले लुटेरों के आपसी हित विरोध में मिलता।

आधुनिक सभ्यता की विफलता को गांधी 50-60 वर्ष पहले ही देख चुके थे। पश्चिमी औद्योगिक सभ्यता को बिलकुल ही खोटी विचारधारा के आधार पर खड़ी की गई थी। एक तो यह मान्यता कि जीवन का ध्येय इंद्रिय सुख है अतः मनुष्य के मन में उठनेवाली हर एक इच्छा की पूर्ति करनी चाहिए तथा अधिक से अधिक भोग विकास के द्वारा ही सुख प्राप्त किया जा सकता है। दूसरी यह मान्यता कि प्रतिस्पर्धा में सबसे आगे निकल जाने की वृत्ति, स्वार्थ तथा भोग, लालसा ही मुख्य प्रेरक बल है तथा उसी से सामंजस्य तथा शान्ति निस्पन्न होगी यह दोनों मान्यता सम्पूर्ण रूप से गलत साबित हुई।

इस प्रकार की मान्यताओं को गांधी ने आज की सभ्यता के रोग की मुख्य जड़ माना था। गांधीजी ने इस बात पर खास जोर दिया था कि 'जिस सुख के लिए यह सारा प्रचार चलता है, अंत में वह सुख तो इनमें मिलता नहीं।'

इसके सिवाय गांधीजी आधुनिक सभ्यता के ऐसे अनेक रोग, लक्षणों को दिखा सके हैं जो बीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में तो शायद स्पष्ट दीखते ही नहीं थे। फिर भी गांधीजी की भेदक दृष्टि उन रोगिष्ठ लक्षणों को अचूक परख सकी है। गांधीजी ने पश्चिमी सभ्यता को 'स्पष्टतः दसूरों का नाश करनेवाली तथा खुद नाशवान है, कहा है।'

गांधी औपनिवेशिक ताकत के पीछे मुख्यतः पूंजीवाद की शान्ति को देखते थे। लेलिनि ने भी इस संबंध में काफी लिखा है तथा मार्क्स की तरह ही गांधी का भी पूंजीवाद के विरोध का मुख्य कारण पूंजीवादी व्यवस्था का वह गुण है, जिसमें पूंजी को, श्रम के महत्ता को कम करने को ठीक माना जाता है। जिसमें मशीन को मनुष्य के स्थान पर ऊँचा स्थान है, जहां यंत्रिकरण को मानवता की तुलना में ज्यादा स्थान दिया जाता है।

जितनी प्रखर आलोचना गांधीजी ने की है वैसी आलोचना किसी ने भी नहीं की है। इस सभ्यता के खिलाफ गांधी का विद्रोह अदम्य था। 'यह सभ्यता मनुष्य जाति के लिए शाप रूप है और उसको तहस-नहस करने वाली है ऐसी प्रतीत उन्हें हो गई थी।' इसलिए उसे जड़मूल से उखाड़ फेंकने के लिए तत्पर हुए थे। 'कैन्सर का जब आपरेशन करते हैं तब सिर्फ मूल गांठ ही नहीं, आसपास फैले उसके तंतुओं को भी खोद-खोद कर बाहर निकाल देना पड़ता है। कैन्सर का थोड़ा सा भी अंश अगर बचा रह जाए तो वह फिर से उभर आता है। एक-एक पेशी और छोटा से छोटा अवशेष भी खोद-खोद कर बाहर निकालना पड़ता है। उसका नामोनिशान भी बाकी नहीं रहना चाहिए। कुछ इसी तरह की मनःस्थिति गांधीजी की दिखती है।' इस सभ्यता का छोटे से छोटा दोष निकल कर उसे उखाड़ फेंकने के लिए वे तत्पर दिखते हैं। करेंगे या मरेंगे इस तरह के दृढ़ निश्चय के

साथ वे आधुनिक सभ्यता के साथ युद्ध करने को तत्पर हैं। जिसके हृदय में किस के प्रति दुश्मनी का विचार तक न हो और जो सारी दुनिया को मित्र मानता है, ऐसा गांधी जैसा मनुष्य ललकार कर कहता है 'मैं तो यूरोप के आजकल के सुधारों का कट्टर दुश्मन हूँ। यह विचार 'हिन्द स्वराज' में मैंने स्पष्ट करने का प्रयास किया है।'

जिस पुस्तक के बारे में उन्होंने खुद ही दावा किया है कि 'वह द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है।' उसी पुस्तक के अंत में बिना हिचकिचाहट के उन्होंने असंदिग्ध रूप से लिख दिया है कि मैंने जो कुछ कहा है वह अंग्रेजों के प्रति द्वेष से नहीं, परंतु उनकी सभ्यता के द्वेष से कहा है।

1910 में जोहान्सबर्ग के एक भाषण में गांधीजी ने आधुनिक पश्चिमी सभ्यता का विशेष वर्णन किया है – 'आधुनिक सभ्यता का सार दो बातों में दर्शाया जा सकता है। एक तो यह अनवस्त्र प्रवृत्ति सिखाती है और दूसरी बात यह स्थल और काल को मिटा देना चाहती है। आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी काम में जुटा हुआ दिखता है। यह एक जोखिम भरी निशानी है। लोग अपनी रोट्टी कमाने में ही इतने मशगूल हैं कि उन्हें आज किसी बात के लिए सोचने की भी फुर्सत नहीं। आधुनिक सभ्यता लोगों को जड़वादी बनाती है। उनके विचारों को शरीर पर और शरीर-सुख के साधन बढ़ाते रहने पर केन्द्रित करती है। इस प्रकार की दौड़-धूप में उच्च प्रकार की प्रवृत्तियों के लिए समय ही नहीं मिलता।

फिर सभ्यता आखिर है क्या ? गांधीजी के अनुसार सभ्यता वह आचरण है, जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने के मानी है नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन को इंद्रियों को वश में रखना। ऐसा करते हुए हम अपनी असलियत को पहचानते हैं। यही सभ्यता है। (हिन्द स्वराज, पृ. 62)

पहचाने की यह प्रक्रिया तो अभी भी शुरू की जा सकती है। और यदि यही सभ्यता है तो सभ्य होने में हमें कौन सी आपत्ति होनी चाहिए ?

साधन शुद्धि की और साधन-साध्य के बीच एकरूपता की यह बात मनुष्य जाति के गांधीजी की विशेष देन है। 'हिन्द स्वराज' का यह अत्यन्त महत्व का संदेश है। मानव की साधना में या मानव की विकास यात्रा में इससे एक नये युग का प्रारंभ हुआ है। सर्वोदयी विचारधारा का यह हार्द है। इसमें कोई समझौता नहीं। गांधी ने असंदिग्ध रूप से कहा कि 'साधन और साध्य मुराद के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है। यह मानना बहुत बड़ी भूल है। इस भूल के कारण जो लोग धार्मिक कहलाते हैं, उन्होंने घोर कर्म किये हैं। यह तो धतूरे का पौधा लगाकर मोगरे के फूल की इच्छा करने जैसा हुआ। मेरे लिए समुद्र पार करने का साधन जहाज हो सकता है। अगर मैं पानी में बैलगाड़ी डाल दूँ तो वह गाड़ी और मैं दोनों समुद्र के तले पहुँच जायेंगे। जैसे देव वैसी पूजा यह वाक्य बहुत सोचने लायक है, उसका गलत अर्थ करके लोग भुलावे में पड़ गये हैं। साधन बीज है और साध्य हासिल करने की चीज पेड़ है। इसलिए जितना संबंध बीज और पेड़ के बीच है उतना ही साधन और साध्य के बीच है। शैतान को भजकर मैं ईश्वर भजन का फल पाऊँ, यह कभी हो ही नहीं सकता। इसलिए यह कहना कि

‘हमें तो ईश्वर ही भजना है, साधन भले शैतान हो बिलकुल अज्ञान की बात है। जैसी करनी वैसी भरनी।’ गांधी के लिए सभ्यता, एक नैतिक संस्थान की तरह। ‘सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने का मतलब है नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन और इंद्रियों को वश में रखना। ऐसा करते हुए हम अपने आप को पहचानते हैं। यही सभ्यता है। इससे जो उल्टा है वह बिगाड़ करने वाला है। ‘गांधी के अनुसार पश्चिमी सभ्यता में ये गुण नहीं हैं।’ पश्चिमी सभ्यता को उपरोक्त नैतिक गुणों की कमी गांधी को पश्चिमी सभ्यता का विरोध बना देता है। गांधी के लिए पश्चिमी सभ्यता के दो मूल सिद्धान्त ‘Might is Right’ तथा ‘Survival of Fittest’ जिसे क्रमशः Machiaveli तथा Adam Smith द्वारा विस्तृत तथा प्रतिपादित किया गया है, अस्वीकार्य तथा अनैतिक है।

गांधी जोर दे कर कहते हैं कि ‘हिन्दुस्तान अंग्रेजों ने लिया तो कोई बात नहीं है, बल्कि हमने उन्हें दिया है। हिन्दुस्तान में वे अपने बल से नहीं टिके हैं, बल्कि हमने उन्हें टिका रखा है।’ गांधी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महसूस किया कि ‘हम स्वयं के जागृति के द्वारा इस औपनिवेशिक शासन से बाहर आ सकते हैं।’

अंग्रेजों द्वारा भारत की गुलामी को प्रारंभ में सभ्य समाज निर्माण के नाम पर न्यायोचित ठहराया जाता रहा। तब इस आधुनिक सभ्यता को नकारना गांधी के लिए आवश्यक है। ‘सभ्यता निर्माण के दावों के लिए भारत की गुलामी को बनाये रखना मुश्किल था।’

वस्तुतः आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की आलोचना अनेक लोगों ने की है, लेकिन ‘उसका सही विकल्प गांधीजी के चिंतन में ही देखने को मिलता है।’

### संदर्भ :-

आचार्य, न. (1995). सभ्यता का विकल्प (गांधी-दृष्टि का पुनराविष्कार). बीकानेर: वाग्देवी प्रकाशन.

गांधी, मो. क. (1909/2006). हिंद स्वराज. (अ. ठा. नाणावटी, अनु.) राजघाट: सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

गांधी, मो. क. (1948). संपूर्ण गांधी वाङ्मय. नई दिल्ली: पब्लिकेशन्स डिवीजन, सूचना एवं प्रसार मंत्रालय, भारत सरकार.

मौरफ्यूज, हरबर्ट. (1991). वन डयमेंशनल मैन. बीकन प्रेस.

राधाकृष्णन. एस. (2009). एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ. हार्पर.

## MAPPING THE FORMING NOTIONS OF COMMUNITY IDENTITY: A STUDY ON 'CHAND' SPECIAL ISSUE 1923

Suman Kumari\*

Sansumanyadav@gmail.com

### **Abstract:**

*This study will discuss the sorrow of widows and manipulated mandate laws that follow the predefined notions of ancient society. It proposes widows' life and struggle, which women intellectuals introduce in the Hindi women journals. This study describes the women's response to widow remarriage and the stance of male reformers. It also focused on the atrocities perpetrated on widows in the name of custom and practices. It will make special remarks on individual awareness and its manifestation of the everyday life of a widow through the periodical lens.*

**Keywords:** *Widows Conversion, Sati Practice, Child Marriage, Widow Remarriage., Women intellectuals, Community consciousness.*

### **Introduction:**

The appearance of organisations from a foreign-national debate acquired a space in the vernacular literature Hindi. It was evidence of a period of national movement where women were more active in contributing to self-awareness. In these circumstances, newly educated women started to participate in political space with the national awakening. But soon, they realised their own problems, that primarily debated in Hindi magazines. In this order, middle-class, educated women were involved in forming vernacular literature that played an essential role in self-consciousness and awareness of women's societal existence. However, these politically aware women lead the organisations to secure the breathing space in the local vernacular magazines. Organisations such as 'Prayag Mahila Samiti' were started by nationalist women such as Ramershwari Nehru and Uma Nehru. *Stri Darpan*, a Hindi women's magazine, was the mouthpiece of *Prayag Mahila Samiti*. Similarly, this kind of women's activity and the organisations encouraged the intellectual community to discuss social issues in the

---

\* PhD Research Candidate, Department of History, University of Hyderabad, Gachibowli

magazine. It provided an equal space and freedom from their private to the public sphere in Hindi women's magazines. The vernacular literary movement significantly shaped women's life and associate them with the women's movement and literary activities. Their writings were considered in the mainstream, to make them aware of the cultural and religious community.

Women intellectuals developed an enthusiastic world through literary involvement to release their constant anxiety in the Hindi public sphere. According to Nijhawan (2012), after the female periodical, the north Indian discourse of social reform to nationalism shifted to the mainstream. This periodical phase of the Hindi belt provided a forum to cultivate a political platform for women to be cautious about the oppressive patriarchal structure of society to unbound and emancipate them by reading and writing. However, the lower-class women were not as conscious of the new idioms and communicative skills with a stranger as elite middle-class women.

It has been noted by Orisini (2009) that numerous vernacular women's journals were spread and raised by the intellectual community of Allahabad and Benaras. The small printing presses printed poor-quality periodicals that focused on religious literature, mythology, poetry, and romance narratives (Orisini, 2009) to keep amused and informed to the reader community. Later it enlarged as the most affordable and constituted reading material and popular literature. These religious texts persuaded belief in spiritual consciousness among the women community.

At the beginning of the 20th century, the journal '*Chand*' was pioneered by its editor, Ramrakh Singh Sahgal and Vidyavati Sahgal, for a decade. It was a ground-breaking journal in the Hindi belt; that dealt with women's issues of being awake and approaching their community towards self-realisation, which later merged into a collective identity (Talwar 1998). However, the appearance of *Chand* faded the reputation of other contemporary journals such as *Stri Darpan*, and *Grihalaksmi* so there was intense competition increased among the other Hindi women's journals. *Chand*<sup>†</sup> costs six rupees annually; however, it costs three rupees for six months as a monthly periodical. The editor published numerous special editions for the

<sup>†</sup> *Chand Ahoot Ank* (Untouchable Issue, May 1927) and *Fasi Ank* (Issue on Capital Punishment, November 1928), included both social and political problems. However, the periodical mainly focused on women's questions and their social unrestraint of political transition of national liberty.

readers' community—its special issues such as '*Vidhwa Ank*' (Widow Issue April 1923). The era of vernacular literature provided new idioms and analytical perspectives to women intellectuals' writings in mainstream literary periodicals to address the social injustice in women's domestic and social life, especially widows. Widow has to deal with everyday bigotry situations by their family members and in-laws. Due to social pressure, men were denying to accept the proposal of widow remarriage.

Similarly, widows were blamed and treated as crucial culprits for the death of their husbands. They were not allowed to wear attractive clothes and were denied good food to control their sexual course. Even they were not allowed to go to any auspicious happening or family function. It is believed that widows cause inauspicious vibes in pleasant moments. Therefore, they will be a negative ambience during the joyful movement. So, they can only involve in a part of the house as a maid.

Child marriage and unsuitable partners for women lead to early widowhood in their childhood. This specified situation discloses the reality of Indian child widows with an old aged person—the old aged men who were in condition to die despite being very proud, feel young to marry. To fulfil their intimate desires and to find to care for someone, they were married, young girls. Therefore, the unsuitable partner leads the women's life to adopt unwanted professions such as prostitution. Sometimes, these young widows fall in love with men, which leads to child infanticide due to the fear of rejection from the society they acquire the path of prostitution.

In the second decade of the twentieth century, the widow's problems were broadly discussed in '*Chand*' 'Widows Special Issue' of April 1923. The '*Chand*' was the first Hindi journal that published its special issue on the atrocities perpetrated on widows. In its initial phase, the journal favoured the widow remarriage and opposed child widows. And especially concentrated on women's education, health and widow's exclusion in society.

The magazine consistently maintains the legacy of widow's issue; its remarkable widow's issue draws a closer line to the problem of widows and their social distress. The widow's life was shaped into a deadly lifelessness and mistreated humans by the religious cluster. Sati practice (the burning of a widow in the funeral pyre with her husband banned by the British government on December 4, 1929, by the efforts of

Lord William Bentinck) was a prime example of the suffering of married women. 'Chand' narrated on widowhood and enquired about the ancient past of widow remarriage, where the Sati was a belief for women's honour that rendered her an ideal wife and did not allow to remarry. The narrative such as marriage is a sacred bond, women were signing the agreement to live their life until the last breath of their life partner. However, due to the customs of Sati, they could not continue their life at a young age; they had to sacrifice themselves to show their honour to an ideal wife. The early twentieth century identifies that reform in social evils emphasises the necessity of various social issues, such as caste, religion, and political consciousness. However, it carries the emancipation of women's status, especially widows, for saving religion-culture practices.

*Chand* was an essential piece of the criticism of widow remarriage. However, *Chand* concentrated on both women's questions and distress which constructed an individual ability to distinguish from others. It housed an adequate amount of writings of women intellectuals on purdah practice, widow remarriage, child marriage, and female education with both objective and reality of women's lives in public and private places. Community consciousness among the women Intellectuals of their social milieu resulted in women's participation in mailing culture of Hindi women journals of colonial north India.

The newly educated women started to send their stories to seek public attention towards their suffering to the concern of associated women's intellectual community of print culture. The print culture introduced a correspondence trend in literary academia, especially in journals. A large number of women's magazines, in various languages, appeared in the mainstream print to encourage women towards self-expression and communicative skills in a domestic approach. The editorial of essays entitled '*Vidhwaon ki Durdasha*' (Widow's chaos) by a young widow of *Chand* conveys the individual stories of the widows, who were communicating through the letters correspondence. In this reference, a young widow mailed a letter to the editor, and she appreciated the editor's view on a particular widow's issue. The editor published this letter in the editorial section entitled '*Ek Pratihsthit Mahila Ka Patra*' (A decent Woman mail). The woman (widow, aged 16) belonged to the '*Khatri*' caste. Her father

advocated the traditional values and was a part of 'Bharat Dharma Mahamandala'. The Mahamandala was an eminent Hindu society initiated by Pt. Dindyalu Sharma in Hardwar in 1887. The Organisation's main objective was to defend Hindu orthodoxy, whether the society lay outside or within Hinduism (Jones, 1989). The woman lost her husband at the age of sixteenth. She wanted to remarry, and her father permitted her to perform the second marriage, as the association 'Bharat Dharma Mahamandala' where he belongs, humiliated him. His neighbouring society was also part of this humiliation. Thus, after facing such discrimination by her (widow) family, she set aside the idea of remarriage; later, she decided to help widows from the sufferings which she went through. So the domestic compulsion and reformer's commitments hesitated the widows to involve in the remarriage process.

As she was not aware of any female widow's welfare organisations, she asked for help from *Chand* to communicate regarding the widow organisations. Hence, it explains that widows wanted to get married but were not allowed to remarriage. If a widow came forward to remarry, their family were humiliated by society; after confronting such an unkind situation with family, the widows refused the idea of remarriage and wanted to join some welfare organisation that works for their welfare. On one side, they were getting agreed to marry, but on the other side societal pressure and demotivation of the male community towards widow remarriage drew out their idea of a reunion with a new partner.

Similarly, the social reformers from various parts of India participated in the widows' social reform movement to liberate them. Being a prominent social reformer of western India and a member of the 'Widow Remarriage Association', Mahadev Govind Ranade married an adolescent girl after the passing away of his wife. However, being an advocate of widow remarriage and a strict follower of reformist principles, Ranade should marry a widow, but he married a young girl half his age; for that, he faced severe criticism from the other social spectator. Sudhir Chandra (1998) argued that even the leading social reformers failed to practice and believe they were approaching the people to marry widows, but themselves were not marrying a widow. After these instances, the issue of widow remarriage becomes remarked and controversial. Male social reformers advocated widow remarriage as a part of the social

movement, but they refused to accept such instances against the reformist commitments when they occurred to themselves. These debates cultivate an interest in gender questions and digging into the story of 'Her', especially the widow's stories which were the most debated part of society. However, women's life standstill remains unchanged in various obscure forms; whether it is the community sphere or remote surroundings, women's invisible exploitation was incomprehensible. Similarly, the issue of widow remarriage became controversial from many different perspectives.

### **Women's Response on Sati Practice:**

In its remarkable 'widow issue', 'Chand' signified women intellectuals to convey their stance on 'Sati Practice', the most controversial debate. These women authors hugely participated in the discussion to bring the everyday struggle of widows. The existence of *Sati* practice was extreme torture that led to the death of widows. However, women intellectuals believe that the 'Sati' was not extreme torture that widows faced; their exclusion and survival in Indian society were more painful than any other pain. An article entitled '*Bharatiya Vidhwaon Ka Jeevan*' (Life of Indian Widows) by Kumari Sukhalata Devi (M.A., B.T.) discusses the custom of the ancient past; after her husband's death, the woman had to perform 'Sati Practice' (Kumari, 1923). After completing such practice, it was believed that widows would attain the salvation and the honour of a faithful Ideal wife (Pativrata wife). So, this pressure of attending honour and salvation was formed by religious-cultural practice headed widow's life towards deadly acts.

Sukhalata Devi criticises the idea of conservatives who were proud of those women who performed such mortal practice. Women were carrying these customs, and Hindu men appreciated this attitude of women. However, besides that, the invisible exploitation of widows was there. To justify the situation of the nineteenth century, where the 'Sati' was banned, she criticised that 'It is obvious women are saved from such irreconcilable practice, but still women are struggling in their daily life and fatality in life' (Sukhlata Kumari, 1923, 436). She believes that funeral customs immediately finish widows' lives, but widows, bound to follow societal norms, were debarred from society as existing beings. It ruins widows' existence for their whole life. Observing the

struggle of widows of the twentieth century seems their survival was utterly painful. She questioned, 'Is abolishing the Sati practice the main reason to make women's lives more painful?' (Kumari, 1923, 437). She criticised Sati customs by pointing to customs and awful practices imposed on women to make their prosperous life hell. Being aware of the empowering perspective, she stated that

'women were handed over to men for centuries, so after the death of their husband and surviving from 'Sati practice', they were not allowed to leave their in-law's house; I agree that the assemblies (British assembly) were definitely saved them from being burnt alive, but now in a living condition, they are slowly being left in the fire of misery. Furthermore, the struggle of poverty is now smouldering their life' (Kumari, 1923,437).

Hence, by such restrictions, widows were financially dependent on others and forced to manage household activities that stabilise them financially. Due to the early age of marriage, women remain uneducated, and the unfortunate death of their unsuitable partner (old aged person) led them to more suffering. The illiterate women and widows were only familiar with the household activity, so they could not qualify the criteria for high-quality work such as teaching and other literary work. This situation made them depend on others for their financial expenses.

In her essay, she explained the problem of widows; after saving them from their husband's funeral, the Indian social order imposed countless restrictions on them. Widows were going through an awful situation by the laws implying them. She further said,

'I believe that the widows must be saved from the burning of their life from their husband's rites, however at present, for their entire life they have thrown out in sorrowfulness, this cremation practice might end them up in a couple of time, but the fire of social adhere, helplessness and poverty keep on striking them for a lifetime' (Kumari, 1923,437).

She questioned the belief and practices of religious institutions that made widows' lives suffer. She considered the financial state of widows after their husbands.

The social customs imposed on widows were the death limits and a misdeed of Hindu society; the widow's life was ruined, 'despite that Hindu religion does not feel the tortures and pain of widow's life'(Kumari, 1923, 437). The loss of Hindu society and evil practices follow, making a widow's life similar to a half-dead. She condemned governing body of the ancient social order and ended up with widow's life struggles, and she suggested not smashing the ancient tradition by allowing widow marriage. She believed in introducing a law for widows to obtain financial independence (Kumari, 1923, 437). She argues that Indian social institutions should grant pensions to the widows to substitute for their remarriage. She reasoned that the economic dependency of widows leads them to remarry.

To control their economic autonomy and survival, widows were stepping towards remarriage. According to Sukhlata Kumari, 'it is essential to provide financial assistance to widows. If widows start to get a pension, they will not remarry'(Kumari,1923, 437). She was trying to compensate the widow for remarriage with financial assistance. Sukhlata Kumari was concerned about the economic liberty of widows and reform in their life after the financial crisis. However, she disagreed with the idea of widow remarriage. Her concern was only to librate financial matters to protect the ancient customs; even after getting financial support, widows cannot be free from traditions and laws made for them; they have to follow them even after being independent.

The concept of female education proclaims that educated girls will educate society. This scenario was materialized to educate women only to make an ideal wife for a well-educated male partner. However, it was followed by the female authors. In her essay, '*Vidhwaon Ke Karya*' (Widow's work), Padmabai Sanjeevra (M.A.) focused on the widow's contribution to female education, which was the time demand. She explains,

'We need some educated female teachers to educate our girls; we need women doctors and lawyers who can help with the needs of women. We need women municipal commissioners who keep the city clean as keeping their homes clean and tidy'(Padmabai, 1923,439).

She believes widows only can create purity and courtesy in public life by contributing to society. With the help of widows, cultural values can be more beautiful and proud. She further said,

‘We believe that the unique benevolence nature of widows should be used for the public benefits, as they never engaged as the advantage of healthy personal interests’ (Padmabai, 1923,439).

She believes that a widow can engage in recreation in building our society magnificent. They are not trouble for the community; therefore, people should take the responsibility to improve their lives by treating them as part of society. By replying to her, the editor of *Chand* has justified the situation of female education. She believes that the girls could not access education due to fewer girls' schools and teachers, so it was essential to appoint a female teacher that only widows can do.

Furthermore, girls' parents did not allow their girls to get combined education; however, widows can contribute to girls' education by adopting a teacher occupation. The editor of *Chand* wholly agreed with Padmabai's idea of the widow's involvement in the education and teaching occupation. Widows should not be treated as a secluded part of society; they can contribute to society by connecting to female social welfare activities. However, she favoured widow involvement in different social activities but did not concern with widow's remarriage.

This fear and anxiety allowed space for a passion for preserving the culture and purity of Hindu women to be protected from the loss of Hindus. Hindu widows were the foremost survivor of this conspiracy. Moreover, they were expected as a saviour of Hindu identity linked with the serving nation as a true patriot.

The news source section of '*Chand*' published a separate column entitled '*Samachar Sangrah*'. A story entitled '*Musalman Ke Sath Nikah*' on widow conversion was published in the section. The story narrated by a widow,

‘In an Arya Samaj temple, of Lahore, a widow came with her girl child and requested re-conversion. She describes her story as a wife of a Hindu [Thanedar] (Superintendent Inspector) who married two women, the person (Thanedar) was aged, despite that she to marry him. After the

death of her husband, she was accused of property encroachment by his second wife and son. No lawyer was ready to take her case as she was an unaided widow with any help; she lost the case. Due to her financial crisis, she married a Muslim guy to manage her financial hold and converted to Islam. Later she apologised for her conversion and wanted re-conversion to be pure' (Chand 1923,504).

Such conversion stories were discussed in *Chand* by the editor. However, this story well mentioned the condition of widows and how they struggle with the financial burden. They were allowed to get married in their religion, but Hindu men were not ready to marry a widow because of the societal pressure they faced after marriage; hence, they (widows) were persuaded other way towards other religions to survive, and even they met the same condition in other faith.

*Chand* narrates the story of Sardar Khan from Gujarat's 'Bhallu' District. He was a clothes peddler and abducted a Brahmin widow. Brahmin widow stayed with him for ten years. Furthermore, she gave birth to a girl child; due to her miserable health condition, Sardar Khan kicked her out and took all the ornaments. Later she got sheltered in 'Ashram' with her daughter. As she was a Brahmin widow, no one was ready to accept her because she became impure after staying with a man from another community. Hence, in every situation, widows were suffering.

Hundreds of Kshatriya (upper caste) women converted to Islam (Chand, 1923, 505). Chand narrated such conversion stories about the illiterate person named Ramlal Jhelum and published them. In this essay the thumb impression of Ramlal who narrated this story. (Aparna, Basu, 1990)

An Article by Pt. Ramshankar Awasthi (editor of 'Vartman') entitled '*Widhwaon Ke Do Anshu*' (Tears of widows) explains the social condition of Hindu widows. He gives reasons for the tears of Hindu widows. He describes the 'Sati practice' and the attainment of their husband's funeral pyre, 'lacs of Hindu widows, are crying because of the dreadful deeds of the Hindu religious conviction. However, the unkind Hindu men do not have any mercy on widows. This immorality over widows will put the country and society in danger. If the situation remains the same, Hindus will lose their existence. The number of widows was increasing. Hindu widows are

experiencing awful torture inside every house (Awasthi, 1923,486). He was requesting to reform the fierce mistakes that Hindu revivalists made against widows. So, the fear of Hindu men appears in their writings as self-critique and excess guilt. Intellectuals justify that cultural and religious restrictions made widows convert to other religions significant to the Hindu community.

An article titled '*Chand ki Niti Par Apeksha*' (critics of *Chand* policies) was written by Ramrakh Singh Sahgal (Chand, 1923). The article primarily followed the criticism of widow remarriage. It discusses the criticism of widow remarriage by the readership. The editor of the journal Ramrakh Singh Sahgal tried to justify critics' foremost aims and objectives on widow remarriage in the essay. The entire article explains his views on widow remarriage to intellectuals who question *Chand's* stance on widow remarriage. People who opposed the widow's remarriage have disagreed with its publishing policy on widow's remarriage. Fear and anxiety of the fundamentalists' group can be recognised through the editor's justifications.

*Chand* diverted its pre-defined path alleged gentlemen, the intellectuals community that raises objections on *Chand* widows has written their views about widows; they condemn that 'if *Chand* no longer called a women's social association if it should be called a widow's marriage assistant magazine would not be inappropriate' (Sahgal,1923,12). Such kinds of mocking words of conservative groups raise on the editor to oppose the idea of widow remarriage. By providing the intellectuals and cultural lineage to Hindi literature, the intelligentsia of the Hindi belt argued that the journal changed its approach toward widow remarriage, which is a massive loss for Hindu society. By mocking, conservatives suggested that changing its [*Chand*] name from a women's journal to a widow's centric journal would be appropriate. The author (editor) of the essay tried to prove his generosity to the gentleman by raising the question of widow remarriage. His fear of preventing the Hindu privilege Sahgal justified himself for favouring the widow's remarriage concerned the gentlemen readers to be aware of the societal condition of widows.

Intellectuals group opposed the idea of widow remarriage through their critics in journals. The widow remarriage situation is not regarded as ideal for society during early colonial rule. For Hindus, marriage is a lifetime and sacred bond which can never

be split up. Cultural moderates believed that widows could save the ancient traditions by not marrying and devoting their lives to God. Hence it was the only way to keep old customs. Widows are considered goddesses with a purity of hearts; it cannot be a question of guilt on their decent behaviour, and society should not force them to remarry. The remarriage was the question of their dignity. With this attitude, a community that believes in ancient customary laws opposed widow remarriage.

On the criticism of widow remarriage, Ramrakh Singh Sahgal explains that ‘Some gentlemen complained that we are not printing any published remarks in *Chand* against the widow remarriage; it is visible in writings and poetry of prominent Hindi scholar like Shri Ram Krishna Mukund, Pursottam Das Ji Tandon, Smt. Padmabai Saji Rao's and Krishna Kumari Baghel Ji. This intelligence committee had discussed against widow marriage’(Sahgal, 1923, 12). Thus, the prominent figures of Hindi literature opposed widow remarriage. The editor proudly justified to the gentlemen that the committee defied widow remarriage. He further said, ‘no sensible person can take widow marriage as his ideal, and no one will dare to say that widow marriage must be done’(Sahgal. 1923, 12). The editor tried to defend himself from the people inquiring about widow remarriage by explaining such an example. The fear of discussion about widow remarriage was shaped by such kind of narrative. Opening up on the favouring of widow remarriage was a sin, so remarriage consider an unacceptable status. Therefore, very few people were ready to marry widows.

Later, editor Ramrakh Singh Sahgal defended the child widows who had never seen their husbands' faces even though they did not remember the person they married. The fundamentalist group's fear and anxiety showed up in control over the sexual desires of adult widows, especially after adolescence, widows are considered an uncontrolled sexual entity. According to moderates, widows weakened the Hindu society, except those who kept it under control and secluded upheld their purity. These moderates became indebted to those widows who were under control by the customary laws. By condemning ancient customs, Sahgal said that the ‘widow ensures that there is no way for her to fulfil her wish within Hinduism, so without hesitation, widows run away with a rogue (Muslim) of her own will, they perceive that there is no way to satisfy their desire in Hinduism, so they passionately embrace a wicked

(Muslim)'(Sahgal, 1923,12). Sahgal believes that the strict Hindu religious law embraced widows in other communities.

By converting to other communities, Hindu widows were considered a harmful substance to the legacy of Hindu society. According to the editor,

‘every community has hardhearted men and women. Therefore, control over society and widow's liberation is impossible. Similarly, various instances appeared when girls approached their family to marry their relatives; their [family's] religious belief, they [widows] were denied such a step. These restrictions on the life of widows resulted in leaving their houses. They escape from their homes—also, they married a man of their choice and converted to other community male partners’. (Sahgal, 1923, 12)

Hence, women imagined the freedom they were keen to find in other communities' partners, but similar discrimination in the Hindu community. So no matter what religion women belonged to, they had to suffer everywhere.

‘Hindu Widow Remarriage Act XV’ was enacted on July 26, 1856; besides, the question of widow remarriage remains the same. The fear and anxiety discussed by conservatives slowed the practice of Hindu widow remarriage in society.

The essay concluded with a necessary discussion on the reason behind widowhood and preventing remarriage. Therefore, prime control over child marriage, polygamy, and widow marriage issues were the centre of a debate. These are the underpinnings issue of widowhood to control widow remarriage. It was the utmost responsibility of widows to save the purity and dignity of Hindu culture. Without upholding the other sins related to women, the widow's disgrace cannot control until then; they encouraged the widow's remarriage. *Chand* justified its proclamation to the people arguing about widow remarriage harms social order beliefs and views. According to the social reformers, Widow remarriage compensates to save the purity of widows from Muslim men.

‘*Vidhava Vivah Mimansa*’ (Widows remarriage epistemology), a book published by *Chand* Press, where *Chand* highlights its statement that ‘the journal does not support

the widow's remarriage. This book was the finest example to reduce the burden of widow remarriage among its readers. By notifying in its column, the book editor believed that

'we oppose widow marriage, but there are the people mistaken about widow remarriage and our (*Chand*) stand, we curse widow marriage with all the strength of our heart' (Sahgal, 1923, 12).

Hence, the editor refuses to support widow remarriage due to the fear of questioning by moderates. The editor substantiates his disagreement with widow remarriage. Hence, it evidenced that *Chand* was concerned about widow remarriage but was not in favour of it. *Chand* rejected the idea of widow remarriage only to accumulate the self-centeredness of religious communities. Shahgal (1923) believes that 'the situation in which our society entangled today exists because widows could hardly be imagined as an ideal social reformer of society' (Sahgal, 1923,12). The editor empathies with the widow's misery and believes they are never considered a contributor to society. Hence, widows' pathetic condition and their social exclusion became the extreme reason for their unhappiness.

The editor further said, 'If the widows control their sexual carving, they will save Hindu culture' (Sahgal, 1923, 12). The editor requested social reformers not to hate widows; their (social reformers') most important concern should be protecting the Hindu community.

He said,

'the sorrow of a child widow left their home at a young age and put them into prostitution, leading to conversion into other religious communities, such as Christianity and Islam, getting out of the house for young widows, leads to adopting prostitution move towards Islam or Christianity, pushing our country and society in social collapse'(Sahgal 1923, 12).

Child widows faced a worse situation than other middle-aged widows who could live by involving themselves in the religious path. However, due to the reformist law for child widows, their childhood happiness was restricted in adolescent age. All

restrictions were compulsory for widows to control their intimate desire because they could not remarry. Similarly, these cultural liberators wanted to reform widows' lives, but they were not ready to compromise to harm their religious sentiments.

## Conclusion

The champions of social movement and the saviour of Hindu culture formed their associations to provide education and vocational training to women for their development. However, the reform for the widow community was motionless and remained the worst. Social reformers were fighting for their survival existence in society. As widows, they were treated as helpless, and the most weakened women of humanity could not marry the man they liked. With the imposition of law by the ideal Hindu society, men were also afraid to marry a widow. These widows became the worst sufferers of Hindu male anxiety discussed in the community and written in journals. That is why the intellectual groups of women questions always remained unsatisfied with widowhood. Widows suffering became worsened than women of other communities.

Widows' lives worsen by maintaining the burden of the Indian culture to national pride. Hence, the prejudices against women discussed in ancient culture remain unchanged in public and private places. The narrative appears in Hindi journals that Hindus were losing their innocence and purity because of the playful deeds of widows, which might not reflect the genuine tale of widows.

However, in every circumstance, widows life connected with financial crises for their existence. This crisis forced widows to participate in the conversion movement to other communities by some means. That reduced their financial burden. It was a result of the majoritarian community instilling the feeling of community consciousness. There were two reasons to reject the idea of Widow's remarriage; first, their conversion made them impure among the Hindus, and Hindu men were not ready to marry converted widows. The second reason is that according to Hindu law, widows' remarriage is a wrong deed it can not be ideal for society. As a result, later in saving the cultural purity of Hindus, widow remarriage advocated for protecting the Hindu community from the

threat of religious conversion into other religious communities. Fundamentalists encouraged widow remarriage to control the population of other (minorities) communities. In support of widow remarriage, the fundamentalist realised the need for widow remarriage should be part of the social reform movement; widows were allowed to get married. Considering this article, we cannot be sure that the changes in the lives of widows made by the social reformer are genuine. They (social reformers) were more concerned with rescuing Hindu sentiments than widows. To some extent, widows are silently facing discrimination by following societal norms, and still, widows' life is misery.

### **Bibliography & References:**

- Basu, Aparna, and Bharati, Ray. (1990). *Women's Struggle a History of the All India Women's Conference, 1927-1990*.
- Chandra, Sudhir. (1998). *The Oppressive Present: Literature and Social Consciousness in Colonial India*. Rutledge, New Delhi.
- Chand, Vidhwa Ank, (April 1923):506-507.
- Chand, Vidhwa Ank, (April 1923): 486.
- Devi Sukhlata, Kumari. (April 1923). 'Bharatiya Vidhwaon Ka Jeevan' ('Life of Indian Widows'), *Chand*, p. 436-437.
- Ganneri, R. Namrta. (2013). Perspectives on Women and Communal Politics in South Asia. *Women's Links* 19, no.3. 1-11.
- Gupta, Charu. (1988). Articulating Hindu Masculinity and Femininity: 'Shuddhi' and 'Sangathan Movements' in United Provinces in the 1920s. *Economic and Political Weekly* 33, no.13, 727-735.
- Gupta, Charu. (2001). *Sexuality, Obscenity, Community: Women, Muslims, and the Hindu Public in Colonial India*, New Delhi, Orient Black Swan.
- Jones, Kenneth W. (1989). *Socio-religious Reform Movements in British India*. (Vol. 1). United Kingdom, Cambridge University Press.

- Jhelum, Ramlanarrated. (April 1923), 'The story of Mother, *Chand*, Chand Press Allahabad.
- Mehta, B. & Shah, Trupti. (1992). Gender and Communal Riots. *Economic and Political Weekly* 27, no.47, 2522-2524.
- Nijhawan, Shobna. (2011). *Women and Girls in the Hindi Public Sphere: Periodical Literature in Colonial North India*, New Delhi, Oxford University Press.
- Orsini, Francesca. (2009). *The Hindi Public Sphere 1920–1940: Language and Literature in the Age of Nationalism*. New Delhi, Oxford University Press.
- Pande, Rekha. (2018). The History of Feminism and Doing Gender in India. *Revista Estudos Feministas*, 26.
- Sahgal, Ramrakh Singh. (April 1923). Vidhwaon Ki Durdasha ('Widow's Misery'), *Chand*, Allahabad, (Vol 1). 497-498.
- Sahgal, Ramrakh Singh. (November 1923). 'Chand Ki Niti Par Apeksha', ('Obligation on Chand Policy'). *Chand*, Allahabad. 10-13.
- Samachar Sangrah*' (April 1923), *Chand*,: 504-05.
- Sanjeevrai, Padmabai. (April 1923). Vidhwaon ke Karya ('Work of widows'), *Chand*, Allahabad. 439.
- Talwar, Vir Bharat. (1998). Feminist Consciousness in Women's Journals in Hindi, 1910–1920. In Kumkum Sangari (Ed.), *Recasting Women: Essays in Colonial History*. New Jersey, Rutgers University Press, 204-232.

## **Individual Autonomy and Identity of Muslim Women in India**

**ARIFA KHATOON\***

**arifakhatoon08@gmail.com**

Autonomy is complex construct that concern the regulation of behaviour by the self, or the authorship of one's behaviour, as opposed to behaviour being controlled by forces perceived as outside the self. When individuals are autonomous, their behaviour is self organized and self-endorsed, and their actions are experienced as fully voluntary and authentic. The opposite of autonomy is feeling pressured, coerced, or compelled to act by forces or pressures perceived as external to the self. Until the recent past, the autonomy of Muslim women was curbed in every sphere of social life in India. They were not permitted to go out and to participate actively in social and economic spheres. The Muslim woman have been pushed into seclusion and segregation. Therefore, they could not secure platform from which they could mobilize their sisters and fight for regaining the lost privileges, as well as seek further the improvement in the context of continuously changing conditions” (Saiyed,1992). The role of women as housewives and mothers has received paramount importance. They were discriminated against in most of the sphere of social life.

### **Decision-Making : Ethnic and Religious Barriers**

There is a general stereotype that certain principles and norms of Islam are primarily responsible for educational backwardness of the Muslim women. But there is no theoretical and empirical basis of such a stereotype (Begum,1999). However modernization and development have brought about several changes in the status of Muslim women. Unlike in the past, they begin to take part in social, economic and cultural activities. Hijab is the most important barrier of freedom of Muslim women. Because of Purdah In the past, the autonomy of Muslim women was Limited. They were not only suffering from the sanction of purdah system, but also from the

---

\* Research Scholar (Ph. D.), Department of Anthropology, MGAHV, Wardha

restrictions imposed on them by Muslim men. Added to this, the moulvis and other religious authorities had laid down many restrictions on Muslim women. Consequently, free movement of Muslim girls and women was restricted. They were prohibited from going out of the house to market, from shopping and attending public functions. Even if they were to go, they had to cover their body from head to foot by wearing burkha. Free mingling with men was not permitted. Thus, due to too many restrictions imposed on them, it was difficult from them to develop as individuals properly. Excessive dependence on men has deprived them of enjoying many privileges like the pursuit of Higher Education, taking up jobs, developing self identity, etc. Moreover, the involvement of Muslim women in decision making process was seen to be minimal. But it is important to note that every section of society has been influenced from the forces of modernization and development to a greater or lesser degree. Muslims are no exception to this general rule. In the context, it is important to find out the autonomy enjoyed by Muslim women in various spheres of social life.

Individual autonomy and separate identity is one of the features of civilized society. The process of modernization has helped and individual to develop his distinct personality. In the past, the feature of Individuality has been submerged within society. Emphasis was given only to collective efforts of people. However, today individuals are considered as most important and recognized to a greater extent. Keeping this in mind and attempt has been made to analyze how far individuality has emerged among Muslim women. To what extent do they process autonomy in various matters of social life? To what extent has their autonomy been constrained by Muslim men? As we know education plays an important role in autonomy and identity of Muslim women. The right of education is equally shared by men and women. Although the premise of equality is a general nation in Islamic law, at time differences in legal rulings can be found which, with analysis, are deemed to suit her feminine nature. The prophet said, “seeking knowledge is an obligation for every Muslim”. Hadith applies to women just as it applies to men. The prophet is also reported to have said, “if a person has a daughter who is refines and educates, as well as spending generously on her from that which Allah has blessed him with, then she shall be a shield for him against the Fire” (Ahmad,2009). Until of this still is present Muslim women education condition is very

poor. In the present, Muslim women are the most uneducated section of our society. If the Muslim society want to progress then they should educate his women first. Because In every community progress depends both of the member of the society, that are men and women.

### **Women's Rights in Islam**

In Islam, Muslim women have many rights to to take their decision own. Islam gives educational, to choose their life partner, economical and property rights to women. According to the Islam, Muslim women can earn and live their life proudly. Prophet Muhammad's first wife was a business women. She was self depend women in that time. His another wife Amna was a scholar of hadith. She was a very wise woman. Not even domestic life in every sphere of life Muslim women have right to do what they want. Muslim women have a right to take talaq also, if they are not happy in their married life. But the key point is women,s don't know their right which is given by their religion as well as Indian Constitution. In the graph of autonomy Muslim women shows very low freedom. Currently women's Islamic initiative in spirituality and equality in Universal Deceleration of Muslim Women's rights, declared 30 rights of Muslim women. Some of them are mentioned here;

1. Social mobility - To exercise her abilities and talents through her active participation in social, political, and religious activities, thereby improving her personal position and contributing to the advancement of her community.
2. Protection from domestic and all forms of violence - To maintain her health, mind, and dignity in a peaceful partnership and not be subject to any form of intimate partner or family violence that results in physical injury. To prevent emotional verbal abuse, financial control and all forms of violence that threaten her life and the thriving of the family. To recognize that violence against women transcends the public and private spheres by causing harm to women, their families, communities and future generations.

3. Pursue a career - To provide choice and opportunities for her to pursue her talents and skills through gainful employment, enabling her economic agency and her contribution to the betterment of society.
4. Marriage rights - To choose her marriage partner without coercion and share in a harmonious marriage where she and her partner share mutual love and respect as they build a healthy and joyous family unit.
5. Exercise religious and secular education - to receive quality education, basic or advanced, to acquire universal knowledge, to participate in the provision of education by having equal access to educational institutions, libraries, madrasas, and scholarship, thereby achieving her intellectual and spiritual potential.
6. Exercise Civic and political leadership - To exercise her leadership abilities in political and civic positions promoting justice and peace in the service of her faith, community and nation, resolving conflicts within her community and for humanity at large.
7. Exercise freedom of speech - To provide full security for her to voice her ideas, beliefs, and opinions, realizing her potential as a moral, ethical, spiritual, and intellectual being and her equal participation in the construction of a resilient, adaptive and prosperous society.
8. Divorce rights
9. Choice regarding entrance into or accepting polygyny
10. Prevent forced marriage
11. Family planning and abortion
12. Financial independence and equal pay
13. Inheritance rights
14. Property ownership
15. Motherhood vs womanhood
16. Exercise religious leadership

For the equality and individual identity of Muslim women, women rights should be implemented by our society.

### Women Autonomy

Autonomy has been defined as the freedom enjoyed by a person in decision making relating to household maintenance, children's education, marriage, moving out from their house, spending money taking part in social organizations, and exercising his/her franchise. It is argued that religious values and cultural practices in traditional settings restrict women's decision-making options and freedom of movement at the same time that they encourage and favour their reproductive role. Recognizing the importance of the family as the basic social unit and the complementarity of male and female role in such societies, it is likely that women tend to play a major role in household matters and exert substantial influence on domestic and reproductive decisions because they fall within the socially prescribed female domain. It is alternatively argued that the outside role of men and their control of the economic resources empower them to have more influence on household decision-making, whereas women's position and role within the household depends much more on their social and economic status, access to education, health care, job opportunities, etc. Thus, the association between women's decision-making autonomy and demographic outcome could be affected by their social and economic class and the variability and complexity of gender relations within the across societies.

In spite of all these restrictions and boundaries we must say that the condition of Muslim women is changing day by day. Here an example like Nikhat Zareen, who won gold medal in women's World Boxing championship. Nikhat comes from Muslim community. Many other Muslim women doing well in their career life currently.

### Reference :-

- Saiyed, A. R. (1992). *Muslim Women in India: An overview, in Muslim women in India*. (Editor: Mohini Anjum). New Delhi: Radiant Publishers.
- Begum, Rokaiya. (1999). *Education and the Muslim Women, in India Muslims Precepts and Practices*. (Editor: Noor Mohammad) New Delhi: Rawat Publications.
- Ahmad, Yusuf Al-Hajj. (2009). *Encyclopedia of Islamic Jurisprudence Concerning Muslim Women*, Darussalam.
- Bano, Firdaus. (June, 2017). *Educational Status of Muslim Women in India: An Overview*, Journal of Humanities and Social Science.

## हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता

शिव कुमार मेहता\*

shivkumarmehta135@gmail.com

आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण 19वीं शताब्दी के बाद इस देश में स्त्रियों की स्थिति और नियति में यथोचित विकास हुआ है। इसका एक कारण वैज्ञानिक विचारधारा के साथ-साथ औद्योगिकी का निरंतर विकास है। इसी के साथ ही शिक्षा के आवश्यक अधिकार के क्षेत्र में आ जाने तथा शिक्षित प्रबुद्ध वर्ग में अभिवृद्धि के कारण भी स्त्रियों की स्थिति में आमूल-चूल सुधार हुआ। इसका प्रभाव देश की आजादी के बाद लिखे जानेवाले उपन्यासों में दिखाई देता है। स्त्रियों की बदलती परिवारिक-सामाजिक आर्थिक-सांस्कृतिक स्थिति ने संकेत देना शुरू किया है कि इन पचास-साठ वर्षों में उनकी स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है तथा पुरुष वर्चस्व वाले समाज में अपने हक-हैसियत के लिए उन्होंने दस्तक देना शुरू कर दिया है, जिसमें काफी दूर तक वे सफल भी हुई हैं। समाज में पूर्व की अपेक्षा बुद्धिजीवी नारियों के प्रतिशत में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई है। इसके बावजूद स्त्रियों का एक बड़ा भाग आज भी प्राचीन रूढ़ियों से त्रस्त और शिकंजे में कसा हुआ है।

मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' में बुद्धिजीवी कामकाजी नारी की स्थिति का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की नायिका शकुन बौद्धिक है, कामकाजी है और आर्थिक तौर पर स्वतंत्र है। यद्यपि इस उपन्यास के केन्द्र में 'बंटी' है पर शकुन बंटी के चतुर्दिक आद्योपांत घूमती रहती है। शकुन आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर होने के बावजूद दाम्पत्य की दृष्टि से असंतुष्ट है। शकुन और उसके पति अजय में शुरू से ही तारतम्य का अभाव है। दोनों के दाम्पत्य में सुखी जीवन का संकेत लेखिका ने कहीं नहीं दिया है। विघटन और उसके बाद स्त्री के जीवन में आये बिखराव को ही अधिक तूल दिया गया है। मन्नू भंडारी यह जानते हुए भी कि अजय और शकुन पति-पत्नी के रूप में मानसिक तौर पर सुखी नहीं हैं। दोनों के जीवन में टूटन और घुटन है। फिर भी प्रयोगात्मक तौर पर उसे भारतीय पति-पत्नी के रूप में चित्रित करने का साहस किया है। अजय से अलग होने के बाद भी वह लगभग सात वर्ष तक अपने एकमात्र पुत्र बंटी के सहारे जीवन जीती है। अपने विच्छिन्न जीवन के सूत्रों को जोड़ने की संभावनाएँ तलाशती है, पर सफल नहीं होती। लेखिका ने अजय से बिछुड़ने के बावजूद शकुन के किसी कोने में बैठे अजय के प्रति आत्मिक लगाव को इन शब्दों में व्यक्त किया है - 'चाचा ने बंटी के लिए खिलौने दिये तो जाने क्यों लगा था कि ये मात्र बंटी के लिए ही नहीं है। बंटी को माध्यम बनाकर उस तक भी कुछ भेजा गया है। अजय आया, अलग ही रहा। बंटी को बुलवाया। उससे तो

\* पीएच. डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)

मुलाकात तक नहीं की फिर भी शकुन को लगता रहा कि न मिलकर भी अजय जैसे कहीं फिर उससे जुड़ गया है।<sup>1</sup> अजय का मीरा के प्रति घनिष्ठ संबंध होने पर शकुन उसे पूरी तरह छोड़ देती है और मन की क्षुब्धावस्था में डॉ. जोशी की ओर आकर्षित होती है। अंततः उससे विवाह भी कर लेती है। शकुन के पुनर्विवाह के द्वारा लेखिका ने यह दिखलाने की चेष्टा की है कि बीसवीं शताब्दी में स्त्री परवश नहीं है, वह स्वतंत्र निर्णय ले सकती है और नए ढंग से नए जीवन की भी शुरुआत कर सकती है। शकुन के द्वारा पुनर्विवाह का निर्णय नए विचारों से ओत-प्रोत और समन्वित है। लेखिका ने इस संबंध में अपना मत इन शब्दों में दिया है- “जो कुछ भी हुआ वह बहुत सुखद नहीं है; पर वह अंतिम भी नहीं है।”<sup>2</sup> इस तरह शकुन के चरित्र द्वारा लेखिका ने नए दौर में विकसित स्वतंत्र और बौद्धिक नारी के व्यक्तित्व की स्थापना की है। शकुन के विचार स्त्री-स्वातंत्र्य के प्रतीक और मानदंड के रूप में है।

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास ‘मैं और मैं’ में एक ऐसी बौद्धिक और कामकाजी नायिका का उल्लेख किया है जो लेखिका है और अपनी रचनाओं की प्रशंसा सुनने के बाद प्रशंसक पर रुपये लुटाती रहती है। ‘मैं’ का द्वित्व आकर्षण पैदा करता है। एक ‘मैं’ में नायिका गृहिणी और घर-परिवार के दायित्वों के रूप में निर्वहन करती है और दूसरे ‘मैं’ में लेखन के दायों का निर्वहन हुआ है। एक लेखिका के तौर पर कोई स्त्री समाज में घुसे धूर्त-मक्कार के द्वारा बुने गए जालों में कैसे फंसती जाती है और अंततः अपने सूझ-बूझ से कैसे उस धूर्त-मक्कार को ही गच्चा दे जाती है, उसका बड़ा ही रोचक वर्णन इस उपन्यास में हुआ है। डॉ. तारा अग्रवाल ने इस उपन्यास को ‘सृजन की लंबी छलांग कहा है।’<sup>3</sup> उपन्यास की नायिका माधवी है, जो एक लेखिका है। कौशल नामक एक दूसरे लेखक से उसका परिचय होता है। कौशल माधवी के लेखन की जमकर तारीफ करता है, प्रशंसा के पुल बांधता है, जिससे प्रसन्न होकर माधवी उसकी हर कही-अनकही बात स्वीकार कर लेती है। फैक्ट्री खोलने के नाम पर उससे रुपये उधार लेता है किन्तु फैक्ट्री खोलता नहीं। माधवी को जब एहसास होता है कि वह कौशल के द्वारा ठगी का शिकार हुई है, तो वह भी उससे झूठ बोलकर खूब ठगती है। उपन्यास में लेखिका ने ‘ब्लैकमेल’ होती हुई एक स्त्री की परिस्थितिजन्य स्थितियों से अवगत कराया है। मृदुला गर्ग की कथा-कहानियों की आलोचना करनेवाली आलोचक डॉ. तारा अग्रवाल का इस उपन्यास के संबंध में टिप्पणी है कि “मानवीय संबंध किस हद तक अमानवीय और सहानुभूति ब्लैकमेल बनती जा रही है, इसे मृदुला गर्ग एक ही वर्ग के लेखक के दो व्यक्तियों के माध्यम से पर्त-दर-पर्त खोलती हैं।”<sup>4</sup>

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास ‘अगनपांखी’ में भी स्त्री की विवशता बेरोजगारी और अर्थाभाव से जूझती हुई स्त्री की कहानी है। पूरी कहानी नायिका भुवन के इर्द-गिर्द घूमती है। भुवन अपनी माँ के साथ नानी घर में रहती है। चंदर भुवन की बड़ी बहन का बेटा है। नाना की मृत्यु के उपरांत नानी अपने सभी जरूरी काम चंदर के पिता से करवाती थीं। खेतों की देखभाल से लेकर बाजार तक के काम की जिम्मेवारी वे सभी मिलजुल कर करते थे। चंदर का मन अपने गांव से अधिक नानी के गाँव में लगता था। भुवन और चंदर रिश्ते में मौसेरे भाई-बहन थे। चंदर की नौकरी को लेकर भुवन को एक बड़ा त्याग और एक तरह से जीवन से समझौता करना पड़ा

क्योंकि चंद्र के पिता ने भुवन के विवाह का निकृष्ट समझौता कर लिया था। विराटा के जर्मीदार अजय सिंह का छोटा भाई बीमार और पागल था। उन्हें एक सुंदर सुशील लड़की की तलाश थी। उन्होंने चंद्र के पिता से भुवन का हाथ छोटे भाई के लिए मांगा और बदले में नौकरी दी। किंतु, दुर्भाग्यवश उसके बीमार पति की मृत्यु हो गई। अजय सिंह ने छल-बल से भुवन को सती बनाना चाहा पर बेतवा में कूदकर उसने अपनी प्राण रक्षा की। पूरा उपन्यास स्त्री की विवशता और संघर्षों से भरा हुआ है। इसी तरह अपने एक अन्य उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में लेखिका ने मानव जीवन को आर्थिक तौर पर प्रभावित करने वाले कुछ संदर्भ दिए हैं। उपन्यास में नायिका का आकर्षण अपने ननिहाल के बगल में रह रही एवं सहेली उर्वशी के प्रति है। वह उसे अपनी छोटी बहन की तरह प्यार करती है। दुर्भाग्य से उर्वशी गरीब पिता की बेटी है। किंतु, नायिका के नाना के प्रयास से उर्वशी का विवाह एक धनाढ्य परिवार में होता है। जन्म से ही अभिशप्त उर्वशी कुछ दिनों के बाद विधवा हो जाती है और दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता। कालांतर में उसका स्वार्थी और बेरोजगार भाई अजीत उर्वशी का विवाह नायिका के बूढ़े और विधुर पिता से धन के लोभ में करवा देता है। मैत्रेयी पुष्पा ने स्वार्थी और लोभी भाई के चरित्र को एक स्त्री पात्र के मुख से इस प्रकार कहलवाया है- 'ऐसो पापी भइयाँ देखो तुमने बाई विदातो होत देखी अपनी विरादरी मै, पर ऐसो सौदा होत नही देखी। भेड़े-बकरिया की तरह बेच गये कसाई जैसे। कछु रिश्ता संबंध न हो अपनी बहन से।'<sup>5</sup> डॉ. सीता मिश्र 'बेतवा बहती रही' की समीक्षा करती हुई लिखती हैं कि 'यहाँ परिवार है और समाज भी है, अर्थ-सिद्धि की कुटिलता भी है और मानव की उदात्तता भी है। जहाँ एक भाई जिसकी पृष्ठभूमि में अभावों की विपन्नता की क्रूर सच्चाई है। शिक्षित होने पर भी अपनी बहन का हाथ एक वृद्ध व्यक्ति के हाथ सौंपने के लिए इसलिए तैयार हो जाता है कि उसकी एवज में उसके दिए गए रुपये उसके अभावों की खाली झोली को भर सकता है। अब तक जो रिश्ते-नाते पवित्रता की कसौटी पर कसे जाते रहे हैं बदलते आर्थिक मूल्य उसे निम्नस्तरीय स्वार्थपरता की तराजू पर तौलने लगे हैं।'<sup>6</sup>

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' स्त्री की पुरुष द्वारा अवांछित कार्य के लिए दबाव देने और उसकी विवशता से लाभ उठाने की कोशिश पर आधारित है। यह सच है कि स्त्री जब किसी काम-धंधा या नौकरी-पेशे से लगी हो तो स्वार्थी पुरुष उसका दुरुपयोग करना चाहते हैं। 'शाल्मली' उपन्यास में लेखिका का दृष्टिकोण इसी सच को उजागर करना रहा है। शाल्मली एक मध्यवर्गीय परिवार की सुशील और तेजस्वी बेटी है। वह पढ़-लिखकर किसी ऊँचे पद पर पहुँचना चाहती है। इसी बीच उसका विवाह नरेश से हो जाता है और विवाह के थोड़े दिनों बाद ही उसका चयन ऊँचे पदाधिकारी के रूप में हो जाता है। उसके पदाधिकारी बन जाने से सभी खुश थे। पर नरेश में कुंठा घर कर गई थी। शाल्मली के पद और प्रतिष्ठा को वह स्वीकार नहीं कर पा रहा था। बात-बात पर प्रताड़ित करता और उसके स्त्री होने की उलाहना देता रहता था। शाल्मली शांत-भाव से सब कुछ स्वीकार करती हैं किंतु उसे आक्रोश तब होता है जब नरेश बलपूर्वक उसके पति का दावा करने के बाद उसकी अफसरी का लाभ उठाना चाहता है। शाल्मली मन ही मन छटपटाती है, अलग रहने की बात सोचती है किन्तु अंततः सूझ-बूझ से काम लेती है। इस उपन्यास में लेखिका ने संकेत किया है कि वह स्त्री जो नौकरी-पेशा से जुड़ी हुई है, वह शोषण-उत्पीड़न का शिकार है और यदि वह अर्थाभाव और बेरोजगारी से जूझ

रही है तो उसकी क्या गति और स्थिति होगी? यह सहज अनुमान्य है। इस तरह इन उपन्यासों में सदियों से पीड़ित स्त्री के दंश को उपन्यास लेखिकाओं ने पहचाना है और उजागर किया है।

कृष्णा सोबती उन लेखिकाओं में अग्रिम पंक्तियों पर हैं जो नारी जीवन की करुणा को, नारी-मन की करुण-कोमल भावनाओं, आशा-आकांक्षाओं को जीवन्तता के साथ उठाती रही हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यासों में 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के' और 'जिंदगीनामा' की चर्चा, उस पर बहस-विमर्श आलोचकों-चिंतकों के बीच होता रहा है। कृष्णा सोबती की रचनाधर्मिता पर टिप्पणी करते हुए पी० सुप्रिया लिखती हैं कि सोबती अपने अपूर्व व्यक्तित्व और साहित्यिक उपलब्धियों से विशिष्ट स्थान की हकदार हैं। अपनी 'बोल्डनेस' से एक खास पहचान बनाने में वह सफल हुई हैं। जीवन की सच्चाइयों का यथार्थ रूप में बखान कर निडरता से समाज का सामना करनेवाली लेखिकाओं में उनका नाम पहले आता है।<sup>7</sup> इसी तरह डॉ. कैथरीन लिखती हैं कि- 'कृष्णा सोबती ने किसी सैद्धांतिक विचारधारा से अपने को कभी नहीं जोड़ा। उन्होंने अपने भावों और विचारों को वश में रखा और उनके संप्रेषण को लेकर अपने विवेक पर भरोसा किया।'<sup>8</sup> 'डार से बिछुड़ी' उनका पहला उपन्यास है जिसमें परंपराओं और रूढ़ियों से जकड़ी एक नारी के फिसलकर, बहककर भटकने की कथा है। उपन्यास की प्रमुख किरदार 'पाशो' ने बिना सोचे-समझे घर की देहरी लांघी तो ताउम्र इधर से उधर भटकती रही। 'मित्रो मरजानी' की मित्रो नारी के पुराने बिंबों को चुनौती देती हुई एक विवादास्पद नारी के रूप में चित्रित हुई है। कृष्णा सोबती का उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के' लीक से हटकर मनोविज्ञान के धरातल पर अवस्थित है। इस उपन्यास में एक ऐसी लड़की (रत्ती) की कहानी है जिसके बचपन में ही समाज के भूखे भेड़ियों ने धोखा दिया है। वह उस समय बलात्कार का शिकार बनती है जब उसका अर्थ भी वह नहीं जानती थी। रत्ती के साथ घटी यह घटना कभी उसका पीछा नहीं छोड़ती और जीवन भर उसके दुष्परिणाम को उसे झेलना और भोगना पड़ता है। कृष्णा सोबती ने इस उपन्यास में रत्ती के बहाने स्त्री के मन को परत-दर-परत उकेरने का प्रयास किया है जिसमें सेक्स का खुला चित्रण है। भारतीय परिवेश में स्त्रियों की बदलती हुई मानसिकता का जीवंत बिंब कृष्णा सोबती के उपन्यासों के स्त्री चरित्रों में है। 'डार से बिछुड़ी' में अंतर्जातीय विवाह पर बहस है तो 'मित्रो मरजानी' में विवाहेत्तर संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' का कथ्य सैक्स अवलंबित है तो 'दिलो दानिश' संयुक्त परिवार की कहानी पर आधारित है। इस प्रकार अपनी बारीक कारीगरी से पाठक समुदाय को हत्प्रभ कर देनेवाली लेखिका के रूप में कृष्णा सोबती की पहचान बन चुकी है। उन्होंने अपनी रचनाओं के संबंध में खुद लिखा है कि- 'उपन्यासों का रचना संसार मुझे एक साथ साधारण की असाधारणता और असाधारणता की विश्वसनीयता प्रदान करता रहा है।'<sup>9</sup> डॉ. कैथरीन कृष्णा सोबती के उपन्यासों पर स्त्रियों की बदलती हुई भूमिका पर लिखती हैं कि 'कृष्णा सोबती ने छठे दशक में लिखना शुरू किया। अब बीसवीं सदी की बिदाई हो चुकी है। इस लंबे समय में वे एक इतिहास की तरह हैं और उनके उपन्यास उनके इतिहास के जीवंत प्रतिबिंब की तरह हैं। उन्होंने डार से बिछुड़ी से जो यात्रा शुरू की वह 'तीन पहाड़', 'यारों के यार', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'जिंदगीनामा' और 'दिलो-दानिश' तक बढ़ती आई।

.....इन सब में स्त्रियों के वैविध्यपूर्ण चित्र हैं और उनमें से बिरले कोई ऐसा चित्र है जो स्त्री होने के कारण कोई कमजोरी दिखलाए।'<sup>10</sup>

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आधुनिक नारी अपने अधिकार के लिए वर्तमान व्यवस्था को चुनौती देते हुए हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है।

### संदर्भ :-

1. भंडारी, मन्नु. (2013). *आपका बंटी*. दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन. पृ. 37
2. भंडारी, मन्नु. (2013). *आपका बंटी*. दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन. पृ. 44
3. अग्रवाल, तारा. (2011). *मृदुला गर्ग का कथा-साहित्य*. नई दिल्ली : विद्या प्रकाशन. पृ. 202.
4. अग्रवाल, तारा. (2011). *मृदुला गर्ग का कथा-साहित्य*. नई दिल्ली : विद्या प्रकाशन. पृ. 215.
5. पुष्पा, मैत्रेयी. (2006). *बेतवा बहती रही*. दिल्ली : किताबघर प्रकाशन. पृ. 123.
6. मिश्र, सीता. *साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्रों का परिवर्तित मूल्यबोध*. पृ. 40-85.
7. सुप्रिया. पी. *कृष्णा सोबती की कहानी कला*. पृ. 24.
8. डॉ. कैथरीना. *कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र (लेख)*. *दलित चेतना स्त्री विमर्श*. पृ. 355.
9. सोबती, कृष्णा. (2000, अक्टूबर). *आजकल*. पृ. 27.
10. डॉ. कैथरीना. *कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र (लेख)*. *दलित चेतना स्त्री विमर्श*. पृ. 355.

## ECOTOURISM AND RESOURCE GOVERNANCE: REVIEW OF THREE NATURAL SETTINGS

Aditya Kumar\*

adityaprakash433@gmail.com

### Abstract

*The article tries to problematize the relationship between ecotourism and resource governance by investigating the protected area management models across different kind of settings. It looks into the relationship between state actors and community members as far as implementation of ecotourism are concerned. There must be correlation between resource governance model and success of ecotourism. At the same time, it is vital to explore ideological connotations. It may underpin the connection between social capital and natural capital and the kind of configuration between the two. It aims to highlight the discursive practices of ecotourism along with appropriate institutional framework. ICDP (Integrated Conservation and Development Programme) and CBNRM (Community based Natural Resource Management) are the models for resource governance. ICDP may be further categorized into state sponsored model and partnership model. The idea of the article is to give comparative perspective of three ecotourism settings which differ in governance structure.*

**Keywords:** Ecotourism, ICDP, CBNRM, Sustainable Development, Resource Governance.

### Introduction

First, there is need to explore the definition part of Ecotourism. As per The International Ecotourism Society (TIES, 2015) defines ecotourism as “responsible travel to natural areas that conserves the environment and improves the welfare of local people and involves interpretation and education”. The above definition encompasses all the components of sustainable development. Ecotourism converge social, economic as well as economic aspects simultaneously. Larsen (2009) has implicated the approach

---

\* Research Scholar, Department of Sociological Studies, Central University of South Bihar, Gaya

of sustainable development in terms of all the three dimensions and convergence of all the aspects is inevitable. The nature of interaction decides its sustainable character. Consequently, one can see ecotourism as a tool employed in the name of sustainable development. However, the nature of ecotourism has to be assessed in terms of recursive practices across different kind of natural settings. However, the conditions for the operation of ecotourism vary globally. In third world countries like India, it is basically co-operative relationship between the non-wealthy local community and those open minded tourists who went to enjoy themselves in a third world outing (Bhattacharya, 2005, p. 2). It takes several forms based upon conditions of existence. One such approach is 'Green capitalism' which treat nature as 'natural capital' and giving it competitive edge in terms of capitalist mode of production. It completely ignores the social basis of production. In this way, the survival tactics of local economy has been ignored. At the other extreme, there are conditions for existence which are very particular in social concern. Therefore, resource governance perspective must tackle ideological questions having implication in terms of conservation and development. Ideological concern must respect its limitation and act through concrete reality. Resource governance perspective has the ability to take social complexity in to account and question 'taken for granted' aspect of ideological connotation. The idea is to draw certain propositions and give ideological critique in terms of forest-community relationship. Henceforth, the question of 'resource sustainability and governance' is pivotal.

### **Description of natural settings**

Now, we shall try to focus on three natural settings i.e., Valmiki Tiger Reserve, Royal Chitwan and Chilka lake in this paper. First, Valmiki Tiger Reserve is basically a Terai arc landscape. It is located in West Champaran district of Bihar. So far as the operation of ecotourism is concerned, it is basically state sponsored and the responsible department is forest department only. This indicates centralization of forest governance. As consequence, it is interesting to locate the antagonistic relationship between forest department and community. Second, Royal Chitwan National Park which shares boundary with Valmiki Tiger Reserve is situated in Nepal. It is based on partnership

model. In this model, forest department is concerned with protected area management and act as facilitators for any ecotourism endeavor. On the other hand, community members are responsible for running ecotourism business. It is peculiar for the co-management practices that have lead to balance the need of people and wildlife (Sukumar, 2006, p. 315). At Last, Manglajodi ecotourism is offered at village situated in Chilka Lake, Odisha. It is totally community based and operates ecotourism activities at the initiative of community. They have evolved their own institutions parallel to state institutions. Henceforth, it demands disquisitions to implicate landscape, governance and ecotourism keeping the relationship between state and state department in perspective.

As far as governance of natural resource is concerned, the emerging literature suggests that we have predominantly two models. There are two major decentralized forms of natural resource governance, giving property rights over natural resources to local individuals and communities and then transfer of formal powers to decentralized units of governance (Anderson, Gibson, & Lehoucq, 2004). It is vital to explore how ecotourism as institutional design may offer incentive for conservation of open access resources like forest. Ecotourism has potential to tap common pool resources in terms of private as well as public goods. In other words, the public-private partnership be the best model. In this way, it creates significant incentive for conservation and better externalities. Therefore, It can be success if it is structurally conducive and participation is without distortion of information. This resolves the problem of protected area management. Bolwing et al. (2009) further highlight the co-existence of customary and new local resource governance. The local conditions and definitions of their need, access and activities must be considered in 'Institutional nesting' under decentralization. Local leadership and capacity building of citizens are important for success of this approach. In this way, it also resolves the problem of accountability. On the one hand social ecology focuses on the power differential, at the same time human ecology is concerned with the establishment of social system and ecosystem connection (Guha, 2006). The aim should be to balance these approaches as far as appropriate institutional framework for governance is concerned. Taking all the discussion as point of departure, ICDP (Integrated conservation development projects or programmes) and

CBNRM (Community based natural resource management) be explicated further in different contexts.

### **Critical analysis**

On the basis of three natural settings mentioned above, now it is necessary to critically analyse all of them. The description of governance regimes in natural landscape is inevitable so that the background could be ascertained. Now, the locus of the discussion shift to ICDP (Integrated conservation-development projects or programmes) and CBNRM (community based natural resource management). Further, the only acronym is used for reference. Adams (1990) discusses the background for the above regime. As far as ICDPs is concerned. It is about linking conservation and development. The efficacy depends on the kind of balance between forest department and fringe villages of the landscape. It is already established that managerial approach is indeed failure; the question of decentralization is paramount. Therefore, the cardinal question is what should be the configuration or structure, if 'bottom-up' approach has to be applied. The recognition of weak spots of managerial approach is required for any sort of recommendation. The point of departure should be the distinction between 'societies of production' and 'societies of appropriation' (Redclift, 1987). Managerial approach tries to co-opt customary institution by several tools of appropriation for the benefit of administration. The administration is always selective in nature in this kind of form. The question of nesting of customary institutions in to local governance is primordial for long term social sustainability. Henceforth, the intricacies of social system-ecosystem interaction must be considered and complexity has to be detailed. The focus is to link the issues of ecotourism and resource governance. The major environmental conceptions of particular relevance in this paper are Interventionism, Accommodation, and Communalism (O'Riordan, 2017).

### **Interventionism**

As far as the intersection of ICDP and Ecotourism is concerned, the development of ecotourism is skewed in the absolute managerial approach. For the purpose of evidence, Valmiki Tiger Reserve has been taken. In this case, the pattern of governance is

centralized. It encompasses protected area management as well as management of ecotourism. All the works are supervised centrally by Valmiki Tiger Foundation to take care of all the details related to ecotourism. In the ecotourism governance, locals are not at the level of decision making but employed as only daily wages. As far as social dimension is concerned, the locals are appropriated by the tool called eco-development committee, which is far beyond its aims and scope. . The marginalization ranges from the neglect traditional livelihood option as well as exclusion from the design of ecotourism. Hence, the question of structural conduciveness is much important. In this context, Bardhan(1984) has highlighted the state as autonomous actor whose aim is to balance to balance the different counterparts. The forest administration tries to co-opt the fringe villages by controlling the elections of eco-development committees by whims and fancies. In nutshell, the kind of balancing act of administration has been detrimental to the prospect of villagers. There is kind of dualism as far as forest property and villager's property is concerned. It means the dualistic approach is leading to recursive suffering and hence, it is socially unsustainable. The social basis is very crucial as far as preservation of forest is concerned. The antagonistic relationship leading to widespread deforestation in the adjoining area which is very much populated. This pattern is not recommended and proper balancing act is required. The answer clearly lies in recognition of customary practices and aligning it with local governance.

### **Accommodation**

In addition to managerial approach, the other version of protected area management under ICDP is co-management. For the purpose of evidence, the example of Chitwan National Park has been taken. As far as the efficacy of this particular version of protected area management is concerned, it has adopted well balanced approach. The forest administration is under military rule and there is functional differentiation as far as operation of ecotourism is concerned. Ecotourism is operated by Users Committee of the forest-village is concerned. There is almost equal area of core zone as well as Buffer zone. This is the outcome of the fact that there are distinct policies governing core areas and buffer areas. It is being regulated by Chitwan National Park Regulation, 1974 and Buffer Zone Management Regulation, 1996 respectively. The former is solely

concerned with the rules and regulations inside the forest area. The later has details regarding buffer area management. Buffer forest has been differentiated in to 'Buffer Community Forest', 'Buffer Religious Forest' and 'Buffer Private Forest'. In addition, Users committee has been instituted to coordinate with the department. The specialty of this arrangement is that that committee is fully autonomous from the issue of election to the functioning of the same but in conformation to the work plan. The separate buffer zone management plan leaves no ambiguity in the management. The twin challenges of fund adequacy and accountability has been addressed. This kind of distinction in governance has impact on proper functioning of ecotourism. In this kind of system, all the population of buffer zone has been implicated in conservation as well as socio-economic benefit. So, Users Committees play pivotal role in overall management of Chitwan National Park. All the resources in the buffer zone are under the management of user's committee. Requisitions of socially useful resources have to be co-ordinate through Users Committees. The operation of ecotourism is also coordinated through above committee. It should be noted as a principle that forest being open resource; it is highly useful to streamline the community as far as engagement of people is concerned. Therefore, it is best attempt to forge Forest Department and Community partnership in protected area management.

### **Communalism**

Now, let us shift our locus of discussion to the other kind of paradigm which is known as CBNRM and its associated implications for the development of ecotourism. For the purpose of evidence, Manglajodi Ecotourism undertaking at Chilka Lake region has been highlighted. It is vital to do comparative study of ICDP and CBNRM as far as the success and efficacy of ecotourism is concerned. Manglajodi ecotourism undertaking runs and owned by community. It is located in the northeastern part of the Chilka Lake. It is community-run initiative. Locals are benefitted by various type of ecotourism initiative in that landscape. CBNRM has strong objective as far as weaker pillar of sustainability, social; is concerned. It has potential to transform the very social basis and has the capacity to boost their "societies of production" by alternative incentive. Therefore, the kind of transformative potential is not only limited to incentive base

livelihood but at the same time the need is to solidify institutional setup. It may be parallel institution and in contrast to state. In this case, the autonomous institutions of villagers are working in integration with Chilka Development Authority. In addition, the kind of social setting and peculiarities needs to be expatiated. CBNRM is mostly concerned with 'consumptive use', poaching, killing or harvesting wild species. There are complex contradictions for the sustainable approach where consumptive use is implicated in traditional livelihood option. Hence, the incentive linked to 'ecotourism practices' must not only be limited to stimulus but align itself in the role of means and ends. CBNRM approach is famous for the kind of social action in response to historical, political, social and economic experiences, conditions and challenges. However, the framework must be able to address the question of poverty in the area concerned. This is why the villagers of Manglajodi have turned from poachers to protectors while social and economic pillars of sustainability have been addressed. It has successful story of one decade as of now. In nutshell, CBNRM plays instrumental role in addressing basic of life and livelihood. For stronger sense of sustainability at the community level, the notion of poverty needs to be problematized. Now, the discussion shifts towards the social basis of sustainability by giving ideological critique to the global discourse of sustainability and its ideological underpinning. Broadly, community based tourism is part and parcel of pro-poor tourism. This kind of arrangement has direct appropriation of indigenous knowledge and thereby transforming 'societies of production'. There is comparatively more focus on conservation and dispensing with old consumptive use. In this way, the distinction of 'use-value' and 'exchange-value' has been obliterated. Pro-poor tourism as larger framework focuses on production of use values, ecological adaptation and sustainable management and indigenous technical knowledge. As far as social pillar of sustainability is concerned, community owned resources and the kind of obligation in ecotourism plays crucial role in utilizing indigenous knowledge system and thereby reinforcing survival strategies. We need to have a pragmatic and concrete plan to accomplish supra-household initiatives under the rubric of ecotourism. In sum, social sustainability implies community resilience rather than adaptive development.

## Discourse and critique

The aim is to explore how discourse and the politics are intertwined. 'Sustainability' has been considered as the value system to be critiqued. Our particular concern is with the content and meaning of the discourse. Basically, Ideology is always embedded in the politics. First, Developmentalism is evergreen ideology which aims to expand the consumer base. Ecotourism is in this way directly associated and it may be termed 'Green Capitalism'. It emphasizes the expansion of consumer base on the basis of 'natural capital' as the basic. At the society-nature interface, ecotourism is market based strategy to resolve the problem of civil society. However, it all depends upon the type of governance. The function of the state is to balance civil society and market. Empirically, it is not visible. Instead, there is tilt in the balance and it affects association of civil society with market which is highly ambiguous without proper governance framework. The fate of 'natural capital' depends primarily on the population. In the heavily populated areas, it is difficult to manage. The inevitable result is deforestation. Deforestation implies the shift in the land use pattern. In this way, ecotourism aims to resolve environmental problems but ends up in harnessing in sustainable way. But the inevitable failure of such policy works against the larger end of locals unless and until they are incorporated through the proper institutions. It is the failure of state unable to balance civil society and market and thus undermining the sustainability outcome.

The basic force behind the expanding consumer base is basically modernity at global scale termed as 'Globalization'. The concept of 'ecotourism' as such originated in 1980's. At the same time, the decade of 1980's and 1990's is famous for Structural Adjustment Programme (SAP). In the process of resolving debt crisis, there was highly asymmetrical balance of power and lead to degradation of 'Natural Capital' in third world countries. World system theory is instrumental in analyzing the process of trade which taken over in last two decade of twentieth century. In the name of strong sustainability, international financial linkages have been emphasized. It shifts focus from resilience to adaptive development. It is vital to problematize the notion of sustainability in terms of 'weak sustainability' and 'strong sustainability'. The force of modernization which works at planetary scale has affected the predicament of 'natural

capital' in the third world. Now, strong sustainability requires international funding as well as international collaboration. It is in this sense that many international organizations like (World wide fund for Nature) are guiding the policy framework of protected areas in the third world. Ultimately, the discourse of sustainability is in terms of 'metaphor' at different levels rather than the discourse in literal or Foucault's type of discourse.

Now, let us shift the locus of our discussion to the social basis of 'consumer culture' emerging under ecotourism. At the level of social structure, tourism is termed as 'duty' while the western notion is basically associated to 'recreation'. In other words, Consumer culture emphasizes environment as separate cognitive category. The indigenous notion of environment is basically cognitively integrated category. To support the social pillar of sustainability,, indigenization of ecotourism is warranted. Otherwise, it is ideologically driven and misses the essence of ecotourism in literal sense.

Taking all together, Jameson (1997) has elaborated on the cultural logic of late capitalism as far as consumer culture is concerned. Morton (2010) has critiqued contemporary ecological thought. Contemporary ecological thought takes ideological support of 'sustainable development' and appears to be benign consumption model. Green consumerism is the approach to continue consumption without visible exploitation. But the loss is intangible when local resources and actors are appropriated for the purpose. Invisible extraction has been replaced by visible extraction. Miller (2008) also elaborated on the defects of consumerism by critiquing material aspect of consumerism. Materialism signifies the egoistic attitude of tourist when the focus is on neo- liberal construction of mega fauna. Here, the role of local politics is vital in aligning 'societies of production' to 'societies of appropriation'. It is in this sense we should critique the urge to watch mega-fauna such as Tiger, Dolphin etc. The postmodern culture may helps in the indigenization of ecotourism and give it holistic sense rather than atomistic in narrow sense. The goal is to turn the process from neo-liberal end to populist end. The inclusion of the local culture is vital as it is being ignored with the singular focus on mega-fauna. The thesis of indigenization of

ecotourism is linked to the age old ideology of 'Praytan'. It shifts the connotation of the term 'ecotourism' from recreation to duty based.

### **Conclusion**

The success and efficacy of sustainable development depends upon the balancing strategy of state as far as many counterparts are concerned. The resource sustainability and its governance is intertwined and has peculiar significance in the kind of setting. The question of power relation is quite vital. It is associated with human and non-human objects. The kind of impact is crucial in the relationship of the objects in consideration. So, social system and ecosystem tries to influence mutually in order to achieve appropriate framework for long time sustenance. There is always need of paradigm shift in case of insufficiency. Therefore, the objective of sustainable development through ecotourism is rarely feasible in many situations. Hence, the sustainable social system- ecosystem has to be aligned with the resource governance. In this way, ecotourism may be the role of means and end.

Then, there was attempt to do ideological critique by highlighting the complexities across different setting. Any kind of ideological cover cannot respond to these complexities. Therefore, there is need to address concrete things in our social system. At last, the emphasis was laid upon the postmodern way of looking at ecotourism and universalization of ethics behind it in indigenous sense. The material aspect of consumerism needs to be aligned with social system. In nutshell, third pillar of sustainability; social has been targeted.

### **References**

Adams, W. (2009). *Green Development*. Oxon: ROUTLEDGE.

Anderson, K. P., Gibson, C. C., & Lehoucq, F. (2004). The Politics of Decentralized Natural Resource Governance. *American Political Science Association*, 421-426.

Bardhan, P. (1998). *The Political Economy of Development in India*. Oxford University Press.

- Bhattacharya, A. (2005). *Ecotourism and Livelihoods Capacity Building for local Authorities*. New Delhi: Concept Publishing Company.
- Bolwig, S., Cold-Ravnkilde, S. M., Rasmussen, K., Breinholt, T., & Mortimore, M. (2009). *Natural Resource governance issues*. Danish Institute for International Studies.
- Dillard, J., Dujon, V., & C.King, M. (2009). *Understanding the social dimension of Sustainability*. New York: Routledge.
- Guha, R. (2006). *Social Ecology*. New Delhi: Oxford University Press.
- Larsen, G. L. (2009). An Inquiry Into the Theoretical Basis of Sustainability. In V. D. Jesse Dillard, *Understanding the Social Dimensions of Sustainability* (pp. 46-82). New York: Routledge.
- Miller, D. (2008). So, what's wrong with consumerism? *RSA Journal* , 44-47.
- Morton, T. (2010). *The Ecological Thought*. Massachusetts, London: Harvard University Press.
- Nepal, G. o. (n.d.). Retrieved from [www.lawcommission.gov.np](http://www.lawcommission.gov.np)
- O'Riordan, T. (2017). The challenge of environmentalism. In R. Peet, & N. Thrift, *New Models in Geography* (pp. 77-102). Jaipur: Rawat Publications.
- Redclift, M. (1987). *Sustainable Development Exploring the contradictions*. London, New York: Routledge.
- Ritzer, G. (2019). *Postmodern Social Theory*. Jaipur: Rawat.
- Sukumar, R. (2006). Wildlife-Human Conflict in India: An Ecological and Social Perspective. In R. Guha, *Social Ecology* (pp. 303-318). New Delhi: Oxford University Press.

## अनुवाद : वर्तमान समय और प्रासंगिकता

पंकज कुमार मिश्र<sup>1</sup>

pankajv1385@gmail.com

### प्रस्तावना-

भाषा मनुष्य द्वारा स्वीकृत संप्रेषण की व्यवस्था है। अनुवाद और भाषा विज्ञान के संबंधों को रेखांकित करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि भाषा विज्ञान से अनुवाद का संबंध मूलतः अनुवाद सिद्धांत से स्थापित होता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति व्याकरण के प्रत्यक्ष ज्ञान के बिना अच्छा वक्ता हो सकता है उसी प्रकार यह समझना कि भाषा विज्ञान के ज्ञान के बिना अनुवाद करना संभव नहीं, गलत होगा। अनुवाद मूलतः व्यवहार है और अभ्यास से ही साबित होता है। भाषा विज्ञान के ज्ञान से अनुवादक दोनों भाषाओं के घटकों की आंतरिक व्यवस्था या प्रणाली को ठीक-ठीक समझने में मदद करता है। अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए:- स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का सम्यक ज्ञान, विषय का सम्यक ज्ञान, सतत अध्ययनशीलता एवं अभ्यास। समस्त संसार विविधता से परिपूर्ण है। दुनिया के विभिन्न देशों की अपनी-अपनी भिन्न-भिन्न भाषाई, सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक और राजनैतिक विशेषताएं हैं। “वसुदेव कुटुंबकम” की संकल्पना इन देशों को आपस में जोड़ने का काम करती है। कोई भी व्यक्ति समाज या देश इन भाषाओं का ज्ञान एक साथ या एक ही समय में प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में इन विविधताओं को जानने के लिए व्यक्ति को अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है, ताकि वह एक भाषा में प्राप्त जानकारी/सूचना को दूसरी भाषा में व्यक्त कर सके। इसी आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए अनुवाद संकल्पना का उदय होता है।

अनुवाद पर बात करने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति कैसे हुई ? “अनुवाद” शब्द संस्कृत भाषा के “अनु” उपसर्ग तथा “वद” धातु से मिलकर बना है ‘अनु’ का अर्थ है- बोलना और इसी ‘वद’ धातु में घन प्रत्यय लगाने से यह ‘वाद’ बना अनु+वाद =अनुवाद जिसका शाब्दिक अर्थ है “पहले कही गई बात को पुनः कहना” शब्दार्थ चिंतामणी कोश के अनुसार:- प्राप्तस्य पुनः कथने अर्थात् जो प्राप्त या ज्ञात है, उसे पुनः कहना<sup>2</sup> लैटिन में Trans + Latum है। और यही अंग्रेजी में Trans- का अर्थ है

<sup>1</sup> पी.एच. डी. शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

<sup>2</sup> <https://hindi.shabd.in/post/6669/anuvaad-siddhant>

Across- जिसका अभिप्राय अर्थात् दूसरी ओर Latun Lation अर्थात् Lation का अभिप्राय To carry अर्थात् “ले जाना” इस तरह इसका सीधा अर्थ हुआ “इस ओर से दूसरी ओर ले जाना” अतः यह कहा जा सकता है कि “एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है” अनुवाद के परिपेक्ष्य में विभिन्न सिद्धांतों को इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:- (1) संप्रेषणीयता का सिद्धांत (Theory of Communication) अनुवाद का मूल उद्देश्य स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करना है, जो सेम्युअल जॉनसन की इस परिभाषा “To Translate is to change into another language retaining the sense.”<sup>3</sup> से भी स्पष्ट है, इस परिभाषा के अनुसार एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में संप्रेषित करना तथा इसमें भाव (Sense) को कायम/अक्षुण्ण(retain) रखना अनुवाद है।

आज इस वर्तमान समय के युग में वैश्वीकरण, सूचना संप्रेषण सूचना प्रौद्योगिकी, भाषा संसाधन, माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञान (ICT), ज्ञान प्रबंधन आदि सभी पक्ष शोध का एक प्रमुख विषय बन चुके हैं और इस परिपेक्ष्य में अनुवाद का महत्व एवं उसकी उपयोगिता धीरे-धीरे बढ़ रही है। ‘अनुवाद’ शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका संबंध ‘वद’ धातु से है, जिसका अर्थ है बोलना या कहना। इसे अंग्रेजी में Translation के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जिसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है ‘पारवहन’ अर्थात् एक स्थान बिंदु से दूसरे स्थान बिंदु पर ले जाना। जिसे कैटफोर्ड (1965) ने कुछ इस तरह स्पष्ट किया है— “एक भाषा की पाठ्यसामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्यसामग्री द्वारा प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है<sup>4</sup>” अर्थात् हम अनुवाद तभी कर सकते हैं जब हमारे पास दो या दो से अधिक भाषाओं का ज्ञान हो।

अनुवाद की आवश्यकता अक्सर तब पड़ती है जब एक भाषा के पाठ्य-सामग्री का ज्ञान दूसरी भाषा की पाठ्य-सामग्री में प्राप्त करना चाहते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की उपयोगिता एवं उसकी आवश्यकता में नवीन चेतना उद्भव हुआ है। पुरी दुनियाँ में अनुवाद की आवश्यकता या उसकी महत्ता को तीव्रता के साथ महसूस किया जा रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, दर्शन, आदि ज्ञान के तमाम शाखाओं में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अनुवाद समस्त विश्व को व्यापार, संस्कृति, दर्शन, राजनीति आदि के अनंत प्रसंगों में एकीकृत करने का काम करता है। वर्तमान समय में ‘अनुवाद’ एक स्वतंत्र विषय के रूप में विश्वविद्यालयों में छात्रों को पढ़ाया जा रहा है। व्यावहारिक रूप से कई सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएं अनुवाद के विषय को पढ़ा रही हैं, जिससे आज एक नई पीढ़ी उभरकर आ रही है जो वर्तमान में अनुवाद के महत्व या उसकी उपयोगिता का प्रचार-प्रसार कर रही है। अनुवाद के इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए युनेस्को, साहित्य अकादमी, नेशनल बूक ट्रस्ट, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो आदि संस्थाएं राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद पर काम कर रही हैं।

<sup>3</sup> भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा (खंड- 3) (2008) IGNU

<sup>4</sup> कुलश्रेष्ठ रामप्रकाश, अनुवाद : प्रक्रिया और तकनीकी

आज भूमंडलीकरण के कारण तथा विश्व की अन्य परिस्थितियों के कारण अनुवाद का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिसमें संगणक अनुवाद या मशीनी अनुवाद का प्रयोग किया जाना जरूरी है। आज हम देखते हैं कि, संगणक साधित अनुवाद के जरिए भी आज अनुवाद जैसे विषय को कई जगह पढ़ाया जाता है। भारत सरकार के उपक्रम C-DAC ने अप्रांतियों भाषाओं के पारस्परिक अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज अनुवाद की उपयोगिता को व्यापक और सीमित संदर्भों में देखा जा रहा है। अनुवाद विभिन्न भाषा-भाषी समुदाय के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान का काम कर रहा है। अनुवाद का प्रयोग आज कई क्षेत्रों में हो रहा है, लेकिन संगणक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व व्यापक रूप से बढ़ रहा है क्योंकि संगणक के जरिए आज हम कई भाषाओं के अनुवाद कर उन भाषाओं से संबंधित सॉफ्टवेयर बना सकते हैं। यह सभी भाषाओं के सॉफ्टवेयर वर्तमान में विभिन्न भाषा-भाषी समुदाय के संप्रेषण में काम आ सकते हैं। जैसे-व्याकरण जांचक, वर्तनी जांचक, शब्दावली प्रबंधक आदि। इसके अलावा आज अनुवाद के जरिए सांस्कृतिक संबंधों में निकटता लाई जा सकती है। मीडिया के सभी माध्यम जैसे- पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म, रेडियो, टेलीविजन आदि के जरिए हम सूचनाएँ पहुँचा सकते हैं। भाषा के अज्ञानता के कारण कई बार लोग महत्वपूर्ण ज्ञान से वंचित रह जाते हैं उनकी समस्याओं को अनुवाद के जरिए दूर किया जा सकता है। अनुवाद का सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र हमें साहित्य के क्षेत्र में मिलता है। साहित्य में आने वाली समस्या को भी आज हम अनुवाद के जरिए दूर कर सकते हैं। वर्तमान समय में अनुवाद का ज्ञान प्राप्त कर रोजगार की समस्या को भी दूर किया जा सकता है। अनुवादक का कार्य दो भाषाओं के बीच सेतु के रूप में होता है। इसके जरिए हम दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के व्यक्तियों को भी आपस में जोड़ सकते हैं। साथ ही उनकी संस्कृति, भाषा, परंपरा आदि से भी परिचित हो सकते हैं। आज वर्तमान समय में अनुवाद न केवल दो भाषाओं के बीच सीमित है बल्कि इसका दायरा अब व्यापक हुआ है। यह न केवल दो भाषाओं के अनुवाद में काम आती है बल्कि हर क्षेत्र में इसका प्रयोग दिखाई देने लगा है। जिसके परिणाम स्वरूप अनुवाद में रोजगार की संभावनाएं बढ़ती हुई दिखाई देती हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आने के बाद से इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं बढ़ी हैं। ऐसे में अगर आप

हिंदी और अंग्रेजी भाषा पर मजबूत पकड़ रखते हैं और आपको कोई तीसरी भाषा भी आती है तो आपके लिए रोजगार की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। आप सरकारी क्षेत्र में भी जूनियर ट्रांसलेटर बन कर करियर की शुरूआत कर सकते हैं, साथ ही बड़े पत्र-पत्रिकाओं तथा विभिन्न प्रकाशन समूहों में भी अनुवादकों की मांग बड़ी तेजी से बढ़ी है। विज्ञापन एजेंसियों में भी अनुवादक के रूप में अच्छा रोजगार उपलब्ध है। बैंकों में हिंदी अनुवादक के रूप में काम किया जा सकता है। अनुवाद में डिप्लोमा पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। सरकारी क्षेत्र में विभिन्न मंत्रालयों में जूनियर हिन्दी ट्रांसलेटर के रूप में करियर की शुरूआत होती है। इसमें चयन, कर्मचारी चयन आयोग के माध्यम से होता है और आगे पदोन्नति के द्वारा सीनियर अनुवादक तथा निदेशक (राजभाषा) के प्रतिष्ठापूर्ण एवं उच्च पद तक पहुँचा जा सकता है। विभिन्न समाचारपत्रों, प्रकाशन समूहों एवं विज्ञापन एजेंसियों

में भी अनुवादकों की मांग काफी है। विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, निजी टैलीफोन, आप्रेटर कम्पनियों और तेजी से बढ़ते समाचार चैनलों में भी अनुवादक का उज्ज्वल भविष्य मौजूद है।

वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए अनुवाद को लेकर कई नए-नए यंत्र या प्रणालियाँ विकसित किए जा रही हैं जिनसे कुछ सफलता हासिल हुई है। आनेवाली समय में मशीनी-अनुवाद पूर्णतः सफल हो। इस दिशा में लगातार प्रयास एवं शोध किए जा रहे हैं। तथा वर्तमान समय में कई सस्थानों में केवल इसी क्षेत्र को विकसित और समृद्ध करने लगातार कार्य हो रहा है। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में यह नया आयाम है जो सारे विश्व में अनुवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका को प्रासंगिक कर रहा है।

### संदर्भ :-

कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश. (2009). *अनुवाद : प्रक्रिया और तकनीकी*. जयपुर : पंचशील प्रकाशन.

गोस्वामी, कृष्ण कुमार. (2012). *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

पवार, ईश्वर. (2010). *रोजगार परक हिंदी जगत*. इलाहाबाद : भारती प्रकाशन.

भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा (खंड- 3). (2008). IGNU, नई दिल्ली.

शेख, अनसरपाशा अब्दुलरजाक. (2014). *भाषा का अनुप्रयुक्त पक्ष और हिंदी*. लातूर : प्रवर्तन प्रकाशन.

<https://hindi.shabd.in/post/6669/anuvaad-siddhant>

## अलका सरावगी के उपन्यास में चित्रित सामाजिक जीवन की समस्याएँ [कलि-कथा वाया बाइपास]

डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने\*

m.babasaheb@yahoo.in

### शोध सार -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही पैदा हुआ है और सारी जिंदगी समाज में ही व्यतीत करता है। समाज में रहकर ही वह अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता आया है।

इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्र भारत में समाज की सामाजिक स्थिति में कोई भी ठोस क्रांतिकारी पतिवर्तन नहीं आ रहा है। पुरुष सत्ता, धर्मसत्ता, कुल की मर्यादा, लोकलाज एवं शील आदि के बीच स्त्री युगों-युगों से पीसी जा रही है और आज भी वह इनमें ही पिस रही है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में नारी का जीवन जीना ही अपने आप में एक भयावह त्रासदी बन गया है।

प्राचीन काल से अनेक संत महात्माओं ने समाज से अंधविश्वास और अनावश्यक रूढ़ि-परंपराओं के मिटाने का निरंतर प्रयत्न किया है। परंतु समाज इनसे पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाया है। परिवार समाज की नींव, तो आवास परिवार की जरूरत है। अतः परिवार को चलाने और मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए धन की नितांत जरूरत होती है। अर्थ की प्राप्ति के लिए मनुष्य को समस्या का सामना करना पड़ता है। उसे निरंतर आर्थिक समस्या का हल ढूँढने के लिए जूझना पड़ता है। समाज में रहनेवाला प्रत्येक मनुष्य इसकी पूर्ति के लिए प्रयत्न करता है। आवास बनाने का सपना हर व्यक्ति देखता है। उसके लिए प्रयत्न भी करता है। परंतु हरेक का यह सपना पूरा होता ही है, ऐसा नहीं है। आवास निर्माण की समस्या हर व्यक्ति के जीवन में होती है।

‘कलि-कथा वाया बाइपास’ उपन्यास में अलका सरावगी ने अंधविश्वास, स्त्री भ्रूण-हत्या, धार्मिक समस्याएँ, आवास की समस्या, विभाजन की समस्या, सांस्कृतिक परिवेश, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

**बीज शब्द** - अलका सरावगी, ‘कलि-कथा वाया बाइपास’, सामाजिक जीवन की समस्याएँ।

---

\* अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय, जुन्नर, जि- पुणे

**प्रस्तावना-**

इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्र भारत में समाज की सामाजिक स्थिति में कोई भी ठोस क्रांतिकारी पतिवर्तन नहीं आ रहा है। पुरुष सत्ता, धर्मसत्ता, कुल की मर्यादा, लोकलाज एवं शील आदि के बीच स्त्री युगों-युगों से पीसी जा रही है और आज भी वह इनमें ही पीस रही है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में नारी का जीवन जीना ही अपने आप में एक भयावह त्रासदी बन गया है।

अनादिकाल से पुरुष ने शारीरिक बल का प्रयोग करके महिलाओं को अपने अधीन रखने का कार्य किया है और उन पर वर्चस्व स्थापित किया है। इसके परिणाम में वह स्त्री को प्रताड़ित करता रहा है। स्त्री पुरुष की प्रताड़ना और उसे दबाव को धरती की भाँति सहन करती रही है। पुरुष सत्ता के द्वारा समय-समय पर स्त्री पर अनेक तरह के प्रतिबंध लादे गए हैं। इसके कारण वह अनेक कुप्रथाओं का वह शिकार हुई है और अंदर ही अंदर घुटती-पिसती रही है।

भारतीय समाज में अंधविश्वास, स्त्री भ्रूण हत्या, धार्मिक आडंबर, आवास की समस्या, विभाजन की समस्या, सांस्कृतिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या, बढ़ती लोकसंख्या, गरीबी, सांप्रदायिक कलह, बालमजूरी की समस्या, वृद्धावस्था, अपराधी वृत्ति, भ्रष्टाचार, स्त्री पर अत्याचार, वेश्या व्यवसाय, एड्स की समस्या, व्यसनाधीनता आदि अनेक समस्याएँ हैं। इनमें से अलका सरावगी के 'कलि-कथा वाया बाइपास' उपन्यास में अंधविश्वास, स्त्री भ्रूण हत्या, धार्मिक समस्याएँ, आवास की समस्या, विभाजन की समस्या, सांस्कृतिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या आदि अनेक समस्याओं का चित्रण किया गया है। जिन्हें हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

**अंधविश्वास:**

भारतीय समाज से अंधविश्वास और हानिकारक रूढ़िवादी परंपराओं के मिटाने का कार्य अनेक संत महात्माओं ने किया है। परंतु समाज इससे पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाया है। अशिक्षित लोगों के साथ-साथ पढ़े-लिखे लोगों में भी अंधविश्वास की भावना दिखाई देती है। आज इक्कीसवीं सदी में हम जी रहे हैं। इस सदी को वैज्ञानिक युग की सदी कहा गया है। इस युग में भी भारतीय समाज अंधविश्वास में जकड़ा हुआ है। यह शोचनीय बात है।

अलका सरावगी की 'कलि-कथा वाया बाइपास' उपन्यास में किशोरबाबू की पत्नी सरोज व्रत, उपवास, दान, पूजा, कुंडली आदि बातों पर विश्वास करती नजर आती है। बाइपास सर्जरी के बाद पागल बने किशोरबाबू अच्छे हों। इसलिए सरोज पंडित के पास जाने की सोचती है। और किशोरबाबू की सेहत ठीक होने के लिए दान-धर्म तथा पूजा-पाठ करवाती है। इससे ज्ञात होता है कि शारीरिक बीमारी को ठीक करने हेतु लोग

मंदिर में दानधर्म करते हैं या फिर किसी पंडित के पास जाकर जन्मकुंडली दिखाते हैं, ताकि शारीरिक बीमारी ठीक हो जाए। इस विषय में लेखिका लिखती हैं कि- “उनकी पत्नी किसी पंडित को उनकी जन्मकुंडली दिखाकर कुछ दानवान या पूजा-पाठ करवाती रही।”<sup>1</sup> उक्त कथन से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में भी लोग अंधविश्वास में फंसे दिखाई पड़ते हैं। यह दुखदायक बात है। शारीरिक बीमारी को ठीक करने हेतु अस्पताल में जाना जरूरी होता है। डॉक्टरों के निर्देशानुसार व्यायाम तथा भोजन करना अनिवार्य होता है। तभी तबीयत में सुधार हो सकता है। किसी पंडित के पास जाकर कुंडली दिखाने या दान करने से बीमारी ठीक नहीं होगी। यहाँ किशोर बाबू का बेटा भी अपनी अंगुलियों में पत्थरों की अंगूठियाँ पहनता दिखता है। उसका यह व्यवहार भी अंधविश्वास का परिचायक है।

### स्त्री भ्रूण हत्या :

प्रकृति की दृष्टि में स्त्री और पुरुष दोनों समान हैं। परंतु पुरुष सत्तात्मक समाज में स्त्रियों के संबंध में परंपरागत अनेक विचार पनपते रहते हैं। दहेज लड़की के माँ- बाप को ही देना पड़ता है। यह प्रथा समाज में स्थित होने कारण लड़कों का मोलभाव बढ़ गया है। इस कारण स्त्री को भी लगता है कि उसके लड़का हो। लड़के को पाने की आशा के खातिर स्त्री भ्रूण हत्या का सिलसिला बढ़ रहा है। जन्म से पहले ही लोग स्त्री भ्रूण को मार रहे हैं। तकनीकी अलग-अलग अविष्कारों के कारण गर्भवती स्त्री के पेट में पल रहे बच्चे के लिंग का तुरंत पता चल रहा है। इस पर भले ही पाबंदी लगाई गई हो, लेकिन लोग चोरी-छुपे अर्भक के लिंग का पता करवा रहे हैं। इसके लिए डॉक्टर भी मोटी फीस लेते हैं। कई डॉक्टर भी इसमें शामिल होते हैं। परिणामस्वरूप स्त्री- भ्रूण हत्या जैसी गंभीर समस्या निर्माण हो रही है।

अलका सरावगी ने किशोर बाबू के लड़की के माध्यम से ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ उपन्यास में इसी तथ्य को उजागर किया है। किशोर बाबू की लड़की अपनी माँ की तरह पांच लड़कियों को पैदा करना नहीं चाहती। इसीलिए उसने दो लड़कियों के बाद ही गर्भपात किया है। गर्भपात के बाद हुई अपनी लड़की की हालत देख माँ सोचती है कि “आज बड़ी लड़की ने दो लड़कियां पैदा करने के बाद तीसरा गर्भपात कराया है। इस जमाने में बेचारी पांच बार माँ बन गई। बच्चा आधा हो या पूरा, औरत का शरीर तो बराबर ही खराब होता है। इस बार भी पेट से पानी निकालकर परीक्षा कराई, तो लड़की ही निकली, जब कि इस बार तो बच्चा पेट में इंजेक्शन से डाला था, जिसमें खाली लड़का पैदा करनेवाले कीड़े थे। हजारों तो रुपये खर्च हो गए और शरीर का इतना नुकसान हुआ सो अलगा।”<sup>2</sup> इस प्रकार से स्त्री अर्भकों की हत्या दुनिया में आने से पहले ही हो रही है। गर्भपात के लिए डॉक्टरों को काफी धन भी देना पड़ता है और जिस स्त्री का गर्भपात हुआ है उसका शरीर भी खराब होता है। अतः गर्भपात से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। ऐसे गर्भपात को रोकना जरूरी है।

**आवास की समस्या:**

परिवार समाज की नींव, तो आवास परिवार की जरूरत है। आवास के लिए मनुष्य को अनेक तरह की आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक सपना होता है कि उसका एक अच्छा-सा घर हो। जिसमें वह अपने परिवार के साथ आराम से रह सके। इस सपने को साकार करने के लिए वह प्रयास भी करता है। इसमें कोई सफल होता है और कोई असफल ही रहता है। जो असफल रहता है उसे आवास की समस्या निरंतर सताती रहती है।

आलोच्य उपन्यास का पात्र किशोरबाबू के दादा-परदादा का भिवानी में बड़ी हवेली बनाने का सपना था। इसीलिए वे अपने परिवार का वियोग सहकर पैसा कमाने के लिए कलकत्ता गए। फिर भी वे अपने सपने की पूर्ति न कर सके। इस विषय में रामविलास बाबू बताते हैं - “पिताजी की ख्वाहिश है कि भिवानी में एक बड़ी हवेली बनाएं। शायद इसीलिए वे कलकत्ते में दिन-रात काम करते हैं। एक मिनट आराम नहीं करते।”<sup>3</sup> किशोरबाबू जब बड़े होकर मामा के घर से बाहर निकले थे। तब उनके सामने भी आवास की समस्या थी। परंतु उन्होंने इस समस्या पर मात करने में सफलता हासिल की और एक बहुत बड़ा घर बनाया है।

**विभाजन की समस्या:**

विभाजन भारतीय इतिहास की एक बहुत बड़ी त्रासदी थी। मुस्लिम और अंग्रेजी में शासन काल के आने के बाद यह समस्या गहरी हुई थी। भारत और पाकिस्तान के बटवारे के समय कई दंगे हुए थे। इसमें अनेक लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। तब से लेकर आज तक भारत में जाति, धर्म, पंथ, प्रांत और भाषा नाम पर दंगे होते दिखाई देते हैं। कभी खालिस्तान के नाम पर तो कभी जम्मू-कश्मीर के नाम पर विभाजनवादी सोच उभरती दिखाती है। अलका सरावगी के ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ में आजादी के संग्राम का इतिहास चित्रित है। इसमें भारत-पाक विभाजन की त्रासदी चित्रित है। इस बटवारे के समय सांप्रदायिक दंगे, दहशतवाद, कर्फ्यू आदि जैसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई थी। जिनका यथार्थ चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में कलकत्ते का दक्षिण और उत्तर इन दो भागों में हुआ विभाजन, 1946 का डायरेक्ट एक्शन डे आदि का चित्रण विभाजन की त्रासदी को वास्तविकता के साथ दर्शाता है। जैसे, “अचानक दोपहर सड़क पर हल्ला उठा, मारो - मारो और सारे लोग भाग कर इधर उधर घुसते नजर आए। ..... तो सड़क पर लूंगी पहने लाठियाँ भांजते और तलवार चमकाते गुंडों का एक दल ‘अल्लाह हो अकबर’ और लड़कर लेंगे पाकिस्तान ‘के नारे लगाते हुए नीचे से गुजर रहा था। .... मंझले मामा ने बताया कि वे लोग दुकान बंद कर अंदर है और खबर यह है कि उत्तर कलकत्ता में छुरेबाजी, लूट पाट, और सोडा वाटर के बम फेंकने की घटनाएँ शुरू हो गयी हैं।”<sup>4</sup> इस प्रकार से विभाजन की त्रासदी में अनेक समस्याएं जनता के सामने उत्पन्न हुई थी। धार्मिक दंगों में सामान्य जनता को अपनी जान बचाने के लिए घर में मुँह छिपाकर रहना पड़ा था।

**धार्मिक समस्या:**

समाज में धर्म का अनन्य साधारण महत्व रहा है। धर्म मनुष्य को सही आचरण करना सिखाता है। समाज को संवारने एवं अच्छे रास्ते पर ले जाने के लिए धार्मिक विचार काफी फायदेमंद होते हैं। यह कह सकते हैं कि धर्म समाज को सभ्यता, शालीनता एवं अहिंसा जैसे उचित मार्गों पर चलकर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। दुनिया का कोई भी धर्म हिंसा, दुराचार, धोखाधड़ी, शोषण, कट्टरता आदि दुर्गुणों को बढ़ावा नहीं देता। लेकिन मनुष्य की स्वार्थी सोच, कट्टरता, दुराचारी वृत्ति आदि धार्मिक भेदभाव को बढ़ाते हैं। इस कारण विभिन्न धर्मों बीच परस्पर वाद-विवाद बढ़ जाता है। इसका रूपांतर हिंसा, मारकाट, आगजनी जैसे कुकृत्यों में होता है। इसमें वित्तहानि के साथ ही जीवित हानि भी काफी हो जाती है। अलका सरावगी के उपन्यास 'कलि-कथा वाया बाइपास' में धार्मिक समस्या का विस्तार से चित्रण हुआ है। हिन्दू और मुसलमानों के बीच हुए धार्मिक विवाद के कारण बहुत ही खराब स्थिति उत्पन्न होती है। इस स्थिति को देखकर किशोरबाबू सोचते हैं - "क्या यही कि आदमी की एक के प्रति प्रतिबद्धता दूसरे के प्रति उसकी नफरत से तय होती है? रामजी से प्रेम - मुसलमानों से नफरत, गांधी से नफरत - हिंदूपन से प्रेम। क्या धर्म की दीवार इतनी मजबूत है कि खिड़कियाँ बन नहीं सकती? तो क्या एक दुनिया ऐसी ही बनानी होगी जहाँ एक जैसे आदमी ही एक साथ रहें - एक जैसे रंगवाले, एक जैसे धर्मवाले, एक जैसे भाषावाले।"<sup>5</sup> इस तरह के धार्मिक विवाद के कारण देश की एकता नष्ट होती है। समाज में आपसी फूट पड़ती है। लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। उनमें दंगे शुरू हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम कालांतर में विभाजन के रूप में सामने आता है।

**राजनीतिक समस्या:**

राजनीति जन सामान्य के जीवन को सीधे प्रभावित करनेवाला एक अपरिहार्य अंश बन चुकी है। देश का प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में राजनीति के प्रभाव का अनुभव करता है। अलका सरावगी का 'कलि-कथा वाया बाइपास' देशप्रेम, देशभक्ति से प्रेरित उपन्यास हैं। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित राजनीतिक वातावरण देश की आजादी से प्रेरित है। उपन्यास के पात्र- शांतनू, अमोलक, केदार पर तत्कालीन नेताओं का प्रभाव दिखाई देता है। वे अलग-अलग नेताओं एवं पार्टियों में प्रभाव में आकर परस्पर दुश्मन बन जाते हैं। इतना ही नहीं, पिता-पुत्र के बीच भी राजनीति के प्रभाव के कारण झगड़ा हो जाता है। विवेच्य उपन्यास में अवसर के अनुसार दल बदलने वाले नेताओं की भी पोल खोली गई है। दलबदलू नेता काफी स्वार्थी और लालची होते हैं। जहाँ उनका स्वार्थ होता है, वे उधर के ही हो जाते हैं। अक्सर वे अवसर के अनुसार अपने विचारों एवं मतों को बदलते रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में शांतनू ऐसे नेताओं की यथार्थता व्यक्त करता हुआ कहता है, "इन लोगों को अपना खुद का दिमाग नहीं है, सब बेपैदी के लोटे हैं। कभी किसी के पक्ष में बोलते हैं, कभी किसी के। ऐसे लोग देश की आजादी के लिए सबसे बड़ा खतरा है। ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध करनेवाली कोई भी विचारधारा हो, ये उसी पक्ष में बोलने लगेंगे। कभी गीता से, कभी बाइबिल से। कभी गांधी के पक्ष में, कभी फासीवादी इटली के पक्ष में, तो कभी साम्यवादी रूस के।

ये हर पक्ष के और विपक्ष के।”<sup>6</sup> तत्कालीन नेताओं की इस तरह की दोगली राजनीति के कारण आजादी मिलने में देर हुई है। इस तरह की राजनैतिक समस्याएँ इस उपन्यास में दृष्टिगोचर होती हैं।

### आर्थिक समस्या:

स्वाधीनता के बाद सामान्य व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की आर्थिक तंगियों से गुजरना पड़ा है। आजादी को लेकर जनता ने जो खुशहाली के सपने देखे थे। आजादी के बाद वे सपने टूटकर बिखर जाते हैं। कह सकते हैं कि मोहभंग की स्थिति उत्पन्न होती है। पूंजीवादी आर्थिक नीति, भ्रष्टाचार, नेताओं की स्वार्थी वृत्ति, धनाढ्यों का बढ़ता प्रभाव आदि कारणों से आम आदमी आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त हो गया था। अतः अलका सरावगी ने ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ उपन्यास में उक्त सारे मुद्दों पर प्रकाश डाला है। मारवाड़ी समाज अर्थ को इकट्ठा करने में लगा था। इसीलिए वह अपना घर-बार छोड़कर विविध शहरों एवं राज्यों में जाकर बसने लगा था। अपना घरबार, रिश्ते-नाते छोड़ने का वियोग उन्हें सताने लगा था। धनाढ्यों में नवधनाढ्यों का वर्ग पनपने लगा था। भारत में भ्रष्टाचार बढ़ गया था। इन सारी चीजों से आम आदमी आर्थिक तंगहाली में आ गया था। इस तथ्य को लेखिका ने उपन्यास के पात्र रामविलास, उसके पिता, मौसा आदि के माध्यम से स्पष्ट किया है। इस स्थिति को रामविलास की माँ अपने शब्दों में यँ स्पष्ट करती है, “ऊँटों के साथ घूमने वाले बंजारों से भी गई गुजरी जिंदगी हो गई है हमारी। इन लोगों का परिवार कम से कम साथ तो रहता है। हमारे नसीब में उतना भी नहीं। क्या होगा ऐसा धन कमा के? रूखी सूखी खाकर क्या आदमी नहीं जी सकता? परदेश की पूरी रोटी से तै घर की आध भली।”<sup>7</sup> इस प्रकार मारवाड़ी समाज के लोग धन पाने की वृत्ति के कारण अपने परिवार से बिछड़ते रहे और बिछड़ने का वियोग उनके अंतस को पीड़ा देने लगा था। विवेच्य उपन्यास में रामाविलास के पिता, किशोरबाबू, बनवारी, सुमित आदि पात्र कुछ समय के लिए आर्थिक समस्या से जूझते भी नजर आते हैं।

### प्राकृतिक समस्या:-

मानव को जिस प्रकार वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विविध समस्याओं का सामना करता पड़ता है। उसी तरह से प्राकृतिक आपदाओं का भी सामना करना पड़ता है। नैसर्गिक आपत्तियों में भूचाल, बाढ़, अकाल, अतिवृष्टि आदि समस्याएं आती हैं। ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ में छपनिया के अकाल के कारण लोगों की जो दुर्दशा हुई थी। उसका यथार्थ चित्रण इसमें दिखाई देता है। बंगाल में अकाल पड़ने से वहां अनेक समस्याएं पैदा हुई थीं। सबके व्यापार ठप हो गए थे। लोग भूख-प्यास से मर रहे थे। कभी अकाल, कभी तूफान और कभी बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं में लोगों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोर को निमाई हालदार ने अपनी कथा बतायी थी। जिसमें बाढ़ और तूफान से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण है। “पहले पिछले साल तूफान आया, फिर बाढ़। हमारा तो सबकुछ उसी में खत्म हो गया बाबू - घर, गाड़ी, फसल, अनाज, बकरियां और बर्तन। बाजार में

चावल ही नहीं था और था भी तो उसका पहले से छह गुना दाम देने को हमारे पास पैसे कहाँ से आते? कोई कहता कि सरकार ने सारा चावल फौज के लिए कलकत्ता भेज दिया है। कोई कहता हर साल की तरह बर्मा से चावल नहीं आ रहा है, क्योंकि वहाँ जपानी लोग आए हैं। हमने घास खाई। मेरा एक लड़का घास नहीं पचा पाने के कारण उलटी टट्टी करता मर गया। फिर हमने पत्ते खाई, जंगली जड़े खाई, घोंघे खाए। सरकार ने हमारी नौकाएं छीन ली - नहीं तो कम से कम हम मछली मारकर जी सकते थे।”<sup>8</sup> अतः प्राकृतिक आपदाओं में मनुष्य की हालत काफी खराब होती है। मनुष्य अपनी पेट की आग बुझाने के लिए शहर में चला आता है। यहाँ आने के बाद भी जब उसे कोई रोजगार नहीं मिलता है तो वह भीख मांगकर जीवन यापन करता है। अतः आपदाएं प्राकृतिक हो या मानव निर्मित मनुष्य के साथ ही अन्य जीवों के लिए भी काफी नुकसानदेह होती हैं।

### सांस्कृतिक परिवेश:

धर्म के साथ-साथ मनुष्य के जीवन में संस्कृति का भी महत्व है। प्रस्तुत उपन्यास में मृतक संस्कार चित्रित हुए हैं। जैसे, “मुझे देखना है, माँ अब मुझे ही संभालना है। कर्तव्य- यह भी कर्तव्य है। यह जलाना, पिण्डदान, तिलांजली, गंगा स्नान, सुख-शय्या। सब करना है। सब कर्तव्य हैं।”<sup>9</sup> इस तरह से विविध संस्कार जो कि संस्कृति के अंग हैं का दर्शन इस उपन्यास में दिखाई देता है। अंग्रेजी शासन में कलकत्ता शहर में स्थित बंगालियों तथा मारवाड़ियों की अनेक परंपराओं का चित्रण भी मिलता है। इन लोगों में गंगा के प्रति पवित्रता भाव दिखाई देता है। उस वक्त पूरा कलकत्ता शहर गंगा जल से धुलवाया जाता था। साथ ही काली माँ की पूजा भी श्रद्धा से की जाती थी। परिणामस्वरूप अंग्रेजों के मन भी इस देवी के प्रति श्रद्धा का भाव निर्माण हुआ था। इस प्रकार का सांस्कृतिक परिवेश प्रस्तुत उपन्यास में नजर आता है।

### निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ उपन्यास तत्कालीन समाज जीवन की अनेक समस्याओं को चित्रित करने में सफल हुआ है। मनुष्य के मन में निहित अंधविश्वास की भावना से लेकर सांस्कृतिक परिवेश तक की सारी स्थितियों का अंकन इस उपन्यास में हुआ है। धार्मिक भेदभाव से उत्पन्न सांप्रदायिक संघर्ष और इस संघर्ष में हो रही हानि को लेखिका ने यथार्थता के साथ दर्शाया है। आजादी के बाद उत्पन्न मोहभंग की स्थिति, अकाल से पीड़ित मनुष्य की स्थिति, आर्थिक समस्याओं से ग्रसित लोगों की अपना गाँव-घर छोड़ने की विवशता, तत्कालीन राजनीति का गिरा हुआ स्तर, नेताओं की स्वार्थी वृत्ति, स्त्री भ्रूण हत्या जैसी अनेक वास्तविकताओं को इस उपन्यास में देखा जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अलका सरावगी ‘कलि-कथा वाया बाइपास’ उपन्यास में आजादी के समय और उसके बाद के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को चित्रित करने में सफल हुई है।

## संदर्भ :-

1. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 15
2. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 180
3. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 31
4. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 168
5. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 164
6. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 97
7. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 29
8. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 146
9. सरावगी, अलका. (1998). कलि-कथा : वाया बाइपास. पंचकुला, हरियाणा : आधार प्रकाशन. पृ. 17

## NOTES FOR AUTHORS

# **PADCHINHA: Multidisciplinary Peer Reviewed & Refereed Journal**

### 1. Submissions

Authors should send all submissions and resubmissions to [padchinhahindi@gmail.com](mailto:padchinhahindi@gmail.com) or [gandhikhadi@gmail.com](mailto:gandhikhadi@gmail.com) some articles are dealt with by the editor immediately, but most are read by outside referees. For submissions that are sent to referees, we try to complete the evaluation process within one month. As a general rule, Padchinha operates a double-blind peer review process in which the reviewer's name is withheld from the author and the author's name is withheld from the reviewer. Reviewers may at their own discretion opt to reveal their name to the author in their review, but our standard policy is for both identities to remain concealed.

Absolute technical requirements in the first round are: ample line spacing throughout (1.5 or double), an abstract, adequate documentation using the author-date citation system and an alphabetical reference list and a word count on the front page (include all elements in the word count). Regular articles are restricted to an absolute maximum of 10,000 words, including all elements (title page, abstract, notes, references, tables, biographical statement, etc.).

### 2. Types of articles

In addition to Regular Articles, Padchinha publishes the Viewpoint column with research-based policy articles, Review Essays, Book Review and Special Data Features.

### 3. The manuscript

The final version of the manuscript should contain, in this order:

- (a) title page with name(s) of the author(s), affiliation
- (b) Abstract
- (c) Main text
- (d) List of references
- (e) Biographical statement(s)
- (f) Tables and figures in separate documents
- (g) Notes (either footnotes or endnotes are acceptable)

Authors must check the final version of their manuscripts against these notes before sending it to us.

The text should be left justified, with an ample left margin. Avoid hyphenation. Throughout the manuscripts, set line spacing to 1.5 or double.

The final manuscript should be submitted in MS Word for Windows.

### 4. Language

Padchinha is a Bilingual Journal, i.e. English and हिंदी. The main objective of an academic journal is to communicate clearly with an international audience.

Elegance in style is a secondary aim: the basic criterion should be clarity of expression. We allow UK as well as US spelling, as long as there is consistency within the article. You are welcome to indicate on the front page whether you prefer UK or US spelling.

### 5. The abstract

The abstract should be in the range of 200-300 words. For very short articles, a shorter abstract may suffice. The abstract is an important part of the article. It should summarize the actual content of the article, rather than merely relate what subject the article deals with. It is more important to state an interesting finding than to detail the kind of data used: instead of 'the hypothesis was tested', the outcome of the test should be stated. Abstracts should be written in the present tense and in the third person (This article deals with...) or passive (... is discussed and rejected). Please consider carefully what terms to include in order increasing the visibility of the abstract in electronic searches.

## **6. Title and headings**

The main title of the article should appear at the top of pg. 1, followed by the author's name and institutional affiliation. The title should be short, but informative. All sections of the article (including the introduction) should have principal subheads. The sections are not numbered. This makes it all the more important to distinguish between levels of subheads in the manuscripts – preferably by typographical means.

## **7. Notes**

Notes should be used only where substantive information is conveyed to the reader. Mere literature references should normally not necessitate separate notes; see the section on references below. Notes are numbered with Arabic numerals. Authors should insert notes by using the footnote/endnote function in MS Word.

## **8. Tables**

Each Table should be self-explanatory as far as possible. The heading should be fairly brief, but additional explanatory material may be added in notes which will appear immediately below the Table. Such notes should be clearly set off from the rest of the text. The table should be numbered with a Roman numeral, and printed on a separate page.

## **9. Figures**

The same comments apply, except that Figures are numbered with Arabic numerals. Figure headings are also placed below the Figure. Example: Figure 1.

## **10. References**

References should be in a separate alphabetical list; they should not be incorporated in the notes. Use the APA form of reference.

## **11. Biographical statement**

The biosketch in Padchinha appears immediately after the references. It should be brief and include year of birth, highest academic degree, year achieved, where obtained, position and current institutional affiliation. In addition authors may indicate their present main research interest or recent (co-)authored or edited books as well as other institutional affiliations which have occupied a major portion of their professional lives. But we are not asking for a complete CV.

## **12. Proofs and reprints**

Author's proofs will be e-mailed directly from the publishers, in pdf format. If the article is co-authored, the proofs will normally be sent to the author who submitted the manuscripts. (Corresponding author). If the e-mail address of the corresponding author is likely to change within the next 6–9 months, it is in the author's own interest (as well as ours) to inform us: editor's queries, proofs and pdf reprints will be sent to this e-mail address. All authors (corresponding authors and their co-authors) will receive one PDF copy of their article by email.

## **13. Copyright**

The responsibility for not violating copyright in the quotations of a published article rests with the author(s). It is not necessary to obtain permission for a brief quote from an academic article or book. However, with a long quote or a Figure or a Table, written permission must be obtained. The author must consult the original source to find out whether the copyright is held by the author, the journal or the publisher, and contact the appropriate person or institution. In the event that reprinting requires a fee, we must have written confirmation that the author is prepared to cover the expense. With literary quotations, conditions are much stricter. Even a single verse from a poem may require permission.